ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

मार्च-अप्रैल 2022, वर्ष 6, अंक 1

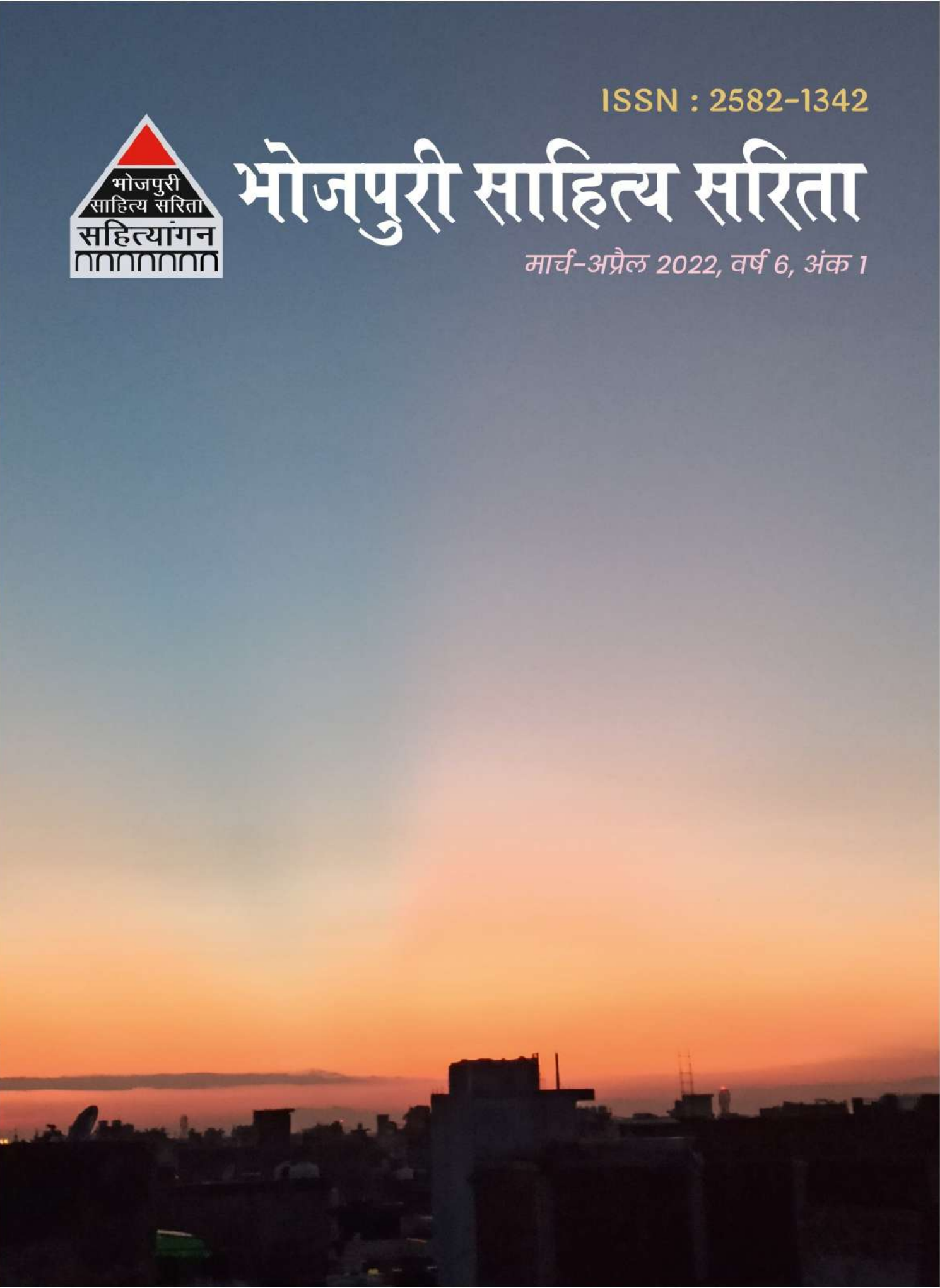

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

बुकिंग मात्र
11000 में

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)
डी के सिंह (पटना)

आवरण चित्र © केशव मोहन पाण्डेय

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'/6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

गाथा में गूथल होरी के चित्र–दिनेश पाण्डेय/7–9
...फागुन आय गइल–मनोज 'भावुक'/20–22
फगुआ में सब केहू लगुआ–कनक किशोर/28–29

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

बेटी के बियाह–अशोक मिश्र/10
होली के दिन– अंकुश्री/11–14
सब दिन रहत न एक समाना– बिम्मी कुँवर/18–19
दरपन–विद्या शंकर विद्यार्थी/19
के दोषी–जियाउल हक/20
माटी के पूत–राजकुमार सिंह/35–36
बेना–सविता गुप्ता/36
भोजपुरी लोकवार्ता के अनन्य साधक डॉ अर्जुन दास केशरी–रवि प्रकाश सूरज/26–27
पढ़ल–लिखल के गाँव, बहेलिया टोला नाँव– केशव मोहन पाण्डेय/45–48

• कविता/गीत/गजल

फगुओ में न आइब का हो–डॉ शिप्रा मिश्रा/9
गीत–सन्नी भरद्वाज/10
नेह छोह के होली हो–नवचंद तिवारी/10
अइले बसंत–हरेश्वर राय/15
गीत–उमेश कुमार राय/15
हमर मन कहेला–कुमार मंगलम रणवीर/15
सुन्दर महिना फागुन के–संग्राम ओझा 'भावेश'/19

• कविता/गीत/गजल

जबले सिवान फागुन आइल बा–डॉ एम डी सिंह/23
गीत–डॉ रजनी रंजन/23
फगुनई बहार–सरोज सिंह/24
फागुन अंगडाइल–विमल कुमार/24
खेला–कमलेश के मिश्र/25
मोरा मनवां मदनवाँ चुरा ले गइल– हीरालाल द्विवेदी /25
बने खातिर नोकर–योगेन्द्र शर्मा 'योगी'/27
गीत–सरोज त्यागी/29
जइसे युक्रेन अकेल बा–चंद्रेश्वर/30
हिया के दरद–मधुबाला सिन्हा/31
मनवा फगुनाइल–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/31
बरसात–सत्यनारायण शुक्ल/48

• अनूदित साहित्य

बसंत बेमार न होखे– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/ 32–34

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

बेजोड़ गीत–संगीतकार आ स्वतन्त्रता सेनानी महेंदर मिसिर–विजय कुमार तिवारी/37–42
झारखण्ड के राजधानी राँची के भोजपुरिया कवि–अंकुश्री/42–44

• साहित्यिक समाचार

बापू की धरती मोतिहारी से भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में
मान्यता खातिर भइल शंखनाद– कनक किशोर/16–17

आईं ! होरी के हुरपेटल जाव

लागत त अइसने बा कि बसंत रसता भुला गइल कि बेमार हो गइल भा कोरोना के कवनों वैरिएंट के लपेटा में आ गइल, पते नइखे। कलेंडर त बता रहल बा कि बसंत आ चुकल बाटे,बाकि लउकत नइखे। पलायन के झोल–झाल त झेलते रहल बा मनई, लागता कि बसंतों के रंग–ढंग एकरे लउछार से लपेटा गइल बा। अपना इहाँ के बुद्धू बकसवो कुछो सुनगुन फानत नइखे देखात। कोरोना–कोरोना नरियात–नरियात अचके पुतिन–पुतिन आ जेलस्की–जेलस्की चिचिया रहल बा। बुझाता कि पुतिन आ जेलस्की के अवते कोरोनवा दुनिया छोड़ि के परा गइल। अगली–बगली वाला लो जेलस्की के सूली पर चढ़ा के तेगा बले बगली मार के खिसक गइल लो।उहवाँ आफत मचल बा,आग–आग आ धुआँ–धुआँ के गुब्बार पसरल बा। सहर–दर–सहर खंडहर में तबदील हो रहल बा जेलस्की क देस। 'तुम आगे बढ़ो, हम तुम्हारे साथ हैं' के मंतर का लालीपाप दीहल लो आ जब जेलस्की पाछे घुम के देखलें, त केहु के परछहियों ना देखाइल। एह उनुका देस के लो गोली,बम, बारूद आ मिसाइल से होरी खेल रहल बा। अइसना होरी का चलते रह–रह के टहक लाल खून के फुहार छूट रहल बा।

देश में लोकतन्त्र के उत्सव के कुछ दिन लहर चलल। 5 गो राज्यन में चुनाव भइल, कुछ दिन जनता के जनार्दन बोलल गइल। कुछ लो आपन आपन गीतो गावल। जनता जनार्दन के भरमावलो गइल बाकि उहे भइल जवन जनता चहलस। लालच आ भरमवला का बदरी के छितिरावत आदितमल उगिए गइलें। कइयो गो भरम आ भ्रांतियन के मकड़जाल के तूरत एगो उदाहरन बनल। कुछ लो मुँह के खइलस। नारेबाजी आ सोवारथी ठगबन्हन के पोल खुलल। कतो केहु खातिर संभावना के नवकी दुआरी खुलल। गोदी में बइठ के खेले वाला बुतुरु धउरे लागल। कुछ लो खातिर ई चुनावी उत्सव ताबूत के आखिरी कील लेखा होत दे खाई दे रहल बा। अलग–अलग लोगन के अलग अलग गुना गणित बा। कतो कतो हरला का बाद जुत्तम–पैजारो शुरू हो चुकल बा। एकर अनेसो पहिला से बुझात रहल ह।

अपना देश के एगो राज के सच उजागिर करत एगो फिलिम आइल बा। फिलिम के अवते उहाँ के साँच जाने के ललसा उफान मारे लागल। ई अइसन देस ह, जहाँ कुछ के नटई दबाके दोसरा के सुहरावे आ कुरसी खातिर कवनों करम करे में सरम इहाँ के नेता लो के लगबे ना करे। सगरे सहिष्णुता के ठीकरा फोरे खातिर एक्के समुदाय देखाला। अल्पसंख्यक बोल के कुछ लोगन कुछो करे के अजादी दीहल उचित ना कहल जा सकेला। बाकि अब तलक इहे होत रहल ह। एगो साँच देखावे के परयास सराहे जोग बा बलुक इहों कहल बाउर ना होखी कि एगो ठोस दस्तावेज परोसाइल बा। लोग फिलिम के देख रहल बा, साँच जान के बिलख रहल बा। लोगन के अइसन साँच से वंचित होखल मने अपना संस्कृति से दूर होखल बा। एकरा बादो कुछ लो अइसन भेंटाई जेकरा के सामाजिक सद्भाव बिलात देखाई। ई उहे लोग ह, जे आजु ले साँच छुपावे में जीव–जाँगर का संगे लागल रहल ह। असों के होरी में अइसन लोगन सोच आ समुझ दूनों झोकार देसु। एही चाह का संगे आईं होरी के जीयल जाऊ–

भूतनाथ की मंगल होरी ...
देख सिहाई बिरज की छोरी
धन–धन नाथ अघोरी हो...
धन–धन नाथ अघोरी दिगम्बर खेले मसाने में होरी

■■

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

छाँह छलकि के गिरल डाल से

छाँह छलकि के गिरल डाल से
पात–पात तूफान बन्द बा
बादल झुकल कि झील–छंद बा

स्वर, सुर, अलंकार
सब के सब सुलग उठी
तू छुअ ज्वाल से
छाँह छलकि के गिरल डाल से

फूल बयार जवा के लोढ़े
सँस जेकाहें के पट ओढ़े
राति काल्हु के
साँझि आजु के
देखत बानी
उषा काल से
छाँह छलकि के गिरल डाल से

■■

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

जन्म : 11 सितंबर 1905

मृत्यु : 2 अप्रैल 1984

जन्म–स्थान
आरा (बिहार)

गाथा में गूँथल होरी के चित्र

दिनेश पाण्डेय

ऋतु (ऋ+तु, कित) के ऋतु गमन (गतौ), गतिशीलता, आगे बढ़े, गति पावे (गति प्रापणयोः) के अर्थबोधक ह। वैदिक चिंतन–धारा में रितु–बदलाव के पीछे 'अग्नितत्त्व के भूमिका मानल गइल बा। 'अग्नि' के एक विशेषण 'ऋत्विज' ह जेकरा में 'ऋतुभिर्यजति' –रितु के प्रसारक के गुन मुख्य बा। 'अग्नि' सृष्टि के प्राण–तत्त्व ह। सौरमंडल आ पृथ्वी के बीच के संबंध 'सम्वत्सराग्नि' के आसरे ह। रितुअन में बदलाव एकरे उन्नति भा छय का ओजह से संभव होला। वैदिक चिंतन में याज्ञिक बिधान के जरिए प्रकृति के प्राण–पोषण के नजरिया रहे। एहि सोच से बसंत आदि रितु में अग्न्याधान के बिधान कइल जात रहे। बसंत के आगमन के संगे नया सम्वत्सर शुरू हो जाला रहे, ए से एहि रितु के बहुत महत्व दिहल गइल। शतपथ (11.5.3.8) के अनुसार– ''स वसंत. सनिडोऽन्यानृतुन्न्समिन्ह्व" याने प्रज्ज्वलित भइल बसंत आन रितुअन के पोढ़ावेला।

होली के संबंध एह प्राचीन यज्ञ–विधान के अलावे 'नवानेष्टि' से ह। 'होला' अधपक अन्न के संज्ञा ह। नया फसिल आवे के हेह मौसम में समिधा के रूप में अग्नि के समर्पित गहूँ–जव के ऊमी के प्रसाद के आस्वादन–वितरण लोक–तिरपिति के बात रहे। एही संबंध से 'होलाका' (हुविच, तं लाति –लाकनटाप) बसंतागम प मनावल जाएवाला उत्सव आ फगुनी पुनवाँसी के वाचक भ गइल। 'होलिका', 'होली' भा तद्भव 'होरी' शब्दन के बिकास एही 'होला' से ह जवन एह खास परब, अगिजा, रंग–क्रीड़ा, एह औसर प गावल जाएवाला गीतन के आदि के बोधक हवें। 'काठक–संहिता' में 'होला' के एक करम–बिसेखी के रूप में देखल गइल बा जवन मेहरारुन के सोहाग बदे कइल जात रहे, पुनवाँसी के चनरमा एकर देवता हवन– "होला कर्मविशेषः सौभाग्याय प्रातरनुष्ठीयते, तत्र होलाके राका देवता।"

होली के मौजूदगी के इन्ह पुरातन संकेतन्ह से अलगे पुराण भा आन संस्कृत साहित्यो में होली के जिकिर बा जेकरा में जुग के अनुरूप कुछ–कुछ अलगाव नजर पड़ेला। शिव द्वारा मदनदहन के कथा, उन्मत आ हिंसक ढुंढिका के बेअसर करे बदे कादो–कींच, हल्ला–गुदाल, गारी–गलौज के लोकाभिचार जइसन सामग्रियन के संबंध होली से जोड़ल गइल बा। 'पूर्वमिमांसा', 'कथागृह्यसूत्र', 'नारदपुराण', 'भविष्यपुराण', हर्ष के 'प्रियदर्शिका' आ 'रत्नावली', कलिदास के 'कुमारसम्भवम्' आ 'मालविकाग्निमित्र' आदि में होली के बहुतायत उल्लेख भइल बा। संस्कृत साहित्य में बसंत रितु से जुड़ल एह उत्सव के चित्रण अधिकतर प्रकृति के सरूपगत बदलाव के अंकन में मुखर बा। ई बदलाव भौतिक आ मानसिक दूनों तरे के बा। होली के प्राचीन सरूप मदनोत्सव याकि वसन्तोत्सव के रसगर आ मनोहारी रूप के उकेरन एह सामग्रियन में मौजूद बा। बसंत के मादक असर से नर–नारी के मन में उपजल उद्दाम लालसा, सिंगार–पसंदगी, सिंगार–चेष्टा, स्त्रियन के हाव–भाव आदि के भरमार बा। बसंत में मदमत्त अपरूप कामिनी के लतमारी से अशोक के खिले भा मुखमदिरा के सेचन से मौलसिरी के फूल से लदर जाए के अचरज भरल 'वृक्षदोहद' के कविप्रसिद्धि संस्कृत साहित्य के आपन खासियत ह। होली में प्रकृति में मौजूद रंगन का ओरि खंचाव, उत्सव में तेकर इस्तेमाल आदि के साफ संकेत बाड़न। 'ऋतुसंहार' (कालिदास) से लिहल एकाध परतुक देखल जाव–

"कुसुम्भरागारुणित दुकूल नितम्बबिम्बानि विलासिनीनाम्।
रक्तांशुकै कुंकुमराग गौरलकियते स्तनमण्डलानि।।"

बिलासिनी सबके पिछाड़ प मेंहीं कुसुमी रेशमी वस्त्र आ कुंकुम में चहबोरल लाल टेस दुपट्टा में ढकल रुचिर छाती बा।,

"आलिप्यत चंदनमंगनाभिमदालसाभिमृगनाभियुक्तः"

खस्त्रियन के अंग चंदन चुपड़ल आ कस्तुरी से बासित बा।,

इन्ह टूक–टूक तस्वीरन के का बात? हिंहा त सगरी धरती लोहित 'अंशुक' पेन्हले बहुरिया बनल बाड़ी– "रक्तांशुका नववधुरिव भाति भूमि।" बाकी एक बात ध्यान देवे जोग बा कि इन्ह

सामग्रियन में होली के उल्लेख याज्ञिक अनुष्ठान, कवनो पूजा–परब बिधान के प्रसंग में बा या त प्रकृति के सुंदरता भा स्त्री के मादक श्रृंगारिक चेष्टा के संदर्भ में। ए में आभिजात्य प्रभाव अधिका बाड़न। होली के लेके तत्कालीन लोक–काज–बेवहार भा आमजन के गतिबिधि के व्यापक संकेत 'गाहासतसई' में उभरल बा। हिंहाँ ना प्रकृति के भव्य आ कल्पना के पराकाष्ठा तक लुनाई के बखान बा ना आभिजात्य–वर्ग के आडंबर आ बिलासिता से भरल जिनिगी के मांसल बरनन। जवन बा तवन जथारथ बा, सहज बा, नीमन बा तवनों, जबून बा तवनों, रूप बा ऊहो, बदरूप बा ऊहो। एकरा के बास्तविकता से अलगा कवनों ओढ़ल नैतिकता के टकौरी प ना तउलल जा सके। फागुन आ गइल, अइबे करी, आखिर 'ऋतु–चक्र' से जुरल चीज ठहरल, अंगुरी धरा के केहू लिवा लावे अइसन बात थोरे होला? आ आइए गइल त ई कहल कि आ गइल त हमरा का काम? एह हठधर्मिता ते काम ना चली। 'मन में भावे मूँड़ी हिलावे' वाली निरपेक्षता से सभे वाकिफ बा। हँ, छाती ठोक के जवन गिला–मलाला बा ओकरा के सोझे धर देवे में का दोख–

"टिट्ठा चूआ, अग्घाइआ सुरा, दक्खिणाणिलो सहिओ।
कज्जाइं व्विअ गरुआइँ, मामि! को वल्लहो कस्स?"

(गाहासतसइ 1.97)

मामी, बसंत में आम के पल्लो देखलीं, सुरागंध लिहलीं, दखिनहिया के सहलीं, ईहे सब काज हमरी जिनिगी में प्रमुख भ गइले। हे हंत, एह दुनिया में के केकर बालम?

अब मामी माथ हगुआवल चाहस त उनुकर मरजी। फागुन आ गइल, आ तबो बालम ससुरू घर छोड़ि घुरबिनिया में अझुराइल बाड़े त ऊ बूझस–

"पउरजुवानो गामो महुमासो जोवणं पई ठेरो।
जुण्णसुरा साहीणा असई या होउ किं मरउ।"

(गाहासतसइ 2.97)

गाँव में ढेर जुवान हवें, मधुमासो आ गइल, जवानी ह, पति बूढ़। भीरी पुरान मद्य बा, कुचाली ना होखीं त का मू जाई?

बाप–रे–बाप! हतिना प त नैतिकतावादी लोग दु–दु बाँस ऊँचा छरपे लगिहें। ई लोकसमाज ह, मन के भाव गोपन रख के तरे–तरे गुल खिलावे के अपराध बोध के ढोवे? जवन बा तवना में एक खुलापन बा। समय मोका देले बा त तेकर भरपूर मजा काहे ना लेल जाव? बाकी सम्हर के, सोच–विचार के–

"चिंतेसि थनहराआसिअस्स मज्झस्स वि ण भङ्गम्।"

(गाहासतसइ 2.60)

सोचऽ, सुदीर्घ स्तनभार से कहीं कमर में लोच ना हो जाय।,

अइसन नइखे कि लोकजीवन में मरजाद, संयम, लाज आदि बेमानी बाड़े। बिपरीत हालातो में आदर्श के पालन कवनो समाज खातिर बेहतर स्थिति के सूचक ह। पतन में देर ना लागे, बिछिले के जमीन कम नइखन बाकी सधल पाँव के गति कबो सुख का ओरि अवसि के ले जाई ई संभावना प्रबल बा। बसंत बा त बा, तेकर लुनाई आ मादकता जीउ प हावी होत बा त होखे, एह सब असर से बिलकुल बाँचल केहू कइसे रह सकत बा? गंध पसरी, तेकर तसीर घ्राण से लेके प्राण तक उथल–पुथल मचाई बाकी अइसन नइखे जे सबकुछ नियंत्रण से बाहर बा–

"सच्चं भणामि बालअ णत्थि असक्कं वसंत मासस्स।
गंधेन कुरवआणं मणं पि असइत्तणं न गआ।"

(गाहासतसइ 3.19)

निपट अबोध! साँच कहीं, बसंत में कुछो अशक्य नइखे। कटसरैया के गंध के बावजूद अबहीं तक ऊ सतीत्व से इचिको डिगलि ना।,

ई त भइल ओह हालात के बात जवना में सबकुछ मुआफिक नइखे। जिनिगी में सुख–दुख, अनुकूलता–प्रतिकूलता के स्थिति हरदम एकरूप ना रहे। सब ठीक–ठाक बा तबो मन के ऊहापोह के का? का करीं, का ना एही दोपापाही में सोचलका कहईं पीछे छूट जाला आ जवन होला ऊ अगते के सोच से एकदमे बेफाँट के चीज होला–

"धेत्तूण चुण्णमुट्ठिं हरिसूससिआए वेपमाणाए
भिसिणेमित्ति पिअअमं हत्थे गंधोदअं जाअं।"

(गाहासतसइ)

''प्रीतम प फेंकीं, ना फेंकीं? हरख–उत्सुकता से भरल एही दोपापाही में मुट्ठी में लेल

गुलाल गंधोदक भ गइल।'',

होरी में कींच–कादो में चहबोरे के पुरान रीत ह। हँ, एह बात के चेत रहे कि कींचड़ डाले के बजाय उछारे वाली बात ना होखे। परावे से बरावे के बात नइखे बाकी मोरी–पनरोह के गंधात गू–मूत में लभेराइल केकरा नीक लागी? पाँकी–पाँकी में फरक ह। मधु के दलदल में धँस के जानो गइल मँहग ना ह। कींचड़ हरमेसे बिरूपता ना पैदा करे। कइयक परिस्थिति में त ई खूबसुरती के साधन हो जाला। निर्दोष कींचड़ में लपेटाइल जनी के छब देखि के स खी के कहनाम कि–

"फग्गुच्छणणिद्दोसं केण वि कद्दमपसाहणं दिण्णं।
थणअलसमूहपलोट्टंतसेअधोअं किणो धुअसि।।"
(गाहासतसइ 4.69)

''फागुन के उत्सव में निर्दोष कींच से केहू द्वारा सिंगारित स्तन–कलश पसीना से अपने धोआइल बा, त फेरु काहे धोअत बाड़ू?''

चलीं उत्सव बा त तनी दहिने–बावें के बात के केहू तरजीह ना देवे। मन बहके त बहक जाए दीं, काल्हु से त फिर उहे मुखौटा पेन्हहीं के बा। आज भाव–बिरेचन के उत्सो ह, मन कस ना मानी। केहू टोके–रोके मत–

"दइअकरग्गहलुलिओ धम्मिल्लो सीहुगंधिअं बअनं।
मअणम्मि एत्तिअं चिअ पसाहणं हरइ तरुणिम्।।"
(गाहासतसइ 6.44)

पिय के हाथ गहाए से जूड़ा आ मदिरागंध से भरल मुँह, मदनोत्सव में जवनकिन के ई साज–सज्जा मन के मोह लेला।,

"गामतरुणीओं हिअअं हरन्ति छेआणं हरिल्लीओ।
मअणे कुसुम्भरंजिअकंचुआहरणमेत्ताओ।।" (गाहासतसइ 6.45)

''मदनोत्सव में महज कुसुमी रंजित 'कञ्चुक' (चोली) के आभरण में भारी स्तनवाली गाँव जुवति छैलन के मन हर लेली।,''

मन में उमंग कम नइखे, सारा माहौल तेही लाएक बा, लोग–बाग, प्रकृति, जड़–चेतन सब डूबल। भितरे–बहरी के रंग में बोथा बाकी कुछ कचोटत बा। का कहल जाव, कइसे कहल जाव?

"उप्पहपहाविहजनो पविजिम्हिअकलअलो पहअतूरो।
अव्वो सो च्चेअ छणो तेण विणा गामडाहो व्व।।"
(गाहासतसइ 6.35)

ख्लोग कुरहते दउर जालें, हो–हल्ला मच जाला, नगाड़ा बाजे लागेला। हाय, उनुका बिना ई सब गाँव–डाह अइसन लागत बा। ❑❑

○ पटना

डॉ शिप्रा मिश्रा

फगुओ में ना अईब का हो

मनवा छछनत जियरा दहकत
सुभ संदेस ना लईब का हो

बगियारी में मोजर गमके
बोले कोईलिया लोगवा ठमके
फेर फिफकाल मचईब का हो

मंदिर–मस्जिद में लोगवा उलझल
मार–काट से मति ना सुलझल
एही में हमरा मुअईब का हो

अबकी आव फगुआ गाव
तोहरे अईले भरी ई घाव
बिरहे में जिअईब का हो

कमे खाईब कम में जियब
तनिके माड़–भात हम पियब
अबहूं फसरी लगईब का हो

जोर–चेत एगो चुनरी ले अईह
हंसी–हंसी जीभर रंग उड़ईह
चईता घुली–मिली गईब का हो

ईहो फगुआ अईसही जाई?
हमर जिनगिया ना सझुराई
पियरी ना ओढ़ईब का हो
❑❑

○ बेतिया, प.चम्पारण, बिहार

गीत

सन्नी भारद्वाज

मुदित मगन मन देखे बलजोरी ,
खेलतारे राम राजा सिया संग होरी।

नगर अयोध्या झूमे झूमे त्रिभुवन हो ,
झूमे कैलाश शिव शक्ति के गन हो ।
राधा मगन कान्हा गोकुला के गोरी ,
खेलतारे राम राजा सिया संग होरी ।

ब्रह्मा जी झुमे लेके नारद के संग हो ,
विणा बजावे माई शारदा मगन हो ।
विष्णु मगन बनी लचकत छोरी ,
खेलतारे राम राजा सिया संग होरी ॥

उडे गुलाल बा रगांईल अंगे अंग हो ,
धरती रंगाईल बा रंगाईल गगन हो ।
साधु संयासी झुमे दुनु हाथ जोरी ,
खेलतारे राम राजा सिया संग होरी ।

मुदित मगन मन देखे बलजोरी ,
खेलतारे राम राजा सिया संग होरी

❑❑

❍ **सिवान बिहार**

बेटी के बियाह

• अशोक मिश्र

बेटी के बियाह खातिर चिन्तित महतारी अपना पतिदेव से कहली– एजी! रउरा बेटी के बियाह के कवनो चिन्ता बा की ना ? बेटी पढ़ि –लिख के पांच बरीस से नोकरीयो करऽ तिया, पैंतीस बरीस के उमीरो हो गईल। समय से शादी–बियाह कईल हमनीं के जिम्मेवारी बा बाकिर रउरा त कवनो फिकीरे नईखे।

मेहरारू के बात सुनि के पतिदेव जी कहनीं– बेवकुफी मत करऽ।

बबुआ इंजिनियरी पढऽ ता, दूसरा साल ह। अबहीं बियाह के बात टारऽ, काहां से आई हर महीना पच्चीस हजार रुपीया आ हमनीयों के आपन जिनगी बा। एहि बिचे बेटी प्रेम बियाह क के अपना दुलहा के संगे अशीरबाद खातिर माई–बाप के सोझा खड़ा रहे,माई–बाप के त मूंह खूलल के खूलले रहि गईल। ❑❑

❍ कटनी, म प्र

डॉ नवचंद्र तिवारी

नेह–छोह के होली हो

चंहु–दिसि उमंग के रंग लउके,
नेह–छोह के होली हो।
कोयल के रउंवा मात करीं,
अइसन होखे बोली हो।

दहन करीं जां दोषन के आ
संचित पाप मिटे मन के
पर सेवा,परहित खातिर
उपयोग करे मानव तन के
चउखट–चउखट, दुअरा–दुअरा,
मन भावे रंगोली हो।

अनुराग के तू बवछार करे
थामे हाथे पिचकारी
धियान रहे सभकर कवनो
होखे जनि आहत नर–नारी
पुलकित हो जाई गांव–नगर
अइसन हंसी–ठिठोली हो।

पिया लवटे परदेस से आ
आस न टूटे बिरहन के
दुलहिन के सूतल भागि जगे
हवा हिलोरे फागुन के
हे भगवन अंचरा से कबहूं
अलग न होखे चोली हो।

गूंजे ढोल–मंजीरा सगरे,
हर केहू गावे फगुआ
सभके संगी बना ले 'नवचंद'
घर जोरे जइसे अगुआ
छोट – बड़े सबका माथा पर
मले नेह के रोली हो।

❑❑

❍ पंडितपुरा, उचेड़ा बलिया

होली के दिन

अंकुश्री

बाजार नयकी दुलहिनिया जस सजल बा। हजारों लोग आपन–आपन जरूरत ले के पहुंचल बा। पांच दिन बाद होली बा। लोग रंग–अबीर, गरी–छोहारा, किसमिश–अखरोट ले रहल बा। घी–तेल, मैदा–सूजी आदि तरह–तरह के समान के खरीदारी हो रहल बा। कोई खाली रंग आउर अबीरे खरीद के होली के खरीददारी पूरा कर रहल बा। बाकिर मीठा के दोकान पर हड्डा लेखा भीड़ जूटल बा।

पूरा बजार में खरीद–बिकरी के भीड़ लागल बा। अपना–अपना इच्छा के मोताबिक लोग समान खरीद रहल बा। बाकिर सांच पूछल जाओ त अपना जरूरत आउर इच्छा से समान लेवनिहार के अंगुरी पर गिनल जा सकेला, जादे लोग के औकाते बोल रहल बा। अप. ना–अपना जरूरत के कामचलाऊं इच्छा में ढ़ाल के माल तउला रहल बा।

आज बजार जवान मेहरारू के उभरल जवानी जस ऊमर गइल बा। ई हाट हफ्ता में दू बेरा लागेला। आज के बाद फेर होली के दिन बजार लागी। बाकी दिन खुदरा आ उधरिया गंहकी जस बजार मनहूस ले खा लागेला। बजार के मुंह से गुजरे वाली सड़क के किनारे अबीर छान के बिका रहल बा। अबीर गिरला से सड़क कनिया के मांग लेखा रंगा गइल बा।

ओने लोग खरीद–बिकरी में लागल बा, तबे समसुनरी के अवाज सुनाता– ''दूध लेव, दूध।'' दूध ले खा गोर समसुनरी के अवाज सुन के ढ़ेर लोग के नजर ओकरा तरफ घूम गइल। समसुनरी के देख के ढ़ेर मरदानन के आंखि में दोसर भाव जाग जाला। ओकर सुनरई देख के मेहरारुअनों के मन में डाह के एगो आह समा जाला।

समसुनरी के तेलकट साड़ी गंदा होके मटमइला भ गइल बा, जे ओकर दुधिया रंग के आउर निखार देले बा। ओकर बलाउजो गंदा भ गइल बा, बाकिर अबहीं नये बा एह से चमक रहल बा। आठ दिन पहिले दूध बेच के लवटे के बेरा एगो गुलाबी सारी आउर बलाउज के पीअर कपड़ा लेले रहे। साड़ी फगुआ खातीर रखले बिआ आउर बलाउज गांवे के दरजी से सिलवा के पहिर लेले बिआ। फगुआ के दू दिन पहिले समसुनरी के मरद अईहन। ऊ अइहन त गंदा साड़ी पहीर के उनकरा सामने कइसे जाई ? इहे सोच के ऊ आपन कपड़ा खरीदले बिआ। शहरी लोग गंदगी पसंद ना करे – अब समसुनरी ई जान गइल बिआ।

रोज ऊ शहर में दूध बेचे जा लिआ। ऊंहवा ऊ ढ़ेर लोग के देखे लिआ। बाकिर ऊ एके आदमी के शहरी समझे लिआ, अपना मरद – सुरेशवा के बाबू के। शहर में बाकी लोग के ऊ दे खे लिआ त ओकरा कइसन दो बुझाला। ऊ अपना मरद के छोड़ के दोसर सब शहरी के उजड्ड समझे लिआ, खास कर के ओह शहरी के जे ओ. करा के दूध बेचे के बेरा कुछ बोलेला। ऊ जब दूध बेचे बजार जा लिआ त एकर जेठ के घाम ले खा चढ़ल जवानी के देख–देख के लोग कुछ फिकरा कस देवे ला। समसुनरी के ई ठीक ना बुझाये। बाकिर ई कुछ करिओ ना सके लिआ।

समसुनरी के मरद कलकत्ता में रहेलन। दू गो देवर बाड़न, उहो ओहिजा रहेलन। बाकिर बड़कू देवर के एह साल बिआह भइल ह। खेत संभारे के बहाने, अपना मेहरारू के मुंह देखे खातिर ऊ गांवे पर रह गइलन। हॅं, कलकत्ता ना गइलन हं। दूध बेच के सांझि खानी घरे लवटल त ओकरा फेर सुरेसवा के बाबू के ईयाद आ गइल बा।

समसुनरी के बिआह के पांच बरीस बीत गइल बा। अब ओकर सुरेशवा तीन बरीस के भ गइल बा। दू बरीस से गांव से तीन कोस दूर शहर में ऊ दूध बेचे आवतीआ। कुछ दूध उठवनिआ बा, कुछ खुदरा बिका जाला। एकरा पहिले दूध बेचे के काम ओकर सास करत रहली। बाकिर 'अब हम तोरा लेखा जवान नइखीं नू। भर ढ़ींड़ खा के लड़कोरी बनल रहला से काम ना चली।... का तोर मरद ऊंहवा से कवनो तोड़ा भेजता ?...कि नइहर के शान पर बइठल ठूंसबे .. के ताना सुनत–सुनत समसुनरी के कान पाक गइल रहे त

ऊ दूध बेचे के काम अपना जिम्मे कर लेलस। अब ओकरा हाथ में दू गो पइसो रहेला, भलहीं ऊ चोरउके काहे ना होखे।

समसुनरी के माई–बाप अपना समझ से अपना करेजा लेखा बेटी के बहुत सुखी घर में डलले रहे। आ खुद समसुनिरियो जब सुनले रहे कि बत्तीस बिघहा खेत बा, तीन जोड़ा बैल बा, दुआरी पर एक जोड़ा भंइसिओ बिआ, कलकत्ता में ससुर कमा लें...त उहो सोंचले रहे कि भले सहेजे–समेते के पड़ी, बाकिर मलकिनिये के जिनिगी बिती। नइहर में गोंईठा पाथत हांथ सोन्हा गइल रहे।

खेत–बघार के काम ओकर सास आपन एगो बिध ावा बहीन आउर कवनो एगो बेटा के अपना साथे रख के करे–करावेली। भोरहीं–भोरे खाना पका के समसुनरी गोंईठा पाथेलिआ आउर तब एगो दउरा में कुछ गोंइठा रख के ओमे दूध के तीन–चार गो हंड़िआ सजा के शहर चल जा लिआ।

शहर में छिछिआत दूध बेचत चले लिआ। ओकरा बाद ओने से ओही दउरा में भईंस–बैल खातिर खड़ी–कोड़ाई, मीठा, नून आउर घर–खरची के जरूरी समान ले ले चढ़त बेरा में घरे पहुंचे लिआ। घरे पहुंचला के बाद बटोराइल गोबर के फेर गोंईठा बनावे में लाग जा लिआ। बिना खइले–पिअले ओह घरी एक हाथ से करम आ दोसर हाथ से गोंईठा पाथेलिआ। सानी–पानी के काम करके बेचारी के पगुरावे के मौका मिलेला। घर में जेने–जेने समसुनरी जा लिआ ओकर सुरेशवा ओकरा पीछे–पीछे लागल चलेला। सुरेश में समसुनरी के ओकर बाबू के परछाहीं लउकेला। ओकरा सुरेशवा के बाबू के ईयाद आ जाता।

गांव भर में लोगन किंहवा कुछो–ना–कुछो बहरा से आवत बा। होली के समय बा, हर जगह अंजोर बुझाता। बाकिर समसुनरी के दुआरी अबहीं तकले उदासे बा। ना संवागे आईल ना सौगाते। पढ़े संकरात के गइलन से अबहीं तकले ऊ ना अइलन हं। ओने से कुछ दिन भइल एगो चिठी आइल रहे। ओमे लिखले रहस कि ऊ अपना दिल से हमरा के ईयाद करत रहेलन। हमरे ईयाद में ऊ भुलाइल रहेलन, जे सुन के हमार मन खुश होखो। समसुनरी के ईयाद आवता, ऊ आगे लिखले रहस– हम हरदम उनका ईयाद आवेनी, चटकल से लेके डेरा तकले, हरदम। बाकिर छुट्टी ना मिल पइला से ऊ नइखन आ पावत ...।

जबाब में समसुनरिओ एगो चिठी गांव के मुनुशी जी के बेटा से लिखवले रहे,

''सुरेशवा के बाबू के सुरेशवा के माई के तरफ से परणाम।

ईंहवा के समाचार ठीक बा। राउर समाचार भी ठीक रहो – भगवान से इहे मनावत रहिला।

रउरा दस दिन खातिर कवनो हालत से ईंहवा जरूर आ जाईं। राउर बाबूजी आउर माई हमरा के देखावत नईखे लोग। हमार तबीअत एने ओही तरह से खराबे रहता। रउरो ना पूछेब त हमार दे खनिहार के बा ? औरत के देखनिहार आ करनिहार ओकर बांह पकरनिहारे नू होखे ला।

ईंहवा बहुत काम बा। राउर मउसी रउरा भाई के कहत बाड़ी कि तू काहे के अइल ह ? रउरा काम के भीड़ संभारे के बहाने ईंहवा आईं। राउरा भाई दस दिन से अपना ससुरारिये बाड़न। अइसे काम ना नू चली। रउरा कामे के बहाना लेके दस दिन खातिर कवनो तरह से चल आईं। राउर मउसिओ लड़खड़ा गइल बाड़ी। बाबुओजी के खांसिए से परेशानी भ गइल बा। दिन–रात खें–खें करत रहेलन। ऊ बेकारे बईठल खांसत रहेलन।

हमरा के रउरा ऊंहवा बोलवले बानी। त राउर माई–बाबूजी भला आए दीहें ? हम कवनो तरह से उंहवा नईखी आ सकत। साल भर से जादे रउरा गइला भ गइल। हम कहत बानी के खाली कमईले–खईला से जिनिगी के सब काम ना नू चल जाला। जिनिगी में आउरो त कुछ होखेला। रउरा समझदार आमदी बानी, खुद समझ जाईं। रामअयोध्या असाढ़–सावन ले ईंहवा से जाये के कहत बाड़न। रउरा ऊंहवा से हाल्दी से चिठी भेजीं कि रामअयोध्या ईंहवा से जास। मउसिओ रउरा के देखे खातिर बेचयन बाड़ी। रउरा हमार तनिको फिकिर होखी त जरूर चल आएब। माघ में रउरा चम्पा कल गड़ावे खातिर आवे के कहले रहीं, अबहीं तकले ना अईनीं। अब राउर माई आ मउसी काम करे खातिर का दोहरा के जवान होखियें? बाबूजी त बीमरियो से गइल बाड़न। उनका से कवनो काम के आस अब नईखे। ईंहवा नाद में पानी भरत–भरत हालत पातर भ गइल बा। छव–छव गो नाद बा। अकेले हमहीं बानी। कतना करेब ? राउर सब बहिन–वहिन लोग अपना –अपना घरे बा।

रउरा जे समान भेजले रहीं, ऊ मिलल। बाकिर ईंहवा तमाशा भ गइल। रउरा जब जानेनी

त काहे के कवनो समान भेजेनीं ? माई आउर मउसी कहत बाड़ी कि रउरा खाली अपना बेकते के चिन्हत बानी। एहसे रउरा चाहीं कि उनकरो खातिर एकहक गो साड़ी भेज दींही।

खैर, रउरा अपना समझ के मोताबिक काम करेब आउर ईंहवा जरूर चल आएब। आवे के बारे में हीरा चाहे शोभा से खबरा भेजब।

राउरे चरणदासी/सुरेशवा के माई।''

चिठिओ भेजला दू महीना भ गइल रहे। बाकिर अबहीं ले ना सुरेशवा के बाबू आइल रहस ना कवनो चिठी आ पाइल रहे। जब–जब अंगना में कउआ बोलेला त समसुनरी के बुझाला कि ऊ आवत बाड़न। ऊ कउआ उचरावे लिआ, 'ए कउआ, उचर त, ऊ आवत बाड़न ? उचर त तोरा के दूध–भात देब।'

समसुनरी तीन बेरा सगुनो बिचरवा चुकल बिआ। अंतिम सगुन में निकलल कि धुरिए गोरे चलल आ रहल बाड़न। एह सगुन से ओकरा करेजा के बहुत शांति मिलल रहे। बुझाईल रहे कि ऊ आ गइल होखस। ऊ झट–झट दोसरके दिन नया साड़ी आउर बलाउज के नया कपड़ा खरीद ले ले रहे। काल्हे महकउआ तेल के छोटकी शीशी आ गुलाबी रीबनो बजार से खरीद के ले आइल हीअ।

काल्हे सांझी खानी ऊंहवा से गांव में एगो आदमी आइल त खबर ले अइलस कि दू दिन होली के रही त ऊ अइहन। एह से समसुनरी काल्हहीं से बहुत खुश बिआ। दूध आउर गोंईठा बिका गइला पर काल्हे ऊ गांव लवटे के बेरा अबीर खरीदलस।

आज ऊ कलकत्ता से आवे के बाड़न। समसुनरी जोड़त बिआ। देखते–देखते आजो के दिन निकलल जा रहल बा। ऊ भोरे से इंतजार में बिआ। 'शहर में रंग–अबीर के हल्ला बा' कह के आज ऊ दूध बेचे ना गइल हीअ। हाली–हाली सब काम ओरिआ के केश झड़लस, रीबन अंउसलस, काहे कि होली के दिन शनिचर पड़ल बा – नया चीझ कईसे अंवासी। शिंगार कर के डेहुरी में आके समसुनरी ठार भ गइल। सामने कुछ दूर एगो बगइचा बा। ओही बगइचा से होके गांव के रस्ता बा। दुआरी पर, डेहुरी में ठार ऊ बगइचा के रस्ता निहार रहल बिआ।

ऊपरी बेरा गांव के एक गोरा साइकिल से हहरात आईल आ ओकरा सास से कहलस, ''बेटा आवत हव। बस से अबके उतरलन हं। हम एने साइकिल से अइनी हं त सोचनी कि खुशखबरी सुना दीहीं।'' खबर सुन के समसुनरी बहुत खुस भइल। ओकरा खुशी के ठेकाना ना रहल। खुशी से ऊ अगरा गइल। कुछे देर में बगइचा वाला रस्ता पर एगो आदमी देखाई दिहलस। दूर, ढ़ेर दूर से समसुनरी के अतने बुझाइल कि अवनिहार के हाथ आउर कन्धा पर समान बा, ऊ बाहर से आवत बा। बाकिर अवनिहार के पाछे, कुछ दूर पर एगो मेहरारुओ चलल आवत रहे। ई के ह ? समसुनरी के ना बुझा पाइल। होखी कवनो गांव के दोसर मेहरारू। समसुनरी कबो घर में जाये आ फेर तुरंत बाहर आ जाये। खुशी के मारे ओकरा ना बुझात रहे कि का करो। खुशी में ऊ पागल लेखा भ गइल रहे।

जब अवनिहार नजदीक आ गइल त समसुनरी देखलस कि बुढ़िओ के मंझलू बेटा हवन। पांच दिन से कलकत्ता से चलल बाड़न। अपना ससुरारी से होली मनावे खातिर मेहरारू के ले ले आवत बाड़न। ई देख के समसुनरी के करेजा पर सांप लोट गइल। ओकर दुलहा ना आइल रहस।

ऊ बहुत दुखी भ गइल। जब रात भइल त बुझाये कि पहाड़ आ गइल बा। रात कटले ना कटाये। केहू के माटी उठला पर ओह रात जइसन बुझाला, समसुनरी के अउसने लागत रहे। ओठगंत, करवट बदलत कहइसहूं राति काट के भोरे उठलस त बुझाये कि ऊ कहिआ के बिमरिआ होखे। होली के मनहूस भोर ओकरा खातिर पहाड़ लेखा दिन लेके आइल।

एने–ओने के कुछ काम ओरवला के बाद समसुनरी के ओकर सास बोलवली। रात दुलहा किंहवा से जे सवगात आइल रहे, ऊहे देवे खातिर बोलवले रहस। तेहरी साड़ी, तेहरी बलाउज आउर तेहरिये टुकड़ा। सब एके लेखा। एकहक गो साड़ी, बलाउज और टुकड़ा समसुनरी के मिलल। बाकी समान दूनो सास में बंटा गइल।

समसुनरी के सब समान कटावन लागत बा। ऊ सोंचत बिआ, का हम कमात नईंखी ? हमरा के ई सब समान फुसलवनी भेजले बाड़न। लूगा–कपड़ा कीने लायक त हमार मेहनत आ मजदूरी से मिलल मुनाफे के चार आना ढेड़ बा। ...हुंह, बुझाता कि हम इनकर कपड़ा बिना हंहवा लंगटे बानी ? ऊ बुदबुदात बिआ – आउर लोग के मरद

नईखे का? ओकनी के कलकत्ता घर–दुआर भइल बा। एगो ई बुधुआ भेंटाइल बाड़न... कलकत्ता के परदेशी बना दिहल गइलन। ...ओकर दूनो देवर डेढ़ साल में चार–पांच बेरा घरे आ चुकलन। बाकी ई बाड़न कि गइला के बाद से आवे के नाम पर दू बेरा चिठी आ लूगा–कपड़ा भेज देले बाड़न।सभे होली मनावे में लाग गइल बा। दुपहरिआ होते–होते रंग से अंगना बरसात लेखा किच–किच भ गइल। लेकिन समसुनरी 'माथा दुखाता' कह के रंग से दूर रह गइल बिआ। गांव के ननद आ गोतनी कहाए वालिन के अब तकले तीन गो जमात आ चुकल बा। आ समसुनरी चउका में सास के हुकूम के मोताबिक पकवान छाने में अपना के सउनले बिआ। हाथ काम कर रहल बा आ बिचार के घोड़ा कहंई तेजी से धउर रहल बा।

''तू रंग ना खेलबू का हो ?'' ई सुनिओ के कि समसुनरी के माथा दुखाता, सास पूछली। सास बूझ गइल रही कि ई माथा के दरद ना करेजा के टीस ह, जवन अपना बेकत के ना अइला से घवा के आउर बढ़ गइल बा। सास बोल तारी, ''रामअयोध्या कहत बाड़न कि उनका छुट्टी ना मिलल ह। हाले जे तरक्की भइल बा नू एही से तुरंत छुट्टी ना मिल पाइल ह। ई त कहता कि ऊ आवे खातिर छटपटा के रह गइल। बाकिर ...।''

अतना सुन के समसुनरी के करेजा में बईठल चोर आंखि से हो के निकले लागल। ऊ जोड़–जोड़ से रोवे लागल।

''बड़की, ते रो मत ! रोअत काहे बारे ? तोर मरद त परदेश नू गइल बाड़न, परमिलवा के मरद लड़ाई में गइल बा। तोर मरद त ऊंहवा ठीक से आपन रोज के काम में लागल बाड़न, बाकिर परमिलवा के मरद के खाए के त छोड़, जाने के ठेकाना नईखे कि कब अप. ना देश पर निछावर हो जईंहन। बाकिर ओकरा के देख त।''

समसुनरी अब चुप भ गइल। बाकिर ऊ सोंच तिआ कि हमार मरद जदि लड़ाई पर गइल रहतन त का हम रो–रो के ढेबुआ लेखा आंखि आ पुआ लेखा गाल कर पईंती। हूंह, लड़ाई पर? ई का लड़ाई पर जंईहन? कलकत्ता त एगो संभरत नईखे आ लड़ाई पर जईंहन! अबहिंओ ओकरा आंखि के लोर चिपकल बा, लागता जइसे कोटर में चिड़ई झांकत होखे।

''ए दुलिहिन ...'' अबहीं सास कुछ कंहई जात रहली कि दुआरी पर फेर एगो जमात रंग खेले आ गइल। एह जमात में बुढ़िआ लोग जादे बा। सभनी मिल के बुढ़िओ के रंग से बोझ दिहलस।

कमली के नजर समसुनरी पर पड़ गइल। पड़ोस के ननद ठहरल। धउर के रंग में गोत देवे के चहलस। बाकिर रंग से समसुनरी छीटक के बच गइल। सब रंग पुआ के घोड़ल आंटा में छीतरा गइल।

रंग में अबहीं पोता–पोताही चलते रहे कि दुआरी पर कोई आ गइल। दुआरी पर एगो मरद के देख के अंगना में रंग के खेल रुक गइल। लोग ठसक गइल। दुआरी पर अवनिहार मरदाना के पूरा मुंह संतरंगी से पोताइल बा।

समसुनरी के सास के सबसे पहिले अवनिहार पर नजर गइल रहे। उनकर बड़का बेटा हवन, सुरेशवा के बाबू, समसुनरी के – – – –। मतारी से नजर मिलते ऊ सीधे भीतर घुस के गोर छू के परनाम कईलन। बगल में ठाड़ समसुनरी पर नजर चल गइल। नजर चार होअते समसुनरी के बांछा खिल गइल। ऊ लजा गइल। माथा पर लुगा ठीक करके मुंह घुमा लेलस।

मवका देख के सुरेशवा के बाबू समसुनरी के गोर गुलाबी, होली के दिन भी कोरा रह गइल गाल पर अपना हाथे रंग चभोथ दिहलन।

राति खानी दुआरी पर गांव के लोग बईठत गा रहल बाड़न। ढ़ोलक–झाल पर होली गवा रहल बा। सांझी खानी के चलल भांग अब आपन रंग देखावल शुरू कर देले बा। लोग झूम–झूम के गा रहल बा। 'राम खेलस होली लक्ष्मण खेलस होली – – – ' से शुरू होके होली अब भउजी के लाल–लाल गाल पर शोभे लाले हो गुलाल– – –' पर आ गइल बा।

समसुनरी केंवारी के ओट से ठार सब देख रहल बिआ। सुरेशवा के बाबू झाल लेके झूम रहल बाड़न। समसुनरिओ के जबान पर धीरे–धीरे होली के गीत तयरे लागल बा। ऊहो बिना निशा के झूम रहल बिआ। ओकरा जिनिगी में पहिले–पहिल अइसन खुशी के दिन आइल बा।

दूर–दूर से गांव में अवाज आ रहल बा, ''होली – हो– होली हो – – हो हो– –''

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल,नामकुम,
रांची (झारखण्ड)–834 010
मो0 8809972549

अइले बसंत

हरेश्वर राय

अइले अइले बसंत बाह बाह
हसीं जा हाहा हाहा।

तिसिया फुलइली मटर गदराइल
झुंड तितिली के उड़ेला इतराइल
बनल भंवरा बनल बदसाह
हसीं जा हाहा हाहा।

आम मोजरइले कली मुसुकइली
कंठा में मिस्री कोइल लेइ अइली
भइली पुरवा बड़ी नखड़ाह
हसीं जा हाहा हाहा।

हरियर चहचह भइली बंसवरिया
सरसों के रंगवा रंगइली बधरिया
होता भुईं सरग के बिआह
हसीं जा हाहा हाहा।

❍ रतना,मध्य प्रदेश

गीत

उमेश कुमार राय

अवध बीचे,/होली खेलत रघुवीर।

सखिया सब अबीर लेई खोजत,
रामाई लुकाये सरजू तीर।
अवध बीचे ,/होली खेलत रघुवीर ।

हनुमान पिचकारी रंग डारे,
भरत भुआल डाले अबीर।
अवध बीचे,/होली खेलत रघुवीर ।

कोशिला केकई मुशुकी छांटत ,
राजा दशरथ बड़न धीर गंभीर।
अवध बीचे,/होली खेलत रघुवीर ।

लखन लाल बचाव में लागल ,
सुमित्रा के डेरावत राम के फिकीर।
अवध बीचे,/होली खेलत रघुवीर ।

❍ जमुआँव ,भोजपुर (बिहार)

हमर मन कहेला

कुमार मंगलम रणवीर

नेह से देवल जब जहर अमृत ह!
त तहर हाथ से बनावल
गाजर के हलवा के मिठास चौकचक!
जेकरा खाय के दरम्यान समझ
पइनी सिरिजन के महत्ता...!

सिरिजन के विध में झोंकले बारू
अपन सब कुछ बिन लोभ–मोह के
प्रेम खातिर!
प्रेम से उपजल कविता,गीत,पीड़ा,
पुआ–पकवान आदि के भोगे वाला
इंसान कर्मठ होला अउर
नजरिया में ओकर संसार
फाग–चईता गावत मिलेला...
सिरिजन करेवाला के मान–सम्मान
करेवाला समाज
कभी चूकि न सम्मान से अइसन
हमर मन कहेला....।

❍पटना(बिहार)

बापू का धरती मोतीहारी से भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में मान्यता खातिर भइल शंखनाद

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 26 वां अधिवेशन दिनांक 26 आ 27 फरवरी 2022 के पूर्वी चंपारण के मोतिहारी में संपन्न भइल।भोजपुरी भाषा, साहित्य ,कला आ संस्कृति के बढ़न्ति के संकलप का संगे बनल एह संस्था के पहिलका अधिवेशन 1975 में आ दूसरका अधिवेशन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अध्यक्षता में पटना में भइल रहे जवना के मुख्य अतिथि बाबू जगजीवन राम रहलें। तब से अबले एह संस्था के कुल 26 अधिवेशन कुशलतापूर्वक संपन्न हो चुकल बाड़ें। 26 वां अधिवेशन वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य हरे राम त्रिपाठी चेतन के अध्यक्षता में संपन्न भइल। मुख्य अतिथि का रूप में श्री मंगल पांडे स्वास्थ्य मंत्री बिहार सरकार ने एकर उद्घाटन कइलें आ विधि मंत्री प्रमोद कुमार जी एवं विधान परिषद सदस्य संजय मयूर आपन उद्गार व्यक्त कइलें। माननीय मंत्री श्री मंगल पांडे आ विधान पार्षद श्री मयूर आश्वस्त कइलें कि भोजपुरी के मान्यता के लड़ाई अंतिम चरण में बा। भोजपुरी अब आँठवी अनुसूची में हलिए सामिल होखी। उद्घाटन सत्र, संगोष्ठी सत्र से लेके अखिल भारतीय कवि सम्मेलन तक कुल्हि कार्यक्रम प्रशंसनीय रहे। नवलेखन पर श्री ब्रजभूषण मिश्र जी, महेन्दर मिसिर के व्यक्तित्व कृतित्व पर प्रो जय कांत सिंह जी आ भोजपुरी उर्दू के अंतर्संबंध पर श्री हरेराम त्रिपाठी ''चेतन'' जी लमहर वक्तव्य देके संगोष्ठी सत्र के ऊंचाई तलक पहुँचवलें। भोजपुरी आलोचना के वर्तमान पर डॉ विष्णु देव तिवारी के आलेख पाठ विशेष रुप से प्रसंसनीय रहे। आज के समय में जहवां भोजपुरी क नाँव लेके बनावल जा रहल छोटी–बड़ तमाम संस्था अपने अस्तित्व में आवे के बेरा से भटकाव के शिकार होखे लागेलीं अउर कुछ समय का बाद अपना उद्देश्य से अलगा हो के नावे भर के रह जालीं। ई सुखद बाटे कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना के भटकाव से अलगा राखत आपन गरिमा बचवाले बा। एकर कारन ई बा कि एकरा केंद्र में भोजपुरी हवे, अउर संस्थन का केंद्रमें कवनों खास मनई आपन खास सोवारथ का संगे उपस्थित रहेला। अइसना में भोजपुरी बहाने भर बनि के रहि जाले। एहिका चलते अउर कवनों दोसर संस्था कुछों ना क पावेलीं। अउर शिखर से शुरू होके शून्य पर पहुंच के बिलाए का हाल में बानी, अबो भोजपुरी के मातृ संस्था का रूप में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन शून्य से शुरू होके शिखर तक के जतरा का ओर अग्रसर बाटे। एहुके रहता में व्यवधान आ चुनौती कम नइखी। तबो संकल्प शुभ आ उद्देश्य स्पष्ट होखला से मोसकिल आसान हो जाला। अधिवेशन में वरिष्ठ साहित्यकार श्री ब्रज भूषण मिश्र का संयोजन में 11 सदस्यीय प्रवर समिति का गठन भइल जवना के स्वरूप निम्नवत बा– **प्रवर समिति :**

सर्वश्री डॉ. अर्जुन दास केसरी (राबर्टगंज, उ. प्र.), सूर्य देव पाठक 'पराग'(लखनऊ, उ. प्र.), डॉ. रिपु सूदन श्रीवास्तव (मुजफ्फरपुर, बिहार), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना, बिहार), कनक किशोर (राँची, झारखंड), महेन्द्र प्रसाद सिंह (नई दिल्ली), सुभाष चंद्र यादव (गोरखपुर, उ. प्र.), डॉ. गुरु चरण सिंह (सासाराम, बिहार), डॉ. सुनील कुमार पाठक (पटना, बिहार), गंगा प्रसाद 'अरुण' (जमशेदपुर, झारखंड), डॉ. राम निरंजन पाण्डेय (मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण), डॉ. नीरज सिंह (आरा, बिहार), डॉ. कमलेश राय (मऊ, उ. प्र.), डॉ. ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर, बिहार – संयोजक)

26 वें अधिवेशन में श्री महामाया प्रसाद विनोद को कार्यकारी अध्यक्ष तथा प्रो जय कांत सिंह जय को सम्मेलन के सम्मानित महामंत्री का दायित्व प्रदान किया गया है ।अध्यक्ष पद पर श्री हरेराम त्रिपाठी चेतन प्रतिष्ठित किए गए हैं। नई कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया जिसका स्वरूप निम्नवत है।

राष्ट्रीय कार्य समिति :

अध्यक्ष – आचार्य हरेराम त्रिपाठी (राँची, झारखंड) **कार्यकारी अध्यक्ष**– डॉ. महामाया प्रसाद 'विनोद' (पटना, बिहार), ई. राजेश्वर सिंह (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) डॉ. बलराम दूबे (बोकारो, उत्तर प्रदेश), डॉ. विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, बिहार)

महामंत्री– डॉ. जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर)

साहित्य मंत्री– सुनील कुमार श्रीवास्तव 'तंग इनायतपुरी (साहित्य मंत्री), **प्रकाशन मंत्री** – ज्योतिष पाण्डेय (छपरा, बिहार), **संगठन मंत्री**– कौशल मुहब्बतपुरी (मुजफ्फरपुर, बिहार), **प्रचार मंत्री** – अजय कुमार ओझा (जमशेदपुर, झारखंड), **प्रबंध मंत्री** – मार्कंडेय शारदेय (पटना, बिहार), **कला मंत्री** – गुलरेज शहजाद (मोतिहारी, बिहार), **कार्यालय मंत्री** – दिलीप कुमार (पटना, बिहार), विधिक सलाहकार – चन्द्रशेखर सिंह अधिवक्ता–उच्च न्यायालय, पटना,

मीडिया सेल– शिवानुग्रह नारायण सिंह, मनोज भावुक आ जलज कुमार अनुपम (मीडिया सेल)

कार्यकारिणी के सम्मानित सदस्य– सर्वश्री विश्वनाथ शर्मा (छपरा, बिहार), ब्रजकिशोर दूबे (पटना, बिहार), मधुबाला सिन्हा (मोतिहारी, बिहार), प्रो. ओम प्रकाश पंडित ओम (मोतिहारी, बिहार), डॉ. रवीन्द्र शाहाबादी (बेतिया, बिहार), विनय कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारण), डॉ. राजेश कुमार माँझी (नई दिल्ली), डॉ. ओम प्रकाश राजापुरी (मशरक, बिहार), नीतू सुदीप्ति नित्या (बिहियां, भोजपुर, बिहार) डॉ. विक्रम कुमार सिंह (मोतीपुर, मुज., बिहार) आ प्रकाश प्रियांशु (कोलकाता, पश्चिम बंगाल)।

प्रदेश इकाई संयोजक :

डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़' (छत्तीसगढ़), डॉ. हरेश्वर राय (मध्यप्रदेश), मनोकामना अजय (झारखंड), डॉ. जनार्दन सिंह अमन (उत्तर प्रदेश), केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली) और डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात)।

भोजपुरी संघर्ष वाहिनी संयोजक :

सर्वश्री सुभाष पाण्डेय (उत्तर बिहार), शैलेन्द्र सिंह (दक्षिण बिहार), लाखन सिंह (झारखंड), कुमार अभिनीत (उत्तर प्रदेश) और अशोक सिंह अकेला (दक्षिण भारत) ।

सम्मेलन का मुख्य पत्र 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका ' के संपादन औ प्रकाशन का दायित्व :

डॉ. महामाया प्रसाद विनोद (कार्यकारी अध्यक्ष), जितेन्द्र कुमार (सदस्य, प्रवर समिति) एवं दिलीप कुमार (कार्यालय मंत्री)।

सम्मेलन भोजपुरी भाषा साहित्य आ कला के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देवे वाला साहित्यकार, कलाकार, रंग कर्मी आ अन्य विशिष्ट लोगन के प्रतिष्ठित सम्मान से अलंकृत कइलस। अंतिम सत्र में अखिल भारतीय भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल जवना के अध्यक्षता वरिष्ठ कवि हरेंद्र हिमकर जी आ संचालन तंग इनायत पुरी कइलें ।वरिष्ठ कवि कमलेश राय, योगेंद्र शर्मा ,सुभाष यादव ,सुभाष पांडे ,रविकेश मिश्र एवं संजय मिश्र अपना कविता/गीत से दर्शकों/श्रोता लोगन के मंत्र मुग्ध कर दिहने।

❑❑

रिपोर्ट : कनक किशोर

सब दिन रहत न एक समाना

बिम्मी कुँवर

सुरेश बो बिदाई क के ससुराल अइली त उनकरा संगे उनकर दस बरिस के भाई चंदन भी आइल रहे। गांव घर के सभ केहू बूझल कि बिआह सादी में कनिया के घर से दाई–लौड़ी भा छोट भाई–भतीजा अइबे करेला, त इहो आइल होखिहे। बिआह के बीतला छ महीना हो गइल बाकिर ना कनिया के नइहर से कवनो तीज–खिचड़ी आइल ना चंदन के बोला के केहू ले गइल। अब चंदन गांव घर के लइकन संगे हिल–मिल गइल रहूअन।

भोरे–भोरे खा पी के दिन भर लट्टू नचावस भा तिलंगी उड़ावस। फेर दुपहरिया में बहिन बोला के खाए दे देस उ खा के फेर सूतस भा खेले कूदे लागस। दे खते–देखते सुरेश के दूनो भाई के भी बिआह हो गइल। सुरेश गिरहस्त आ समिलात परिवार रहें।

मेहरारू के जिरह से सुरेश उनकरा भाई चंदन के नाव गांव ही के इसकूल में लिखवा दिहलन। बाकिर उनकरा के कभो–कभार ही इसकूल भेजल जात रहे, ज्यादा समय उ गाय–गरू के देख–रेख करे लगलन।

एकदिन कक्षा में रघुवंशी बहिन जी चंदन से पूछली ...''जे चंदन तोहार माई बाबू काहे तोहरा के बहिन के ससुरार में छोड़ देले बा लोग। तू इसकूल हरमेसा नागा करे ल आ अब गाय–गोरू–गोबर के काम करे लगल।''

चंदन रोआसे धरती के माटी अंगूठा से खरकोचे लगले...कब्बो मैडम के त कब्बो मय लइका–लइकिनी के देखस। बहिन जी बूझ गइली जे इ कवनो अइसन बात बा जवन सभकरा सोंझा नइखे बता पावत।

दोसरा दिन उ स्टाफ रूम में चंदन के बोलवली आ पूछली कि ''अब बताव कवने कारन अपना गांवे नइख जात?''

चंदन फफक– फफक के रोवे लगले आ आपन कहनी शुरू कइले–''बहिन जी, कोइलवर के बहुत धनी –मनी घर के हमनी भाई–बहिन रहनी जा। जब हम जनम ले ले रही त भर गांव में चानी के सिक्का बटाइल रहे। हमार बरही खूबे धूमधाम से मनल आ रात भर नाच भइल रहे। हमरा घरे हमरा मामा–मामी के खूब आना–जाना रहे। हमार अम्मा खाली अपना नइहर के लोग के पूछत रहली। आजी, बाबा आ चाचा–चाची लोग के तनिको लगे ठेके ना देत रहली। बेसी पइसा के नसा में बाबूजी बहुत शराब पीये लगले आ गलत संगत मे उठे बइठे लगले... एकदिन कवनो दोस्त किहाँ उनकर भोज रहे आ उ ओजुगे गइल रहले आ भोरे उनकर लास आइल । हम ओह घरी पांच बरिस के रही। लोग बाग कहे कि हमरा बाबूजी से उनकर दोस्तवा बहुत पइसा उधारी ले–ले रहे ऐही से जहर दे के मूआ घल लस । अब मय करोबार दूनो मामा देखे लगले आ बाबू जी के मुअला के एके साल बाद का जाने कइसे अम्मा के पेट में दरद भइल आ ऊहो ऐह दुनिया से चल गइली। अब हम दूनो भाई–बहिन प मामी लोग आखिरी ले आत्याचार करस जा। मामी कहत रहली कि मय पइसा ऐकर बाप दारू शराब में उड़ा दिहलस अब बोझा हमनी के कपार प आ गइल। एक बेर मामा खिसिआ के हमनी दूनो भाई बहिन के दादी–दादा भीरी छोड़ अइले...हमनी ओहिजा भी एक महीना रहनी बाकिर फेर चाचा खिसिआ के हमनी दूनो भाई–बहिन के इ कह के कि धन लूटी मामा–मामी त लालन–पालन भी ऊहे लोग करी, हमनी के मामा घरे पटक दिहल लोग। दिदिया के बिआह दूहाजू से ऐही शर्त प भइल कि दस साल के भाई के भी राखे के पड़ी।''

रघुवंशी बहिन जी ओकर कहानी सुन के बहुत उदास भइली आ चंदन के करेजा से साट के ओकर पीठ थपथपा के कहली जे...

''चंदन तोहरा के खूब पढ़े के पड़ी। इ हिकारत भरल जिनगी से अपना के निकाले के पड़ी। हम इ नइखी कहत कि तू गाय–गोरू मत देख, घर के बहरी भीतरी काम मत करा बाकिर गाय–गोरू के देख–रेख कर के भी तू पढ़ सके ल। तोहरा घर से पांच दस मिनट के दूरी प हमार घर बा तोहरा के कवनो भारी सवाल के जवाब पूछे के होखी त आ जइह...आ हमार दूल्हा इंटर कालेज में हिसाब के मास्टर हवन तू उनकरो से हिसाब के सवाल पूछ सके ल...ठीक नू।''

चंदन के मन में पढ़े खातिर आ सम्मान से

जीए खातिर रघुवंशी बहिन जी जोत बार देले रहली। गांव ही में खेत–बधार, गाय–गोरू, दीदीआ के बाल–बच्चा के खेलावत–खिआवत चंदन भोरे–भोरे दउरे भी जात रहले। अब उ ओह गांव से पांच कोस दूर बीगही गांव से बारहवीं भी पास कर ले ले...

एक दिन रघुवंशी बहिन के मोबाइल बाजल जब उ फोन देखली त अननोन नम्बर से फोन आवत रहे। जब उ फोन उठा के हलो कहली त ओने से मर्दाना आवाज सुनाई पड़ल–''परनाम बहिन जी, हम चंदन''

''अरे खूब खुश रह चंदन, कहवा बाड़ हो, ढेर दिन से लउकल ह ना''

पूछली बहिन जी– ''बहिन जी रउरा दूनो बेकत के आसीरबाद आ प्रोत्साहित कइला से हम बीएसएफ में दरोगा बन गइनी, एक महीना बाद ट्रेनिंग बा।'' भरभरात आवाज में बोलले चंदन।

इ बात सुन के बहिन जी खूबे खुश भइली आ आचर से आँख के कोर प के लोर पोछत भर–भर खांची आसीरबाद भी दिहली।

''बहिन जी सभ केहू हमरा प दया करत रहे, हमरा लाचारी प ओह!, आह!, करत रहे बाकिर रौरा हमरा के स्वाभिमान से जीये खातिर हुलका देनी, हमरा मन में हुल्लास भर देनी कि हमहूँ पढ़–लिख के सम्मान से जी सकेनी, ना त हम बहिनी के दुआर के बनिहार बन के रह जइती।''

चंदन अपना खुशी के सम्हारत इ बात कहले. भरभराईल आवाज में बहिन जी बोललीं

''चदंन सब दिन रहत ना एक समाना''।❑❑

❍ चेन्नई

सुन्दर महिना फागुन के

संग्राम ओझा 'भावेश'

हर साल एह महीना में,औकात भुलावे के परेला,
भारतीय सभ्यता के मान रखके,
ई रीत निभावे के परेला,
कुछ प्रेम निभावल जाला,चुनिंदा दुश्मन चुन के,
सचहूँ बड़ा सुन्दर हवे,महीना ई फागुन के ...।

वइसे लाल रंग ह खतरा के निशानी,
सबके मुँह बतलावेला,
फागुन में दोसरा प लग के,गजबे प्यार बढ़ावेला,
अवगुण से विपरित हो जाला,रुप ले लेला गुन के,
सचहूँ बड़ा सुन्दर हवे,महीना ई फागुन के ...।

हरा रंग के बात का कहीं,रंग होखे चाहें होखे गुलाल,
जेकरा पर ना लगे रंग ई,ओकरा मन में रहे मलाल,
हरा रंग हर चीज बढ़ावे,सब लगवावे एतने सुन के,
सचहूँ बड़ा सुन्दर हवे,महीना ई फागुन के ...।

कवि लोग का करी बड़ाई, बुरबकवो बतिआवेले,
ए फागुन के बात निराला,अपना बुद्धि से बतावेले,
'संग्राम' करे वाला मुहवाँ भी,चले हाथ के चुम के,
सचहूँ बड़ा सुन्दर हवे,महीना ई फागुन के...। ❑❑

❍मुसहरी बाजार, गोपालगंज (बिहार)

दरपन

विद्या शंकर विद्यार्थी

रमुआ अपना बाबूजी से चुपे गांव के आइल बारात में चल गइल रहे आ घरे आइल त पत्तल में चार गो पुड़ी ले ले आइल। जमुना देखते आग लेखा धधक गइलन आ पुछलन – 'पत्तल में का ह रमुआ ?'

'दरोगा चाचा घरे के बारात के पुड़ी ह।' रमुआ सकपकात कहलस।

'तें, एतहत हो गइले, आ तोरा अबहीं ई पता नइखे कि चोर आ बहुते दरोगा के धन हाथ ममोर के छिनल होला, ओह धन में रोआं डहंकला के आह होला ना खाए के चाहीं। आंय, कपड़ा धोआ सकेला रोआं डहंकला के दोष ना धोआ सके।' रमुआ के भक से आंख खुल गइल आ छमा मंगलस जइसे ओकरा सोझा दरपन धइल होखे।

❑❑

❍ बिहार

के दोषी

जियाउल हक

भोरे भोरे पागल के भेस में बुटन काका आज गांव में घुम घुम के दिवार पर नशाखोरी के विरोध में पोस्टर बैनर चिपका के लोग के जागरूक करे के काम करत रहले।
बुटन काका के ई काम देख के गांव के बोखारी मियां कहत नजर आइलेः– का ए बुटन भाई अब ई कइला से का राउर संतोष बेटा वापस थोड़े आ जइहन? सम्हाली अपना आप के, जाई घरे नहा धोवा ली अब ई कइला से कवन फायदा।
बोखारी मियां के ई बात सुन के बुटन काका पोस्टर चिपकावत ही मुड़ी घुमा के कहलेः– ए बोखारी हम जानत बानी कि अब हमार बेटा संतोष वापस ना अइहन, बाकी अब गांव में केहू के संतोष बेटा जहरीला शराब पीके ना मरे एही से गांव भर के लोग के हम आंख खोलत बानी।
ई कहत बुटन काका के आंख नम हो गइल अउर आपन संतोष बेटा के याद में ऊ फफक–फफक के रोये लगले।

बुटन काका के रोवत देख के बोखारी मियां गमझा से बुटन काका के आंसू पोंछत उनका पास में ही बइठत कहले– ''अब केकरा के दोषी कहल जाओ सरकार त रोक लगा ही देले बा बाकी लोग आपन आदत से बाज आवत ही नइखे।'' ।❑❑

❍ **छपरा बिहार**

...फागुन आय गइल

मनोज भावुक

फगुआ! आहा! चांद–तारा से सजल बिसुध रात छुई–मुई लेखां सिहरता. सोनहुला भोर मुसुकाता. प्रकृति चिरइन के बोली बोलऽतिया. कोयल कुहुक के विरहिनी के जिया में आग लगावऽतिया। खेत में लदरल जौ–गेहूं के बाल बनिहारिन के गाल चूमऽता। ठूंठो में कली फूटऽता। पेड़ पीयर पतई छोड़ हरियर चोली पहिर लेले बा। आम के मोजर भंवरन के पास बोलावऽता. कटहर टहनी प लटक गइल बा. मन महुआ के पेड़ आ तन पलाश के फूल बन गइल बा। हमरा साथे–साथ भउजी के छोटकी सिस्टर भी बउरा गइल बाड़ी. माधो काका भांग पीके अल्ल–बल्ल बोलत बाड़न. ढोलक, झाल–मंजीरा के संगे सिन्हा चाचा के गोल दुआरे–दुआरे फगुआ गावऽता. बड़की भउजी हफ्ता भर पहिलहीं से जहां ना रंगे के ओहू जी रंग देत बाड़ी। माई माथा पऽ अबीर लगा के मुंह में गड़ी–छुहाड़ा डाल देत बिया आ जुम्मन चाचा सीना से लगा के होली के शुभकामना देत बाड़न. तले भक्क से आँख खुल जाता। सपना टूट जाता, गाँव वाली होली के सपना।

हम दिल्ली में बानी आ हमरा आँखी का सोझा पसरल बा भोजपुरी के पचासन कवि के फगुआइल रचना. ओह में फागुन के किसिम किसिम के सीन लउकता।

हास्य–व्यंग्य के सिद्धहस्त रचनाकार डॉ. शंकरमुनि राय ''गड़बड़'' जी कहऽतानी –

चलल बसंती फेंक दुपट्टा अमवां बउराइल
भउजी देह अंइठली भइया, फागुन आय गइल

प्रीत के पाहुन भंवरा बन करके लगले मंड़राये
याद परल बीतल जिनिगी, सासो लगली मुसुकाये
सरहज नैन चलवली, संउसे देह छुवाय गइल
भउजी देह अंइठली भइया, फागुन आय गइल

तले भक्क से हमरा आपन साली ईयाद पड़ गइली. हमार एगो फागुनी दोहा बा –

साली मोर बनारसी, होठे लाली पान
फागुन में अइसन लगे जस बदरी में चान

बनारस (चंदौली) ससुराल ह हमार। बनारस के बात चलल त बनारसे के एगो कवयित्री हईं सरोज त्यागी। जनकवि कैलाश गौतम जी के बेटी

...फागुन आय गइल

मनोज भावुक

हईं. उनकर फगुआइल कविता ह कि –

सनन सनन बोलै पुरवाई,
हँस–हँस खीचौ अंचरा
माथ टिकुलिया, गाल पे लाली
आंखिन सोहै कजरा
जे जे देखलस रूप लोभावन ऊहे घायल हौ
गावा फाग जोगीड़ा गावा फागुन आयल हौ

बनारसे के एगो कवयित्री हईं मंजरी पांडेय। राष्ट्रपति से सम्मानित हईं। फाग के बारे में कहत हईं कि –

मद से मातलि ह एकर नजरिया
बचौ पावै नाही एको गुजरिया
अँचरा खींचे रस भींजे मञ्जरी के
मन लुभावेला बसंत कंत ई बटोहिया।
रहि रहि मोरि रहिया रोके ई बटोहिया
फूलगेनवा से हैं मारे ई बटोहिया

ओही बनारस के लोकप्रिय कवयित्री हईं डॉ. सविता सौरभ. सविता जी के मनवा में साध–सपना के गंगा फफाइल बाड़ी–

फगुनी बहेले बेयरिया हो,
पिया ला द चुनरिया।
होरी के दिनवा नगीचे बा आइल
मनवा में सधिया के गंगा फफाइल
जयपुर के चाहीं लहरिया हो
पिया ला द चुनरिया

छपरा के कवि प्रणव पराग मरद होइयो के नारिये मन के साध कहत बानी–

चढ़ते बसंत पिया बहरा से अइहे
फगुआ में ललकी चुनरिया ले अइहे
फेरु पीरीतिया फुलाई फगुनवा में
हम डालब रंगवा गुलाल तू लगइहे
सजना फगुनवा में जनि बिसरइहे...

देवरिया के कवयित्री आ हास्य कवि बादशाह प्रेमी के पत्नी माधुरी मधु के सुनीं –

फुलवा डाले डाल फुलाइल
भंवरा झूमि झूमि मंडराइल
पपिहा पी–पी करेला, पुकार सखिया
अबही अइले न सजना हमार सखिया

हास्य कवि बादशाह प्रेमी अपना हिसाब से फागुन के परिभाषित करत बानी –

बिरहिन कवनो अँचरा खोले
जब मुंडेर पर कउवा बोले
जब परदेशी लवटे घरे,
जब देखनहरू खाहुन करें
जब धुरा में आग धरेला
गरमी जब छितिराइल बा
तब जनिहऽ भउजी मनमौजी
फागुन के दिन आइल बा

मुजफ्फरपुर के कवि आ फिल्म गीतकार कुमार विरल जी प्रकृति आ फगुआ के समीकरण बतावत बानी–

सोना से सुनर देहिया धरती दुलारी।
सातो रंग घोरी केहू मारे पिचकारी।।
गेहुआँ गुमाने झूमे गदरल जवानी,
तसिया के झुमका झुलावत बारी रानी,
सरसों के पियरी पहिर लेली सारी।।

चंपारण के कवि अखिलेश्वर मिश्रा फगुआ के मन से कनेक्शन मिलावत बानी–

ई मौसम ह प्रेम प्रीत के,
ई मौसम ह राग गीत के
राग बसंती गूँज रहल बा,
लेके अब उल्लास
प्रिये देखे आइल मधुमास...

युवा कवि संतोष भोजपुरिया दिल्ली–मुंबई के प्रवासियन के आवाज बनी के बोल रहल बाड़न –

फगुआ के लुटे के लहरवा हो, चले यूपी बिहरवा
यूपी बिहरवा हो, यूपी बिहरवा
छुट्टी लेके चलल जाव घरवा हो
चले यूपी बिहरवा

गाजियाबाद के कवि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी बसंत के दुलहा बतावत कहत बानी –

मन के तार से छुवइलें, बसंत दुलहा
सखि मोरे दुअरे अइलें, बसंत दुलहा

वरिष्ठ गीतकार संगीत सुभाष बसंती आगमन के लक्षण बतावत बानी –

पसरल सरेहे हरियरी, बसंती आगम जनाता
गोरी बेसाहेली चुनरी, बसंती आगम जनाता
मोंजरि का अँचरे लुकाइल टिकोरा
तितली कुलाँचेले भँवरा का जोरा
मांगेली नगवाली मुनरी, बसंती आगम जनाता

वरिष्ठ, सशक्त अउर सुकंठ कवि भालचन्द त्रिपाठी के अद्भुत गीत बा –

सुधि के दियना जरा गइली फागुन में
पीर बाढ़लि डेरा गइली फागुन में
हमरे प हक सबकै जिउ सुनिके सुलगे
देवर के अलगे त बाबा के अलगे
हम त अइसे ओरा गइली फागुन में

चाहे एगो अउर गीत ...

अंग अंग मोर अंगराइल हो
जनो फागुन आइल
कंगना न मानेला खन खन खनके
असरा फुलाए लगल फिर मन के
भउजी क टिकुली हेराइल हो
जनो फागुन आइल

बनारस में झगरू भईया के नाम से लोकप्रिय कवि लालजी यादव के कविता सुनीं –

आम में बउर टिकोरा लगी
भलहीं महुआ महुआरी चुवाई।
पीपर ताली बजाई भले
भलहीं बरगद ई बरोह झुलाई।
नंद के नंदन हे यदुनंदन
चंदन भी त सुगंध लुटाई।।
जाना बसंत में अइबा न तूँ
त परास हिये मोरे आगि लगाई।।

रेनुकूट, सोनभद्र के सुकंठ गीतकार मनमोहन मिश्र जी के चर्चित गीत बा –

नाहीं अइल लउटि भवनवा, फगुनवा आइल बा दुअरे
सून बाटे मन क अंगनवा,फगुनवा आइल बा दुअरे
जब जब बहेले इ पछुआ बयरिया,
कंगना की जइसन बाजेले रहरिया,
वीनवा स झनकेला मनवा,फगुनवा आइल बा दुअरे

गोपालगंज के कवि संजय मिश्र संजय भी विरहिनी के उपटल दरदे के बखान करत बानी –

बरसे मदन रस खेत खरिहान में,
झूमेला गांव सजी होरी के तान में,
बूढ बरगदवो के मन बउराइल
घरे आजा सजना कि फागुन आइल

हिंदी–भोजपुरी के वरिष्ठ गीतकार प्राचार्य सुभाष चंद्र यादव जी होली में का आलम होला अपना गीत में बतावत बानी –

माने एकहू ना बतिया होली में रसिया
कहे दिनवे के रतिया होली में रसिया
कबो चान कहे हमके चकोरी कहेला,
कबो कहे दिलजानी कबो गोरी कहेला।
कहे पनवां के पतिया होली में रसिया।।
माने एकहू ना ...

युवा गजलकार मिथिलेश गहमरी के '' अजब भइया होली गजब भइया होली'' त साँचो अजबे–गजब बा. लोक मन के बात खोल के आ खुल के कहाइल बा.

लेकिन आज के समाज के कड़वी सच्चाई त चंपारण के चर्चित कवि गुलरेज शहजाद जी कहत बानी अपना कविता '' घोघो रानी कतना पानी'' में ..

आईं चलीं ढोल बजाईं /रास रचाईं /नाचीं गाईं /बाकिर कइसे ...

मनवा में / उदबेग मचल बा /चकराता बुद्धि कि कइसे / फगुआ कटी
राग–रंग के खेल हेराइल /हो–हल्ला बा जात धरम के /सगरो लउके /राजनीति के खेल तमासा
/मन के बा उत्साह कि जइसे /फूटल होखे गोंट बतासा

भोजपुरी के पहिला प्रोफेसर डॉ. जयकांत सिंह 'जय' भी कुछ एही तरफ इशारा कर रहल बानी –

कइसे फाग गवाई, बाजी ढ़ोल–मजीरा गाँव में
भाई भाई के दुश्मन हो गइल, अबकी एह चुनाव में

मेल–जोल के परब ह होली, भेद भुलावल जाला,
बाकिर अब एकरे माथे हर बैर सधावल जाला।
केहू पर बिस्वास न ठहरे, जिहीं–मरीं अलगाव में
कइसे फाग गवाई, बाजी ढ़ोल–मजीरा गाँव में

पच्चीस साल पहिले हमहूँ एगो कविता लिखले रहनी जवन बाद में हमरा किताब चलनी में पानी में संकलित भइल–

रंगवा के एक दिन, खुनवा के सब दिन
होली होला चारदीवारी में
आ भाई के भाई भोंकेला खंजर
सोचीं ई कवना लाचारी में

त सवाल आ समस्या त बड़ले बा. अब जबाब भा समाधान केहू चाँद पर से आ के त दी ना. हमनिए के सब ठीक करे के बा. एह से हम इहे कहब कि होली होखे बाकिर खून के ना, रंग के.

रूस आ यूक्रेन के बीच जवन खून के होली होता उ बंद होखे के चाहीं.

अहंकार, ऊंच–नीच, जाति–पात, बड़का–छोटका के देवाल ढाह के, सियासत के खोल से बहरी निकल के, झूठो के मर्यादा के बान्ह तूर के, मस्ती में डूब के, मुक्त कंठ से, दमदार स्वर में...आईं एक साथे गावल जाये – जोगीरा सारा रा रा रा रा रा. आईं हो. लिका जरावल जाय. ओह में गोंइठा, चइली, चिपरी, सिक्का, हरदी, नरियर, गुड़ डालीं भा मत डालीं, आपन नफरत, इरिखा, कलंक, डर, डाह, हम–हमिता जरूर डालीं . नफरत के होलिका दहन होखे तबे सच्चा होली मनी.

अंत में अपना एगो दोहा से बात खतम करत बानी –

महुए पर उतरल सदा चाहे आदि या अंत
जिनिगी के बागान में उतरे कबो वसंत

❍ गौतम बुद्ध नगर, उ0प्र0

जबले सिवान फागुन आइल बा

डॉ एम डी सिंह

पड़त गोड़ ना सोझ ए भयवा
रंग चढ़ल देंह मन सउनाइल बा
छरकत जियरा ह एहर–ओहर
जबले सिवान फागुन आइल बा

चढ़ि गोहूं सरसों अगराल
रहिला से लतरी अझुराइल
सियरा उंखिया से झांकेला
खरहा रहरी ओर पराइल

सुन रे दीदी सुनू रे सखिया
कहति बयार आम बउराइल बा
छरकत जियरा ह एहर –ओहर
जबले सिवान फागुन आइल बा

भउजी देवरा प लसराइल
पहुना सरहज लखि लरुआइल
लइका सयान बूढ़ न बूझै
अइसन बा दिनवा महुआइल

हई देखा हो हरहंगी कक्का
मउगी मरद बने हठुआइल बा
छरकत जियरा ह एहर –ओहर
जबले सिवान फागुन आइल बा

गाल गुलाल अस लाल भइल
गोरिया क अंखिया जाल भइल
देंह गदरा गइल गदरा अस
जिभिया फरगुद्दी चाल भइल

सुना सुना हो हे प्रधान जी
छोकरन कऽ टोली छरिआइल बा
छरकत जियरा ह एहर– ओहर
जबले सिवान फागुन आइल बा

❑❑

❍ गाजीपुर, उ0प्र0

गीत

डॉ रजनी रंजन

1

जब से फागुन मचइलस शोर,
कान्हा भयो बावरा–2

बरन बरन के फूल खिले हैं,
भँवरा कलियन पर मचले हैं
नेह मन को करें है विभोर, कान्हा भयो बावरा–2

बसंती बयार करे छेड़खानी
धरती ओढ़े चुनरी धानी
कारी कोयल मचावे शोर, कान्हा भयो बावरा–2

गोपियन भरी भरी के पिचकारी
कान्हा के ऊपर दे मारी
राधा कनखी से देखे चितचोर,
कान्हा भयो बावरा–2

2

राधा रानी को मल के गुलाल,
कान्हा होली खेले–2
आज सारी नगरिया निहाल, कान्हा होली
खेले–2

राधा के मुख लाल भये हैं,
कान्हा का रंग उनकर चढ़े हैं
रंगरसिया बड़ी हरषाय
कान्हा होली खेले–2

भर पिचकारी राधा रानी,
मुरलीधर से करें छेड़खानी
नैन से नैन मिल मुसकाय,
कान्हा होली खेले–2

कान्हा खेले आँखमिचौली
छुप छुप खेले राधा से होली
आज गोपियन मन कुम्हलाय।
कान्हा होली खेले–2

❑❑

❍ घाटशिला, झारखंड

फगुनई बयार

सरोज सिंह

अबकी बसंत जइसे ही
सुगबुगाइल बा
उठे लागल बा हियरा में
फगुनई बयार
गाछ से झरत पतई
करे लागल बा
होलिका के तईयारी
टेसू नऊनिया नियर
कुल्हड़ में ....
घोर रहल बिया आलता
आमवा के माथ पे
बन्हा चुकल बा मऊर
गेना दुआर पे
सजा देले बा बनरवार
बेला–चमेली
इतरदान से
छिरिक देले बिया सुगंधी
कोयल,पपीहवा मगन
गा रहल बा
सत्कार में फाग
बंसवारी में बयार
मुग्ध मगन
छेड़ चूकल बा
बांसुरी के तान
फाग के ई राग में
मनवा के ढोल–मजीरा
जोह रहल बा
ऊ जोगी के
जे अबके फागुन गाई
''अहो जोगिनिया
अईनी हम छोड़ के
सहरिया के नवकरिया तोहरे कारन''
जोगीरा सा रा रा रा रा ! ❑❑

❍ लखनऊ, उ0प्र0

फागुन अँगडाइल

विमल कुमार

चढ़ते बसंत बहे फगुनी बयरिया
धरती धाधाली हरियर चोली में।
मनवा में प्रीति क फुला गइल फुलवा
पिया घरे जाली गोरी डोली में।

नाचेले जीव जन्तु झुमे बसवरिया
ठेके फगुनी हवा जब गतरिया में,
मधुर सुगंध उड़े मन में उमंग बढ़े
फल फूल ठठाए जब बधरिया में,
पिया से होई फागुन में मिलनवा
गावले कोइलिया मीठ बोली में।

मनवा में प्रीति के.....

चंदा के चंदनिया धरती प लोटे
मिलेला सुकून देख नजरिया में,
ओट से भोरे सुरूज जब झाँकले
चांदनी लजाले छुप चदरिया में,
रूप मनोहारी देख मन मुसकाये
बाले बचे घुमे लागे कोली में।

मनवा में प्रीति के.....

गाँव घरे आईं जी रस उठाईं जी
काहे मुअत बानीं जी नगरिया में,
कलह से दूर रहीं प्रीति में चूर रहीं
छोड़ीं जाइल कोरट कचहरिया में,
रंग अबीर के बरसे फुहेरिया
आके मन भिंजाई असो होली में।

मनवा में प्रीति के.....

❑❑

❍ जमुआँव, भोजपुर, बिहार

खेला

कमलेश के मिश्र

नदी पर ढेर दिन ले
पूल ना रहे
केहु कहे कि
नदी के पूल पसन ना ह
केहु कहे कि
पूल के इ नदी पसन नइखे
बूढ़वा बिधायक दूनू जाना के बात
गाँठ बान्ह लेले रहनी
कहीं कि, जवन नदी के पसन
जवन पूल के पसन,
उ पब्लिक के पसन
जवन पब्लिक के पसन
उ बिधायक के करतब्ब
बिधायक जी
छव गो चुनाव पार क गईनी
बिना पूल के . . . .

बाकि एकरा के खेला मत बुझीं
खेला त इ रहे कि
तीस साल में पूल
छव बेर बनल
छव बेर दहल
ना केहु बनत देखल
ना दहत
ना बनला ना दहला
के बात
केहु केहु से कहल

उ त
हाँ दे
कुछ फाइलन के आपस में
मतभेद हो गइल
पूल के कहानी
सरेआम हो गइल

❑❑

❍ गोपालगंज (बिहार)
फिल्ममेकर
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता

मोरा मनवाँ मदनवां चुरा ले गइल

हीरालाल द्विवेदी

अइसन सुंदर सगुनवां फगुनवां भइल।
मोरा मनवाँ मदनवां चुरा ले गइल।

बौरल आम फुलल बन लता,
तन के पता न मन के पता,
घन बसवरिया बंसुरिया बजल।।मोरा0

मयन अयन सब नयनन उपजल,
अंग अनंग रंग रस फइलल,
मन महुआ चित भुसहुले गइल।।मोरा0

दिग दिगंत बसंत बगराईल,
सरसों पुष्प धरा पर छाई ल,
कन्त बिना मन भइलें मइल।।मोरा0

द्वार द्वार रंगोली सजल बा,
रास रंग के धूम मचल बा,
रुनुक झुनुक झुन बाजलि पइल।।मोरा0

लाल पलास फूल बन फूलल,
मधुप समूह डाल पर झूलल,
भेजले न कउनो सन्देशवा छइल।।मोरा0

❑❑

❍बरहुआं, चकिया, चंदौली

भोजपुरी लोकवार्ता के अनन्य साधक डॉ अर्जुन दास केसरी

रवि प्रकाश 'सूरज'

पिछिला महीना एगो निजी काम से लखनऊ जाए के मवका लागल। लखनऊ से घरे आरा वापसी में बनारस हो के आवे के रहे। त मन में बिचार आइल कि काहे ना सोनभद्र के जतरा कइल जाव। कारन इ रहे कि आपन शोधविषय प काम करत घरी कुछ लोकगाथा सम्बन्धी किताबिन के जरूरत रहे, खोजत–खोजत पता लागल कि कुछ उपयोगी किताब लोकवार्ता शोध संस्थान, रोबर्ट्सगंज (अब सोनभद्र) से छपल बा। कुल्ह किताब भोजपुरी के पुरनिया साहित्यकार डॉ अर्जुनदास केसरी जी के लिखल रहे। ऑनलाइन आर्डर करे के सोचनी त वेबसाइट प कुछ तकनीकी समस्या बुझाइल। सम्पर्क वाला पेज प एगो व्हाट्सएप्प नम्बर दिहल रहे। उ नम्बर केसरी जी के सुपुत्र डॉ कविंद्र केसरी जी के रहे जे जेएनयू से आपन पढ़ाई पूरा करके फिनलैंड में प्रोफेसर बानी। त उ नम्बर प हम सवाल कइनी जे किताब कइसे मिली? ओने से जवाब मिलल कि साइट में कुछ समस्या बा आ एगो दोसर नम्बर भेजल गइल कि एह नम्बर प बात करब त किताब पोस्ट से घर तक आ जाइ। हम कविंद्र जी से औपचारिक परिचय भइल त उहाँ के कहनी कि रउआ शोध खातिर जरूरत बुझाता त हमार बाबूजी डॉ अर्जुनदास केसरी जी से उहाँ जा के मिल सकीला। हम कहनी जे अब हम किताब मंगाईब नाहीं बलुक ओहिजा जा के केसरी जी से मिलब आ किताब लेब। त मन के इ आस पूरा भइल ल खनऊ से घरे लवटे घरी। हम लखनऊ से चले के पहिले डॉ केसरी जी के पोता के नम्बर प कॉल कइनी त केसरिये जी से सीधे बात भइल आ उहाँ के कहनी कि रउआ आईं हम इंतजार करब।

लखनऊ जंक्शन–छपरा एक्सप्रेस समय से पहिले बनारस भोरे–भोरे चहुँपा देलस। वेटिंग रूम में स्नान आदि कर के दु–तीन आदिमी ले पूछनी कि सोनभद्र जाए के का रास्ता बा? पता चलल कैंट स्टेशन के ठीक सोझे सरकारी बस स्टैंड बा। बस मिलल, नया जगह जाए के रहे त खिड़की के सीट ध लेनी। बस ठीक समय प बनारस छोड़ देलस, कंडक्टर कहले कि 2 से 3 घन्टा में रउआ चहुँप जाइब। बनारस से बाहर निकल के थोड़े देर में बस रफ्तार ध चुकल रहे आ विंध्य पहाड़ आ प्राकृतिक सुंदरता के दरसन होखे लागल। आनन्द लेत समय कब बीतल पता ना चलल। कंडक्टर के आवाज से ध्यान टूटल आ हम चंडी तिराहा उतर गइनी। डॉ केसरी जी के घर के नम्बर प बात कइनी त केसरी जी के लइका फोन उठवनी आ कहनी कि रेक्सा ध के आ जाइ, नगिचे बा। डॉ अर्जुनदास केसरी जी के घर के ठीक सोझा रेक्सा उतार दिहल. स। पता चलल कि केसरी जी हमरे इंतजार में बानी आ आपन कमरा में आराम करतानी. कमरा में ढुकते सोझा देवाल प तीर–धनुस आ कई गो जनजातीय जिनगी के उपयोग में आवे वाला सामान टांगल रहे। चारों ओर के देवाल प जनजातीय संस्कृति से जुड़ल सामान, फोटो आ केसरी जी के मिलल सम्मान–पुरस्कार आदि लागल रहे। डॉ केसरी लेटल रहीं आ हमरा के देखते उठ के बईठ गइनी। 80 से उपर के दुबर–पातर देह, आँख प चस्मा बाकिर चेहरा प गजब के ओज आ चमक एह बात के सबूत रहे कि एह मनई के पूरा जिनगी कवनो साधना में बीतल बा। परनाम के बाद हम आपन परिचय दिहनी आ बातचीत के सिलसिला चालू भइल।

हमः परनाम, हम रवि दिल्ली से, रउवा से बात भइल रहे काल्ह।

डॉ केसरीः परनाम, परनाम जी राउर बहुत देर से इंतजार रहे हमरा बुझाईल जे रउवा ना आईब त राउर इंतजार कईला के बाद सभे नाश्ता कर लिहल आ हम आराम करतानी। कवनो किसिम के दिक्कत ना नु भईल?

हमः जी कवनो दिक्कत ना भईल, राउर आराम में हमरा वजह से परेशानी भईल त हम माफी चाहब।

डॉ केसरीः ना ना हमार त इच्छा बा कि एहिजा पढ़े–लिखे वाला छात्र लोग आवत रहे आ हमार संग्रहालय–पुस्तकालय के लाभ उठावे।

(हम आपन परिचय दिहनी आ आवे के उद्देश्य बतवनी)

हमः राउर कमरा बहुत अद्भुत बा कई गो जनजातीय

संस्कृति के निसानी हम देख रहल बानी.

डॉ केसरीः इ सब हमार निजी संग्रह ह जवन कई साल के मेहनत से मिलल बा. हम आपन पूरा जिनगी विन्ध्य के जनजातीय संस्कृति आ भोजपुरी लोकवार्ता प काम कईले बानी।

हमः जी, राउर 'लोरिकायन' आ 'बिजयमल' के संकलन भोजपुरी साहित्य के अद्‌भुत थाती ह। बाकिर राउर जनजातीय संस्कृति वाला काम से हम अनभिग्य बानी. कुछ बताईं।

डॉ केसरीः हमार जनम बहुत कठिन परिस्थिति में सोनभद्र जिला के भवानीगाँव में 1939 में एगो शिक्षक परिवार में भईल. किशोरावस्था अईसन क्षेत्र में बीतल जहंवा अहीर आ आदिवासी लोगन के संख्या जादे रहे. बिरहा, लोरिकी, बिजयमल गांवे–गांवे गवात आरहे. कई गो भोजपुरी लोकगाथा सुने के मिलल. आदिवासी लोगन के अभाव के जिनगी देखनीं. तबे से भोजपुरी लोकगाथा आ जनजातीय संस्कृति प काम करे के प्रेरणा मिलल. भोजपुरी लोकगाथा के लावे जनजातीय संस्कृति प हमार कई गो किताब बा।

हमः लेखन के लावे रवुआ शिक्षण कार्य से जुड़ल बानी, का अनुभव रहल बा?

डॉ केसरीः हमार पीजी गोरखपुर विश्वविद्यालय आ पीएचडी काशी विद्यापीठ से भईल बा। शिक्षण कार्य त हमरा विरासत में मिलल बादृ 1960–65 तक संस्कृत महाविद्यालय, रोबर्ट्सगंज आ फेर 1965–71 तक रेलवे इस्कूल, चोपन में अध्यापन कईनी– 1971 में नोकरी से इस्तीफा दे के रोबर्ट्सगंज में आदर्श अन्तर कॉलेज के स्थापना कईनी आ 2002 तक प्रधानाचार्य के रूप में कार्य अनवरत कईनी– 1995 में हमरा राष्ट्रिय शिक्षक पुरस्कार मिलल रहे।

हमः अध्यापन कार्य के संगे लेखन कार्य के सामंजस्य कइसे रहल?

डॉ केसरीः लिखे के त शवख किशोरावस्था से रहे– 1971 में सरकारी नोकरी से इस्तीफा के बादो आलेख आदि छपत रहे जेकरा से कुछ आय हो जात रहेदृ 1976 मने हम 'लोकवार्ता शोध संस्थान' के स्थापना कईनी आ 1977 में 'खरवार जनजाति का उद्‌भव और विकास' किताब छप के आ गईल. पहिला आदिवासी बाल कथा संग्रह 'एगो रहन राजा' (भोजपुरी) 1979 में छपल आ 1980 में 'लोरिकायन' महाकाव्य छप के आईल. 'लोरिकायन' प पुरस्कारों मिलल. एकर अलावे हम पत्रकारिता भी कईले बानीदृ 1985 में हम 'लोकवार्ता शोध पत्रिका' के प्रकाशन शुरू कईनी जवन आज ले चल रहल बा. त कहे के मतलब कि शिक्षण, पत्रकारिता आ लेख सब संगे–संगे चलत रहे।

❑❑

(लेखक मैथिली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार के सदस्य बानी.)

बने खातिर नोकर

योगेन्द्र शर्मा 'योगी'

पहिन के कुरता अनपढ़ देखा
मार तानै ठोकर
हम एम ए कइ के भीड़ लगाईं
बने खातिर नोकर।

जे देखि के पन्ना भाषन पढ़ै
लूर न बाटै बोलै के
उनके आगे तबो जमाना
समझै हमके जोकर।

उनकर भाव लगै मैदा जस
मोर भाव जस चोकर
उ मुख्य पृष्ठ अखबार पे आवै
हम घरहीं में लोफर।

उहो बतावत अर्थनीति बा
जेकरे चिल्लर गिनै न आवै
मार कुंडली बईठल बा के
रहल खजाना केकर।

कोई खातिर हाय बिधाता
सम्मै नीयम इहा बनल हव
बिन डिगरी उ सड़क मन्तरी
ऊँच खाल हम ब्रेकर।

पढ़ लिख के हम धक्का खाई
ओहैं घोराईं बाऊ माई
उ सागर उफनात देखालैं
हम गड़ही पनछोछर।

झण्डा ढोई नारा देहीं
कइली करम का औप्पर रोई
ओहर खद्दर वक्त निखारै
मोर समइया ओछर।

हे भारत कै लोकतंत्र
परनाम मोर सिवकार करा
''योगी'' साध अधूरा बाटे
लागी ला कुलगोबर।

हम एम ए कइ के भीड़ लगाईं
बने खातिर नोकर।।

❑❑

❍ **भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)**

फगुआ में सभ केहू लगुआ

कनक किशोर

सभे जानता अगुआ आ लगुआ के पूछ सगरो होला।ई दूनो प्राणी खातिर अँगना आ दुआर के संगे पड़ोसियो के दरवाजा खुलल रहेला। मरद–मेहरारू, का बुढ़ का जवान, अउर तऽ छोड़ी लइकनो अपना हिसाब से ना पीछे रहे छेड़े में ई लोग के।ई अलग बात बा कि एगो के काम निकल गइला पर रेंगनी पर सुतावल जाला त दूसरका के घामा में।समय के साथे थोड़ बहुत बदलाव आइल बा बाकिर अभियो चानी–चानी बा दूनो लोग के। सांच पूछीं त ई दूनो प्रजाति के माँग एक समान समाज में बनल रहेला भले समाज आ घरे के सेन्सेक्स कतनो गीर जाय। सेन्सेक्स बढ गइला प त पूछी मत। अगुअई पहिले मरद के जिम्मे रहे आ एह काम में विसेषज्ञता आ मोनोपोली मरदे के रहे पर आज आधा आबादी एहू काम में कहां पिछे रहल। अइसे ई लभ मैरेज आ लीभ इन रिलेशनशिप अगुअई के मौके नइखे देत एह से अरेंज मैरेज के बाजार के शेयर धड़ले से चीतान हो गइल बा जेकरा से अगुआ आ परिवार दूनो के चूना लागत बा। बाकिर शेयर बाजार लेखा अगुआ समय के ताक में रहता आ मौका मिलते दूनो ओरि से मोट कमिसन खाके ढ़कारतो नइखे। ओकरे देख के कतने कुंआर आपन सादी डॉट कॉम लैपटॉप पर चला रहल बाड़े। एक बात पक्का बा अगुअई के पूछ हरदम रहल बा,आजो बा, काल्हू रही। हाले में सादी डॉट काम से परेसान कृष्णदेव बाबू एगो अखिल भारतीय अगुआ महासंघ बनाके खुद महासचिव आ पत्नी के अध्यक्ष बनवले ह। हमरो के संरक्षक बना देले बाड़े। कहत रहन मोदी आ योगी के सरकार हमनी के दुख ना बूझी फेर से लालू भइया के ले आवे के बा। परिवार बढ़ी तब नूं हमनियो के चानी–चानी। अपना संविधान में महासंघ एह बात के रखले बा कि ऐकर सदस्य लोग घोषित करी कि लगावे बजावे के हमार दस बरस के अनुभव बा आ बेइज्जती होखला के कवनो असर हमार व्यक्तित्व पर ना पड़े। महा –संघ ऐकर आसवासन देले बा कि बर बधू पक्ष अगर कवनो सदस्य के बेइज्जती करी त संघ उनका आ उनका संबंधियन में भविष्य में शादी काटे के हर संभव प्रयास करी आ जरूरत पड़ी धारना प्रदर्शन खातिर रोड पर उतरी। महासचिव संघ के भविष्य देखत एह साल एनाउंस कइले ह कि अगिला लोक सभा के चुन. ाव में हम मोदी जी के खिलाफ लड़ब। आपन घर घर तक पहुंच पर भरोसा बा कि महासंघ सरकार नाहियो बनवलस त किंग मेकर के रूप में उभर के आई।

अब देखीं अगुअन के चानी–चानी सब दिन रही तनि लगुअन के बात क लेल जाव। अइसे त जानते बानीं फगुआ में सभे लगुआ होला। होली में बुढ़, जवान, लइकन के रंग, अबीर आ भंग के अलावा कुछ ना लउके। ओह प सामने लगुआ पड़ जाये त का कहे के। कुछ अधिकार से कुछ होली के बहाने लगुआ के आपन क्षेत्र अतिक्रमण के अधिकार होला। कवनो कारण से लगुआ बुरा मान जाई त गारिये नूं दी ऊ कवनो सटे के चीज ह। अइसे त रउवा जानते बानीं लगुअन के विभिन्न प्रजातियन के जइसे ननद, भउजाई, साला, सरहज, ननदोसी, पाहुन, साली आदि। अब कहब कि घरवाली के काहे छोड़ देनीं।अइसे ऊपर लिखित प्रजाति में ऊ विभिन्न रूप में उपस्थित बाड़ी बाकिर अपने हाथे आपन बकरी के कइसे छूटा चरे खातिर छोड़ दीं। अइसन बुड़बक ना हई अइसे रउवा जे बूझीं। अइसे हमार अनुभव बा आपन बकरी के आँखि के सोझा हरियरी खातिर छोड़ीं ना त खेत वाला कसाई से कम ना होले।

आज लगुअन के अनघा श्रेणी सामने आ गइल बा, जइसे राजनीतिक लगुआ, साहित्यक लगुआ, ऑन लाइन लगुआ, भगुआ लगुआ, आध्यात्मिक लगुआ आदि। राजनीतिक लगुआ हर नेता के पास मिल जाला लोग।साँच पूछीं तऽ ऊ लोग नेता के पार्टी के लगुआ बन जाला चाहे मरद होखे बा मेहरारू। ओकर जिनिगी ओतने दिन के होला जतना दिन ओह नेता के होला बाकिर चालाक लगुआ नेता के कमजोर पड़त देख पट दे दोसरा के पकड़ आपन स्थिति कायम रखेला। साहित्य में ई रोग पहिले से रहे बाकिर अब कैंसर जस फइल गइल बा।साँच पूछी त ई बगलिया गिरोहबाजी से अधिका खतरनाक बा साहित्य खातिर।ई लगुआ रखे के बिमारी अइसन ह कि लगुआ के आगे साहित्यकार के कुछ नजर ना आवे।ओकर नजर लगुआ पर होला साहित्य पर ना।ओकरे नतीजा बा सम्मान के घंटी गुणवत्ता के ना देके लगुआ के गरदन में बँधाता काहे कि ई उहे गरदन ह जे दिन रात हँ में हँ मिलावत जब चहनीं माथे मुकुट बँधले बा,ताली बजवले बा। ऑनलाइन लगुआ के चक्कर बड़ा खराब ह। ऊ

मेल ह कि फिमेल कबो– कबो ना बुझाय। डी पी से आदमी ठगात रहे,अब त लौक्ड प्रोफाइल। ऊपर से चेटिंग बझा देता। सच्चाई सामने आवत लूटा गइला के दरद अइसन कि का से कहूं दिल के बतिया पर रूकता।भगुआ लगुआ आपन काम निकाल अँगुठा देखा भाग जाला।ई प्रजाति के शिकार सब तरह के लोग होला। आध्यात्मिक लगुआ हर गुरू संत के साथे होला।ऐकरा बिना गुरू के बाजार भाव ना भागे बाकिर खतरो ओतने रहला ओह शिष्य के गुरु ज्ञान पर ध्यान कम गुरु दक्षिणा पर अधिक रहेला। नतीजा कबो खुद जान से जाला त कबो गुरु के जान लेला।इहे लेन देन के चक्कर में चौरासी के चक्कर ना छूटे।ऐकरा अलावे एगो होला पर्सनल लगुआ,जे व्यक्ति, क्षेत्र, संस्कृति के अनुसार बदलला।एह पर हम चुप रहब।कारण दूगो बा – एक त पर्सनल दूसरा सेंसर बोर्ड।

फगुआ, अगुआ,लगुआ एगो रोगो हऽ।लागे नाही छूटे राम।ना चिन्हे आपन,ना देखे उमिर।ना देखे जगह,ना देखे संबंध।बाकिर तीनों नीक ह, समाज में आ पइसल बुराई के संगत में तीनों बिगड़ल जाता, दोषी हमनियो के।बचावे के बा तीनों के संभाल के। फगुआ संस्कृति ह, अगुआ संबंध कारक आ लगुआ संबंध।ई तीनों ना रही त समाज कहाँ रही।हम त कहब कि

फगुआ, अगुआ, लगुआ ह, तीन प्रेम के बीज
तीनों के संचय करीं, मिलजुल आज अजीज।

❑❑

○ राँची (झारखंड)

गीत

सरोज त्यागी

रंग बरसै फगुनवा में रंग बरसै
रंग बरसै फगुनवा में रंग बरसै।।

अंगना में बरसै अटारी पे बरसै
खेत खरिहाने कियारी में बरसै
सगरों सिवनवां में रंग बरसै
रंग बरसै फगुनवा में रंग बरसै।।

हिल मिल घरवां से निकलीं गुजरिया
हथवा में लेके भरल पिचकरिया
छनकै पयलिया कंगन खनकै
रंग बरसै फगुनवा में रंग बरसै

पोतै गुलाल केहू केहू गावै फगुआ
लइकन के टोली में बुढ़वा बा अगुआ
देख देख बूढ़ा बहुत बिहसैं
रंग बरसै फगुनवा में रंग बरसै ।।

लहुरी ननदिया लखै चोरी चोरी
देवरा न मानै करै जोरा जोरी
आए न बलमा नयन तरसै
रंग बरसै फगुनवा में रंग बरसै ।।

❑❑

○ गाजियाबाद ,उ0 प्र0

जइसे यूक्रेन अकेल बा

चंद्रेश्वर

जइसे यूक्रेन लड़त बा अकेल
जइसे हमला करत रूस बा अकेल
ओइसहीं एहघरी
हर आदमी बा लड़त
आपन जिनिगी के जुद्ध
अकेलहीं
अपना देस के भीतर
अपना देस के बाहर
आपन जाति,बरन,धरम
मजहब चाहे नस्ल के
खोल में
भा ओकरा बाहर

ई दुनिया रोज बदल रहल बिया
बाकिर उलट दिसा में

अब त मिलत बाड़े सन
एक से बढ़ि के एक कसाई
डेगे–डेग प
लिहले हाथ में
चोख चाकू
भा दलाल जे
कहल जा रहल बाड़े
आपन–आपन देस में
सच्चा लाल

पहिले टूटत रहे दिल
कबो–कबो
अब त एक्के दिन में
टूटत बा ऊ
हजार बार
खो रहल बाड़े चमक
सितारा सब

सब जगह उड़ रहल बा गरदा
धरती ले आसमान तक
धुँआ–धुँआ भइल बा
सगरो

लागत बा कि फाटि जाई
कान के चदरा
हुँआ–हुँआ भइल बा
पँजरो

जेन ले जा दीठि
देखाई परि जइहें
केवनो ना केवनो
तीसमार खाँ

पनिगर केहवाँ मिलिहें
जब पानिए दुल्हम बा
सगरो दुनिया–जहाँन में

जइसे यूक्रेन अकेल बा
ओइसहीं अकेल बानी हमहूँ
एह नीच समइया में !

❑❑

❍ ज्ञानविहार कॉलोनी, कमता, लखनऊ

हिया के दरद

मधुबाला सिन्हा

बखरी के कोठरी में
जरत राखी दियना कि
करी कोना घर के
अजोर रे विदेशिया
निंदिया न आवे मोहे
बिजुरी डरावे मोहे
कब तलक हियरा
डहकावे रे विदेशिया
सपना के अंगना में
किरीची गड़ेला पिया
भरी भरी अँखिया
बहेला रे विदेशिया
केहू खोजे सीमा पर
केहू त बधार में
हमहुँ खोजीले दूर
बसेला रे विदेशिया
अँगना में माई खोजे
दुअरा बहिनिया
गोदिया के बलका
पुकारे रे विदेशिया
कब उगे शुकवा
त कब छुपे चनवा
तारवा के टिमटिम
सतावे रे विदेशिया
अब घर आजा पिया
विरहिनी भइल हिया
लोगवा कहेला भइनी
हम पगली रे विदेशिया।।

❍ मोतीहारी, पूर्वी चंपारण, बिहार

मनवा फगुनाइल

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

सइयाँ बड़ अभागा अब्बों
बुझे बतिया कब्बों–कब्बों
सुधि के भंवरिया अगराइल बा
कि मनवा फगुनाइल बा हो।

बाजै चुड़ी खनके कँगना
पिया अवता एही अँगना
फगुनी सनेहिया उमगाइल बा
कि मनवा फगुनाइल बा हो।

फागुन ऋतु बड़ अनमोल
कोइलि बोलेले कुबोल
कलपी सजनियाँ कोहनाइल बा
कि मनवा फगुनाइल बा हो।

सुनती पियवा तोरी बोल
मनवा जाइत बरबस डोल
बिरहिन अंजोरिया अझुराइल बा
कि मनवा फगुनाइल बा हो।

तहरी सूरत गुलरी क फूल
काहें गइला पियऊ भूल
सुधि आ सपनवाँ छितिराइल बा
कि मनवा फगुनाइल बा हो।

❑❑

❍ गाजियाबाद, उ0 प्र0

बसंत बेमार न होखे

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

सभे कहता बसंत आ गइल बा। इहे साँच ह। साँचो बसंत आ गइल बा। उ त अपना नियत समय पर हरे बरिस आवेला। बसंत ढेर कुछ लेके आवेला। ओकर झोरी बहुते धनी–मानी ह, ओकर आइल बहुत सुखद। रउवा सभे जानते होखब ऋतुराज के भेंट क सूची लमहर ह, जेकर बड़ आ आकर्षित करे वाला चित्र साहित्य में जन–सुलभ बा। से भइया! जेकरा खातिर जवन किछु लियावत होखी, ओकरा त पते होखी, हम का कहीं? रउवा त जानते बानी, ई जमाना त पूरे पूरा व्यक्तिवादी ह, नारा भलहीं समाजवाद के होखे, सर्वोदय के होखे भा साम्यवाद के होखे। कहे खातिर त जवन मन होखे कह लीं बाकि साँच त इहवाँ इहे बा कि– इहवाँ सभे आपन–आपन करत देखाता। त का सगरी जमाना में एगो हमहीं बावला बानी? ना। अउर संघतिया लो। हमरा प त साँचो बीत रहल बा। लागत बा कि ''अबकी बसंत के अवाई में सखि रही सही ताहू के जवाई है।'' एह से कि ई हमरा विद्यार्थी जीवन के अंतिम बसंत बा। आगु के गरमी मने बेकारी के ताप सोझवें लउकता, ओकरा त बतावे के जरूरते नइखे।

वइसे त ई हम आपन बात कह रहल बानी। एह में भकुआये के कवनों बात नइखे। बाकि रउवा के कुल्हि बातिन में भकुआये के आदत होखे, त हमार का अवकात, भगवानों कुछ ना क सकेलें। हाँ त संघतिया लो! एगो लमहर बाउर बाति बा, जबसे हम होस संभरले बानी, हर बसंत के अवाई में इहवाँ आपन तवाही हो रहल बा। मने हमरा जिनगी में जब जब बसंत आइल, हम जरूर बेमार पड़ल बानी। त का बसंत हमरा खातिर बेमारी के उपहार लेके आवेला? दुर्भाग्य !लमहर दुर्भाग्य। 'हत विधि लसितानाम हि विचित्रो विपाकः' 'इहे नु?' इहे नु बूझत होखेम रउवा? इहे बूझ सकीले। बाकि हम रउवा के अइसन कुछ बूझला से सहमत नइखी। अइसन होइयो ना सकेला। एह खातिर कि हम नवहों बानी आ साहित्यकारो बानी। एगो नवहा मनई का ऊपरि कतनों बीपत घहरा जाव, उ अपना के दुर्भाग्यसाली कबों ना बूझ सकेला। काहें से कि विरोधे कइल त ओकरा नवहा भइला के सभेले लमहर पहिचान बा। ना मनला के लमहर अरथ होला, बदलाव खातिर बिसवास आ गम्हिराह आस्था। अउर साहित्यकार ? साहित्यकार के जनम कुंडली में दुर्भाग्य खातिर अलगा से कवनों जगह ना होले। ओकरा खातिर त सभेले लमहर दुर्भाग्य ओकर साहित्यकार होखल बा, जवना के उ अपना जनमे से लेके आवेला। फेर अलगा से कवनों दुर्भाग्य के ओकरा खातिर महातिम नइखे। राउर सोच का मोताबिक जवन दुर्भाग्य बाटे, उ साहित्यकार सोच का घेरा में अवते सोभाग में बदल जाला, हाँ ओह घेरा के सोभाविक गुन बाटे।

बहरहाल हमरा के बोखार आ रहल बा। ओकर ताप चढ़ि रहल बा, मन बेयाकुल बा। रउवा बहकेम जनि हमरा बोखार अउर मन के अकुलहट के रूप–सरूप 'गीत गोविंद' के 'अमंद कंदप ज्वर जनित चिंता कुलतया' लेखा नइखे। हमार मन चिंतित अउर आकुल बाटे ओकरा पाछे कारन आजु के दिन ह। आजु बसंत पंचमी ह, एह दिन के हमरा ला खास महातिम बाटे,– पहिलका त ई कि बसंत के अवनई के दिन ह, दोसरा सरस्वती पूजा क अउर तीसरा त ई बा कि हम जवना शिक्षा संस्थान के छात्र बानी, ओकर स्थापना दिवसो अजुवे बा। अउर हमरा बोखार चढ़ल बा, इहे चिंता बा।

हम विश्वविद्यालय न जा पायेम। ई त पक्का बा। मन कचोटत बा। बाकिर करीं त का ? आजु हमरा कुछों ना भेंटाई। रंग–रंग के फूलन के रस से सउनाइल ओकरा पराग से हुलसित आ ओकरा महक से मह–मह गमकत महामना के तपोभूमि के सुघर मनहर रसता पर अपने बसंत के संघतियन का संगे हँसत–विहँसत घूमला के मउज आ कतने सपनात अँखियन के निहरला के सुख अउर अनागत के मौन से मुखरित होखे वाले सुर संगीत आ ओसे भेंटाये वाली खुसी हमरा ना भेंटाई। हमरा मन का भितरि न भेंटाये वाली चिजुइयन का ताप हमरा देहि के तंवक के अउर बढ़ा देता। मन उदास हो गइल बा। अचके हमार आँखि माई सरस्वती के चित्र का ओर उठि के ठहर जाता। हम अपना सगरी आस्था के संगे अपने मौन पूजा में आपन माथ नवा देतानी।

तबे हमरा बगल के एगो डागदर साहेब हमरा लगे हमार हाल–चाल लेवे खाति अइनी। बड़ नेक मनई अउर साहित्य रसिक हईं डागदर साहेब। ना त इहवाँ कहाँ केकरो फुरसत बाटे मुअतो मनईन का देखे खातिर। हाँ, इहवाँ त

सरधांजलि के मोका जुटावल बड़ बाति बा। खैर! उ हमार नाड़ी देखि के आँखि में घूरत हमरा कान्ही के पकड़ि के झकझोर दिहलें। ''का इयार, रोगी बनल बाड़ै''। बोखार त बहुते कम बा। उठै चलैबहरा चलै। पड़ल–पड़ल अउर रोग बढ़ेला। 'हमरा जरिका सा हँसी बरल'–डागदर लोगिन के हरमेसा रोग कमे लउकेला, अगर फीस के अलम न होखे त। बाकिर हम बेगर हँसले उठि गइनी अउर उनुका संगे बहरा निकरि के उनुका छोटी–चुकी लान में आ गइनी सन। उहवाँ देखतानी कि गुलाबी घाम में गेना अउर गुलाब क फूल दिल खोलिके हँसत बाड़े सन। समथर हरियर दूबि पर तनिका देर बइठ के चारो ओरी देखल बड़ नीक लागेला। कतों दूर रसगर डाढ़ि पर बइठल कोइल के कुहुंक सुनि के हिया के तार झनक उठल। अचके हमरा तवियत कुछ हलुक लागे लागल। लागता कि हमरा अपना बेमार होखला के रहस्य भेंटा गइल। असल में बसंत के बेगर विज्ञापन के आवन का संगही प्रकृति के वैभव क हुलास धरा–धाम पर फूट के छींटा जाला, ओकरा से मनई के चेतना क पटरी नाही बइठ पावत। अधनंग लइकन के पथराइल अउर किचराइल आँखिन में अउर गेना के सुघर आँखिन में जवन बहरा आ भीतरि के दूरी ह, उ मनईन के चेतना के बेमार करे खातिर बहुत ढेर बाटे। एही से अलगा–अलगा तंवक के अंतर केहुओ के चेतना के रोगी बना देवे त कवनों अचरज नइखे।

X X X X X

हाँ त रउवा सभे जानते होखेम कि ए बरिस बसंत के अगवानी करे खातिर अगराइल माई सरस्वती के पूजा में संगीत के सरिता बहावे खातिर हुलसित छात्रन के जलूस पर विद्या के रजधानी बनारस में पुलिस जानवरन लेखा लाठी भंजलस। बसंत के हुलास भरल परब पर बनारस तंवकत बाटे। एह उन्माद भरल मउसम में इहवाँ के हावा खराब भ गइल बाटे। अखबार जानवरन लेखा व्योहार आ राछछन लेखा अत्याचार के सूचना अउर एकरा विरोध में कहल गइल बातिन से पटल बाटे। अमानवीयता, बर्बरता, हिंसा, आगजनी, पथराव, बमबाजी जइसन सबद से अखबार के कोना–अंतरा तक ले पटाइल बा। अखबार में एगो चित्रो बा। ओह चित्रवा में एगो आई पी एस अधिकारी कुलपति निवास के आगु छात्रन के जलूस के तितर–बितर करे खातिर एगो छात्र नेता के गोस्सा में पीटत देखात बाड़ें। कमाल बाटे ! राजभगति के खातिर नीमन चिजुइयन के बाउर देखउवल हो रहल बाटे। धन बाटे ई देस । धन बा लोग। एह कुल्हि घटनवन आ दुर्घटनवन के तांडव जी भर देखला का बादो हमरा देस के सभ्य, शिष्ट आ कुलीन लो आई ए एस आ आई पी एस के बुद्धि के जोगता के लमहर उपलब्धि मानेला लो अउर अपना सुघर सुशील आ गुनगर लइकियन खातिर अइसने जोग दुलहा खोजे में बउड़ियात फिरेला। अइसना में भगवाने नु संभरिहें नाही त अउर के मालिक बाटे।

हमार संघतिया लो आइल बाड़ें। हम देखतानी कि ओहनी लोगन के आँखिन में डर अउर गोस्सा बा अउर एगो अनबूझल मगर लचार आगि बा। उ लो सगरी बाति बता रहल बा, पुलिसिया बर्बरता के सिकार भइल छात्रन के दुख भरल कहनी। उ लो एकरा देखलहूँ बा आ भोगलहूँ बा।

उ लो अपना आँखि देखले बा–एगो खाली हाथ अकेल छात्र के बीस–बीस वहसियन के लात–जूता आ लाठी से पीटत। फेर ओही अधमूअल नवहा के थाना के मयदान में अपना अहम के तोस देवे खाति ओकरा अचेत सरीर पर गुसियात आ थकला का बाद ओकरा आँखि में वायरलेस के तार घुसेरत आ कान में पानी भरिके पाइप से फूँक मारत। अउर ओकरा गुप्तांगन पर आपन मरदानगी देखावत, उ लो देखले बा। एह कुल्हि बाउर हरकतन के गवाह बा। फेर आँखि में आगि काहें ना होखी? एह कुल्हि सगरे घटना का सुनला आ महसूसला का बाद, हमरा लागता कि हमार बोखार पराय गइल,बाकिर बोखारो से बरियार कवनो दोसर गरमी सगरे सरीर पर सवार हो रहल बा। हम इहो जानतानी कि ई गरमी बड़ बाउर होखेले। भलही रउवा के सोभाविक लागे बाकिर हम साँच कहतानी कि ई कुल्हि सुनला का बाद आ रोंआ–रोंआ से सोच के गुजरला का बाद एगो जरावे वाली गरमी से निकरत आगि भभक उठल बाकि ई कुल्हि बितलकी घटनवन में हमरा कुछो असोभाविक जरिको ना लागल।

सोतन्त्रता का बादो जब सगरे तंत्र उहे बा, नसल उहे बा, चरित्तर उहे बा, त खाली रंग बदलला से का फरक पड़ी। लोगन के गइला से का फरक पड़े वाला बा। सासन के सुरक्षा अउर ओकरा विरोध के मेटावल जवना देस के पुलिस अउर परसासन के असली चरित्तर होखे, उहाँ जनता के साथे कुछो भइल जरिकों असोभाविक नइखे। ओह लोगन खातिर त बस सासने आदर्श बा, रक्षा करे जोग बा, बाचल–खुचल सभे कुछ दबावे आ मेटावे जोग बा। अइसन हाल में सरकारी मोलाजिमन का सरीर में आदमखोर आ बहसी अतमा ना रही, त के रही? आँखि में क्रूर, खून के पियासल, भकसावन आ सभे कुछ जरावे वाली आग न भेंटाई, त का भेंटाई? हमरा खाति पुलिस से मोहभंग के ई समय नइखे काहें से कि हमरा कबों पुलिस से मोह रहबे ना कइल। एह समय में सुरक्षाबलन के जइसन राष्ट्रीय चरित्र बनल बाटे ओहमें जरिकों करतब करे क आसा राखल मुरुखई आ पागलपन के छोड़ि अउर कुछो नइखे। हाँ, जहवाँ के अंगरक्षक अपनही

मालिक के अंगन के अपनही हाथ के गोली से छलनी कइल ऐतिहासिक बिसवास के महातिम क ऐतहासिक पतन बन चुकल होखे अउर जहवाँ के सुरक्षाबल कानून अउर बेवस्था से विद्रोह क के भागल विद्रोहियन के अइला का डरे अपने ठिकाने के निसानन पर माटी पोत के आपन पहिचान मेटावे क परयास क चुकल होखें, अइसना से कानून अउर बेवस्था के सुरक्षा क भरोस रा खल कवनो विदवान मनई के बुद्धि क दिवालियापने नु कहल जाई। ई कुल्हि बाति हम एह खातिर कह रहल बानी कि एह सगरी घटनन के कारन में कानून अउर बेवस्था के बाति कहल जा रहल बा। हमरा त आजु ले ई नइखे बुझाइल कि एगो मनई के मन के भाव कइसे कानून अउर बेवस्था हो जाला अउर हजारन मनईन के मन के भाव कानून अउर बेवस्था के विरोधी। ई कुल्हि दुरयोग जरूरी जोगता का कमी के चलते कुछ लोगन के महिमा मंडन अउर अधिकारन के केन्द्रीकरन के बाउर परिनाम बाटे। जइसे–जइसे समाज के चलावे क जिमवारी मनई के मन पर होत जाई, सांती, अपनइत आ दया–धरम पर खतरा बढ़त जाई। ई खतरा राष्ट्रीय चरित्रहीन चरित्तर के लगातार बढ़न्ति से अउर मजगूत होत लउक रहल बा।

एह चरित्तर के गिरला के परिनाम के सिकार थोर–ढेर सभे भइल बा, बाकि सभे ले बेसी नोकसान अध्यापक अउर छात्रन के भइल बाटे। आजु के अध्यापक बेगर नोकरी अउर पगार पर पड़त आफत–बीपत के अलगा बोलल आपन तवहीन बुझेला। अउर छात्रन खातिर लोगन का मन में आदर कम हो गइल बाटे जवना का चलते ओकरे अस्मिता के संकट के देखला का बादो लोगिन के समुचित भावनो वोह लोगिन से जुड़े में लजात देखा रहल बा। अउर बुद्धिजीवी लेखक त बहुते देर तक अइसन मसलन पर चुप्पी साधल आपन महिमा बूझे लागल बा। अब हम ई कइसे कहीं कि गियानी ले खक मूरख बाटे भा ओकर संवेदना मरि गइल बा। तबो कतों ना कतों त गड़बड़ी जरूर बाटे। ओह लोगिन के शंका बाटे कि रउवा सभे क संघर्ष बरियार नेंव पर ठाढ़ नइखे भा रउवा सभे में लमहर संघर्ष के साहस के कमी का चलते बिचहीं में मोरचा छोड़ि देबि। अउर छात्र आंदोलनन के इतिहासो से कुछ अइसने बाति साबितो हो रहल बाटे। हाँ, अगर सरस्वती के मूरत कवनो हाल में टूट गइल रहित त अतना हो–हल्ला कि असमाने सिरे उठा लेइत लो, बाकिर जवना दिने सरस्वती के मानसी मूरत टूटल भा टूटे लागल रहे, त ओह दिन रउवा सभे मुहों खोलल उचित बूझलीं ? हम पूछत बानी कि सरस्वती के मानसी मूरत के तूरलस ? ओकर के जिमवार हवे ? हम पूछतानी कि शिक्षा संस्थानन के पुस्तकालय काहें ठूँठ हो गइलन सन ? परीछा में हरबा–हथियार के डर के उपजावल ? अपने लइकन के अउर चेलन (मानल लइकन) के परीछा में सभे ले जोग साबित करेला पसेना बहाके ओह लोगिन के आचार्य बनवावे में आपन ऊर्जा के खरचलस ? का उहवाँ माहटर आ छात्रन के इतर केहु अउर तीसर रहल बा ? नाही नु। त जब सरस्वती के मनवे टूट गइल, उ अपना घरहीं से अपमानित क के बहरिया दीहल गइनी, त उनुका सरीर उहो माटी के मूरत में का वोजन रहि गइल ? उनुकर बहियों टूटल एगो भरमें भर बा। जवना सरीर में पराने ना होखे, ओकर मोह त साँचो मोहे भर नु ह। जब परान हमनिये के घाहिल क के छोड़ दिहनी सन,त ओकरा सरीर के घाहिल करे वाला लोगिन के विरोध कइसे क सकतानी सन। दूनों के अपराध त बरोबरे नु भइल। दूनों बरोबरे पापी नु भइलें ? त हतिया के अपराध –पाप त भोगहीं के नु परी ? सरस्वती के मानसी मूरत के तूरे वाला छात्रन के अपने आराध्या के अपमान के दुख झेलहीं के नु परी।

बाकिर तबो ईयाद राखीं लोगिन कि ई कुल्हि दुख–दरद सहियो के सुरसती देवी के मान–मराजाद के बचावे के होखी। नाही, त देस के सुर बचबे ना करी। बुद्धि बाँझ हो जाई अउर समय ठहर जाई। बाकिर ना, आलस बसंत के बिरोधी हवे, सुरसती के बिरोधी हवे। एह घरी आलसे फइल रहल बा। लागता कि हमनी के सुरसती, हमनी के बानी, हमनी के देवी हमनी से रूस गइल बानी। हमरा त लागता कि बोखार हमरा के नइखे, बोखार त बसंते के भइल बा। एही बोखारे का चलते बसंत डेराइल–डेराइल, सुस्त आ मुरझाइल बाटे। एही से त आलस बढ़ता। एह आलस के तूरल, रूसल वाग्देवी के मनावल, खंडित भइल सुरसती के सचेत कइल बसंत के स्वस्थ होखला पर निरभर बा। ई कुल्हि बेमार बसंत में ना हो सकेला। त काहें ना हमनी के आपन पहिलका परयास बसंत के स्वास्थ्य खातिर कइल जाव। लमहर स्वास्थ्य लाभ खातिर। संगही हरमेसा चेतलों रहल जाव कि फिर कबों बसंत बेमार न होखे। बसंत बेमार न होखी त सुरसती चेतल रहिहें। सुरसती चेतल रहिहें त मन कुंठित ना होखी। आ मन ठीक रही त कुल्हिये ठीक रही। त काहें ना हमनी के विद्रोह, हमनी के संघर्ष बसंत बेमार न होखे, एही पर एकसुरिये लाग जाव।

❑❑

मूल रचना– बसंत बीमार न हो
मूल रचनाकार– डॉ उमेश प्रसाद सिंह
भोजपुरी भावानुवाद– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

माटी के पूत

राजकुमार सिंह

रामनाथ परमार अपना गांव के पुरानका धनिकहा रहले। बाकिर समाज में उनुकर बढ़िया छवि ना रहे. गरीब–गुरूबा के सतावे में उनका बड़ा आनंद आवे। उनुका मन में लालच कुटकुट के भरल रहे। ऊ हमेशा पराया माल आपन समझस। इहे कारण रहे कि अपना मेहरारू पर धियान ना देस। एगो बेटा के जन्म देला के बाद उनुकर मेहरारूल उमिर के तिसरका पड़ाव में सरग सिधार गइली। ओकरा बाद से फेरू दोसर बिआह ना कर सकलें, ताकि उ अपना दुलरूआ बेटा के सौतेली माई के डाह, घृणा आ कोध से बचा सकस। बाकिर बिना मेहरारू के उनुकर घर दुआर सरकारी चरवाहा विद्यालय नियर हो गइल रहे। केहूं तरे बेटा मुरारी के लिखा पढ़ा के गरेजुएट बनवलें।

अब राम नाथ चाहत रहलें कि बेटा के फौज में नोकरी हो जाइत त उनुकर दुख दूर हो जाइत। मुरारी के शादी–बिआह में भरपूर दहेज मिलीत। ऐसो आराम से बुढापा कट जाइत। ए से बेटा के कतहीं गलत राह पर ना चल जाव, ओकरा अचार–बेवहार पर पूरा ि खयाल राखस। मुरारी अपना हमउमिर संघंतियन के साथे खेले खातिर निकल जाव त ऊ दिन भर ओकर चरवाही करस। बांसवारी, मूंजवानी, शिशवानी, खरहूल आदि में झांकस फिरस। उ चाहस कि मुरारी गलत संगत में रहबो करे त ताड़ी–दारू, गांजा–भांग, बीड़ी सिगरेट, इयार–पियार आ छोकरीबाजी के लत से दूर रहो। बेटा के उमिर जइसे जइसे तार नियर उपर बढ़े लागल, उनुकर मन नोकरी ना मिलला से चिंता से भरे लाहल।

आखिर में एक दिन भगवान रामनाथ के मुराद पूरा कइले। कइसहूं खेत जमीन बेच के मुरारी के नोकरी फौज में दिला दिहलें। दानापुर में ट्रेनिंग के बाद मुरारी के पोस्टिंग चीन के सीमा डगलाम पर हो गइल। बाकिर मुरारी के मन नोकरी में ना लागे। उ बम, बारूद, गोला देखिए के डर जास। उ डगलाम सीमा पर तैनात हरदम अपना भाग पर झुंझलास रहस। उ सोचस रहस कि कातना जवान बिना सीमा पर लड़ले, रिटायर हो जालें। ओह लोग के जिनगी बिना लड़ाई के सवारथ हो गइल। बाकिर एगो उनुकर किस्मत बा सिर मुड़ावते ओला पडी गइल।

भारत चीन में गोलीबारी शुरू हो गइल. मुरारी तिसरका लाइन में एके–47 लेके खाड़ा रहलें. दुनू तरफ से बमबाजी आ गोली चलत रहे. कइगो जवान शहीद आ घायल हो गइल रहलें. उनुकर साहेब कैपटैन अजय जवानन के हौसला आ उत्साह बढ़ावत रहस. बाकिर मुरारी के उदास आ मुरझाइल चेहरा देख के ऊ मुरारी के पीठ ठोकले आ कहलें कि सीमा पर जवान के आगे बढ़े के चाही, पीठ दिखावे वालन पर कोर्ट मार्सल हो जाला. जवान पर देश के गुमन होला.

अतना नसीहत देला के बाद कैपटैन अजय आगे मोर्चा संभाले चल गइलें. ई बात सुनते मुरारी के तन आ मन दुनू बैठ गइल.अपना साहेब के आगा बढ़त देखके उ डर गइल आ बगल के एगो गड्ढ़ा में जाके लुका गइल. संजोग अइसन भइल कि एगो गोली साहेब के लागल. उ तिलमिला के पीछे हटले आ गड्ढा में लुकाइल मुरारी के ऊपर गिर पड़ले. थोड़का देर के बाद अजय निहसबद गिरले रहस. उ फेरू उठ ना पवलें.

ऐने मुरारी के देह पर साहेब के खून लगला से पूरा चेहरा रक्तरंजीत हो गइल रहे. मुरारी सोचे लागल कि रात के अन्हरिया में भागे के आच्छा मउका बाटे. सूचना पाके चिकित्सा दल पहुंचो, ओकरा पहिले इहां से रफ्फू चक्कर भइल जरूरी बा ना त जान ना बांची. ऊ गड्ढा से धीरे से बाहर निकलल आ अपना साहेब के छोड़के भाग

पड़वलस. मुरारी इहो ना देख पावल कि अजय जीअत बाड़ें कि मर गइलें. उ कइसहूं भाग के अपना गांवे चहुंप गइल। राहता में मुरारी के बरदी में देख के आ हाथ में एके–47 देख के केहूं टोक–टाक ना कइलस

मुरारी के सोझा देखके उनुकर बाबू जी अचकचा गइले। उनुकरा के देखते कहलें कि ए मुरारी भारत त जीत गइल बाटे हो। अब त सीमा पर तैनात जवान लोग के तमगा मिले के टाइम रलअस। फेरू काहे चल अइलह?

मुरारी कहलें कि तू चिंता मत कर. सब ठीक हो जाई। जब हमार खोज खबर होई त सेना हमरा के लापाता घोषित क दिही। ओकरा बाद तोहरा सरकारी अनुदान मिली। हम एह एके–47 के डकैतन के भाड़ा पर दे देब. एक रात के 50 हजार से कम ना मिली। हरे लागी ना फिटकिरी रंग चोखा हो जाई। देखते बानी कि कातना रिटायर बंदूक वाला लोग दिन में बैंक कर्मी आ रात में ...

बस कर ससुरा, बस कर.तें हमरा अरमान पर पानी फेर देले। बीचे में बात काट के रामनाथ बोललें।

अबही बाप–बेटा में गरमा गरमा बहस होते रहे कि उनुका दुआरी पर स्थानीय पुलिस आ फौजी जोंगा आके लागल। जोंगा से उतर के सेना के जवान मुरारी के धर दबोचलें। जोंगा धुरा उड़ावत रामनाथ परमार के आंखि के सोझा से दूर हो गइल। ❑❑

❍ ऊपर राजबाड़ी रोड, मकान नंबर–1
नियर–झरिया थाना, झरिया, धनबाद

बेना

सविता गुप्ता

बीना देवी नयकी कनीया तनु के काल्हे कह देले रही कि भोरे उठके नहा लिहअ३त उ साँस के उठेके पहलही तैयार होके बइठल रही।

"आरे! बाह तनु तू त नहा ले लू त अइसन करअ चौउका में तरकारी बना लऽ३शुद्ध घीव में बनइहऽ३आज नहाय खाय बा सब चीज घीव में बनी।"

"अच्छा मम्मी जी।"

तनु के पहिला वट सावित्री पूजा रहे।उहो नेम टेम से करें चाहत रही३माई के सिखावल गाँठ पार लेले रही।

फुफुआ सास आपन भइया से कनफुसियात रही–"भाभी ,बाड़ा भागमान बाड़ी पढ़ल लिखल कनियामिलल आ ओकरा पर ऐतना सउर वाली।"

"हाँ !हो दीदीया ठीके कहऽतड़ू।"

बीना देवी पूजा के सामान के लिस्ट पकड़ा के तनु के बोलली "जाके बाजार से इ सब कल वटसावित्री के पूजा के सामान ले ले आवऽ।"

बर के पेड़ पर तनु ,बीना देवी दुनो सास पतोह पूजा करके धागा बाँधे के समय तनु धागा के एगोटुकड़ा रख के गोड़ लगऽली त बीना देवी इशारा कइली सात बार बाँधे के होला३तनु अनसुना करकेएके ओरी खाड़ा हों गइली।३तनी देर में बीना देवी आके पुछली कनियाँ बेना काहां बा?

"बेना हम ना किनली मम्मी जी"

"काहे?"बीना देवीआँख तरेर के पुछली।

बीना देवी के सखि भी पूछे लगऽली "जाऽ, कनिया उ तऽ जरूरी रहे।"

तीन चार गो मेहरारू लोग भी हाँ में हाँ मिलवली।

तनु जरिको ना घबरवली आऽ सबके समझवली कि "देखीं मम्मी जी पहिले के जमाना में बिजुली नारहे तऽ बेना हाँके के जरूरत रहे३अब तऽ गाँव में बिजुली आ गइल बा तऽ साले साले बेना किन केजामा करेके का जरूरत बा।"

"घर में पंखा चला के रसम हो जाई।"

इ सब सुनके फुफुआ सास बोलली– "बाह! कनिया बाड़ा बढ़िया उपाय बतऽउली हो।"

तनु ,कनखिया के सास के मुँह देखली तऽ उहो कहली ठीके बा कनिया३कई गो बेना घर में पड़ल बाजेकर जरूरतें नइखे। ❑❑

❍ राँची, झारखंड

बेजोड गीत-संगीतकार आ स्वतंत्रता सेनानी महेन्दर मिसिर

विजय कुमार तिवारी

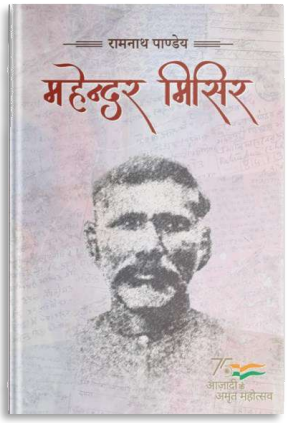

महेन्दर मिसिर जी ख्यात रहनी, कुख्यात रहनी आ विख्यात रहनी। रस से भरल उनकर गीतन से मउराइल मन हरियरा जात रहे। ''अंगुरी में डँसले बिया नगीनिया हे ननदी, भईया के बोला द'' जइसन पूरबी धुन पर गीत के रचयिता पंडित महेन्दर मिसिर खाली एगो गीतकारे ना रहले, उ बहुत बड़ संगीतज्ञो रहले। जब गीत के रचना करसु त ओही घरी गुनगुनात-गुनगुनात ओह के लयबद्ध कइके संगीत के धुन बना देसु। कहेला लो कि उ खुदे पाँच-सात गो वाद्ययन्त्र बजावे जानत रहले। जानते ना रहले, बजावे में माहिर रहले। उनका तबला के थाप आ बांसुरी के धुन पर नाचे वाली लइकी लोगन के पाँव खुदे थिरके लागे, मचमचाए लागे। उनकर पूरबी धुन पर भारते ना, बलुक फिजी, मारिशस, सूरीनाम, नीदरलैंड, त्रिनिदाद, गुयाना के लोग आजुओ मस्त हो जाला। कहेला लो कि अइसन गीतकार-संगीतकार के उनुका जियते ऊ आदर ना मिलल जवना के ऊ हकदार रहले।

बिंदिया जइसन भोजपुरी के पहिलका उपन्यास लिखे वाला रामनाथ पाण्डेय जी के कलम, महेन्दर मिसिर पर उठल आ एगो सुन्दर उपन्यास लिखा गइल। उहे उपन्यास 'महेन्दर मिसिर' हमरा सामने बा। एह उपन्यास के भूमिका डॉ० भगवती शरण मिश्र जी लिखने बानी। डॉ० भगवती शरण मिश्र जी के एह बात से असहमत भइल कठिन बा कि- ''उनका साधना के दुगो किनारा बा-संगीत-साधना आ देश के आजादी। दूनो किनारा समानान्तर होके भी समानान्तर नइखे। एक सिक्का के दुगो पहलू के तरह एक-दोसरा के पूरक बा। कहल कठिन बा कि महेन्दर मिसिर संगीत-साधक के रुप में बड़ बाड़न कि स्वतन्त्रता-सेनानी के रुप में-शायद दूनो रुप में।''

'आपन सफाई' शीर्षक से उपन्यासकार पाण्डेय जी कुछ जरूरी बात कइले बानी। उहाँ का लिखतानी- ''एने जब हमरा मिसिर जी के रचनन के पढ़े के मौका मिलल, त हमरा लागल, हमनी इनका सँगे नेयाय नइखी कइले। इनकर उपेक्षा खूबे भइल बा। भोजपुरी साहित्य के इतिहास में इनका के ऊ अस्थान नइखे दिआइल, जवन भोजपुरी साहित्य के विकास-प्रसार में सब से अधिक योगदान देबेवाला के मिले के चाहत रहे। ओह समय के मशहूर गीतकार मोती बी.ए जी आपना चिठी में अइसने पीड़ा लिखि के बतवनी।''

''हमरा नीको ना लागे राम, गोरन के करनी'' उनका राष्ट्र-प्रेम के प्रमान बा। एह उपन्यास में रामनाथ पाण्डेय जी गाँवे-गाँवे घुमि के उनुका बारे में जनमानस के विचार खोजि के लिखले बानी। बहुत श्रम कइके पाण्डेय जी, महेन्दर मिसिर जी, जइसन रहनी, उहाँ के जवन कृत्य रहे, जवन सोच-विचार रहे आ जवन प्रतिबद्धता रहे, उ सब पाठक का सोझा रखले बानी। जवन अन्याय उहाँ के प्रति भइल बा, एह उपन्यास का माध्यम से पुनर्स्थापित करेके प्रयास कइले बानी। एकरा खातिर सम्पूर्ण भोजपुरी समाज पाण्डेय जी के खूब आदर आ सम्मान करल चाहता। हर आदमी का इहे करेके चाहीं। आजु इ उपन्यास ना रहित त केतना लो महेन्दर मिसिर के उनका सही सन्दर्भ में इयादि करित। ई बहुत बड़ काम भइल बा।

एह उपन्यास पर चर्चा करेके पहिले एगो बात कहतानी कि जे तेज-तर्रार होला, चलबिधर होला ओकर चाल-चलन शुरुवे से दिखाई देबे लागले। अइसने लोग कुछ करियो सकेला। अच्छाई आ बुराई, चाहे कुछो करे खातिर भीतरी साहस आ पौरुष के जरुरत होला। रामनाथ पाण्डेय जी का बुझा गइल कि जवना चरित्र पर लिखे जातानी, ऊ कवनो साधारण मानुष नइखन आ जस-जस खोजत गइले, श्रद्धा आ प्रेम से उनका व्यक्तित्व के आगे मुड़ी नवावत गइले। ई विशेषता पाण्डेय जी के मानल जाई आ उनका लेखनी के कमाले कहाई कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी महेन्दर मिसिर के विराट व्यक्तित्व कागजे पर ना, लोगन के हिरदया में जमा देले बानी। एह उपन्यास में

पाण्डेय जी के भाषा–शैली के परिपक्वता खूबे झलकता आ जहाँ जइसन मसाला चाहीं उहे मसाला आ तेल–नमक मिलाके खूब चटकदार बनवले बानी। एह से उहाँ के चरित्र खूब निखरल बा बाकिर कतही उल्टा–सीधा जोड़–घटाव नइखे भइल।

रामनाथ पाण्डेय जी शुरुआत बहुत आछा कइले बानी, ''कबहीं–कबहीं त लागे बाबू कुँअर सिंह हाथ में तेगा लेले अपना घोड़ा पर चढ़ल जा रहल बाड़न, त कबहीं झांसी के रानी के घोड़ा के टाप सुनाई पड़ जात रहे।'' छपरा से थोड़हीं दूरी पर काहीं–मिश्रवलिया के धन –धान्य सम्पन्न शिवशंकर मिसिर के घरे सन्तान ना हो खला के दुख कचोटत रहे। मेंहदार के महेन्दर बाबा के आशीर्वाद से सन्तान भइल आ उनकर नाम महेन्दर मिसिर धरा गइल। उनका ससुराल के पँवरिया परीछना कई दिन ले सोहर, झूमर आ खेलवना गावत रहि गइल आ घोड़ी–गाय लेके जवार भर के सुनावत लवटि गइल।

महेन्दर मिसिर का पढ़े में मन ना लागे,दिन–रात गीत–संगीत में डूबल रहसु। बाप खूब खिसिया जासु। महेन्दर मिसिर आपना दादी से पूछले, ''गीत गावला पर अनराज होके बाबूजी काहें मारत–पीटत बाड़े?'' गीत गावल कवनो खराब काम त ना ह? अंत में शिवशंकर मिसिर आपन पत्नी गायत्री कुँअर से कहले– ''ओकरा से कहि द कि गीत गावे, खूब गावे। अइसन गीत गावे कि काहीं–मिश्रवलिया के नाम उजागर हो जाये,कुल–खानदान के नाव अमर हो जाये।''

अन्हरिया में मिसिर जी अकेले दू कोस दूर खैरा गाँव नाच देखे पहुँचि गइले। हनुमान जी के मन्दिर पर स्वामी अभयानन्द उनका कपार पर हाथ ध के कहले, ''एह घड़ी तोहरे अइसन साहसी आ धुन के पक्का लइकन के देश के जरुरत बा।'' महेन्दर मिसिर सगे चलि दिहले।

स्वामी जी उनुका के छपरा के धर्मनाथ मन्दिर ले अइलन आ पंवरे सिखावे लगले, कहले, ''महेन्दर! इयाद रखिह, साहसी आदमी खातिर दुनिया के कुछुओ अगम नइखे, अथाह नइखे, असाध्य नइखे।'' उहाँ से उ लोग मांझी गइल। अभयानन्द जी कहनी, ''आपना देश के इतिहास जाने के चाहीं, खास करके तोहरा। तोहार जनम भोजपुरी माटी में भइल बा। एह माटी के बड़ा महिमा बा। एह में लोटा के लइका बहादुर आ बात के –धनी होलन स।'' स्वामी जी बहुत सारा बात बतवनी जेकर निचोड़ इहे रहल कि सरजू नदी का ओह पार मंगल पाड़े के बलिया बा जहाँ के क्रान्तिकारी लोग अंग्र. `जन के भगा के स्वतन्त्र हो गइल रहे। ओने गंगा नदी के पार भोजपुर बा जहाँ के बाबू वीर कुँवर सिंह अस्सी बरिस के आयु में अंगरेजन के दांत खट्टा कइले रहले। भोजपुरी के ओह माटी में तहार जनम भइल बा। अभयानन्द जी उनुका के हथियार चलावे के साथे–साथे बनारस, लखनऊ आ ग्वालियर के गवईयन संगे कुछ महीना रखले। तीन साल बीतला पर उनुका के आपना घरे जायेके आदेश मिलल आ कहल गइल कि अब तू गीत–संगीत में लागि जा। सब गुप्त आदेश–निर्देश ले के महेन्दर मिसिर आपना गाँवे अइले।

जवन लइका तीन बरिस से गायब हो गइल होई, ओकरा घर–परिवार के हालत का होई? जब महेन्दर मिसिर वापस आ गइले त गाँव–घ ार आ जवार खुश हो गइल। छपरा से जमींदार हलवन्त सहाय जी के उपस्थिति में नाच–गाना शुरु भइल। महेन्दर मिसिर समां बाँधि दिहले। उनकर शरीरो खूब पुष्ट रहल, केहू उनका के अखाड़ा में चित्त ना करि सकत रहे। सफियाबाद के जान महमद कहलन कि अपने के गुन देखिके हम चाहतानी कि हम अपने के सेवा में रही। महेन्दर मिसिर हँसि के पूछले, हम ब्राह्मण आ तू मुसलमान, मेल कइसे जमी? ''जमी। कबहीं हमरो पुरखा–पुरनिया हिन्दू रहे लोग। धरम बदलला से पुरखा ना बदले पंडित जी! ना भगवान बदलस। ना जनम–धरती से नेह बदलेला।'' जान महमद के बात सुनि के कहले, ''तहरा गाँव के सूफी संत के प्रभाव जन–जीवन पर पड़ल बा। तोहरे अइसन आदमी के खोज में हम बानी।''

महावीरी झंडा निकलल। हलवन्त सहाय हाथी के हौदा प बन्दूक लेले बइठल रहल। एने महेन्दर मिसिर तलवार आ भाला के करतब दे खावत रहले। हलवन्त सहाय अगरा गइले, ''हई देखीं, जवना बछड़ा के अब ले एगो गवइया समुझत रहीं, उ त महावीर जी अइसन हुंकारत. ा।'' ऊ खयाली पुलाव पकावे लगले आ महेन्दर मिसिर के लेके उनका भरोसा जागे लागल। ओने महेन्दर मिसिर का जोरे बहुत लोग जुटे लागल। एक दिन ऊ आपन विचार सुना के कहले कि हमनी का कुछ करे के चाहीं। सब तइयार हो गइल।

पाण्डेय जी कार्तिक स्नान के जवन चर्चा कइले बानी, ऊ हमनी का भोजपुरी क्षेत्र खातिर त्याग–तपस्या आ भक्ति के आधार होला। माघ मेला में लोग जाला। ओही घरी कतहू से एगो साधु बाबा बकुलाहाँ स्टेशन से कुछु दूर सरजू

किनारे जाड़ा में परगट भइले। कहले, हम एगो साधना खातिर आइल बानी, बाधा ना पड़े के चाहीं। एह आड़ में महेन्दर मिसिर अपना साथी लो का साथे ओह साधु, स्वामी अभयानन्द जी से मिललन आ सब लोग हथियार चलावे सीखल। जब कई दिन बबुआ घर से लापाता रहले त उनुकर बाबूजी सोचत रहले, ''जवानी आ नदी के बाढ़ के कवनो ठेकान ना ह। दूनो उपट के कब केने बहे लागी, कहल ना जा सके।''

एह प्रसंग में रामनाथ पाण्डेय जी अतना सुन्दर लिखतानी। अपना अधिकार के दावा करत जवन तर्क गायत्री कुँअर जी देनी आ खुश भइनी, शिव शंकर मिसिर मुस्काये लगले। उपन्यासकार के ई जबरदस्त खूबी बा कि ऊ अइसन वर्णन करतारे, सब गद्‌गद हो जाई। समाज के ग्यान, रीति–रिवाज के ग्यान, अधिकार–कर्तव्य के ग्यान आ समय पर डटि जाये के भाव बड़ा स्वाभाविक बा। ई उहाँ के लेखन शैली के विशेषता बा। मौसम के कइसे रंगीन आ सुघर बनावल जाला, ई केहू रामनाथ पाण्डेय जी से सीख सकेला।

महेन्दर मिसिर के जवन बरियात निकलल ओइसन केहू का एह जवार भर में ना निकलल रहे। घर के लक्ष्मी जी आ गइनी आ रौनक बढ़ गइल। पाण्डेय जी लिखतानी, साधु आ पानी के बहत रहे के चाहीं। ना बही, त गंधा जाई। ओह रात दुआर पर साधु बाबा लो खातिर कीर्तन भइल। साधु बाबा कहले, महेन्दर जेकर जेतना बड़ लक्ष्य होला, ओकरा से आराम आ विश्राम ओतने दूर होला। बंगाल में संन्यासी आंदोलन खातिर भोजपुरियन जवानन के स्वामी अभयानन्द जी के आदेश बा। तु लोग चौथा दिने हाबड़ा टीसन पर आ जइह।

समय पर हावड़ा पहुँचि के सब लोग विजया जी के अगुआई में ठाकुरबाड़ी में जाके आराम करे लाग. ल। स्वामी अभयानन्द जी सबके खुश होके स्वागत कइनी आ पतित पावनी गंगा माई के संघर्ष गाथा सुनावे लगनी। उहाँ का कहनी, ''लमहर से लमहर काम क के गुमान ना करे के, अकड़े के ना आ अप. ना जिनगी के अन्तिम छन तक परोपकार करत रहे के चाहीं। इहे हमनी के संस्कृति ह। इहे हमनी के जिनगी के लक्ष्य ह।'' स्वामी जी का योजना से काम शुरु हो गइल। महेन्दर मिसिर पूरबी गायक आ गीतकार के रुप में खूब सोहरत पावे लगले। अगरेजन के खिलाफ घटना बढे लागल त ओकनी के ध्यान महेन्दर मिसिर पर गइल आ ऊ निगरानी करे लगलन स। बाकिर जान महमद के भाई के कारन योजना बदल के आक्रमन होखे लागल। ओने महेन्दर मिसिर आपना साथी लो का साथे छपरा खातिर गाड़ी में बइठि गइले। खजाना लूटेवाला काम हो गइल रहे।

महेन्दर मिसिर संन्यासी आन्दोलन आ गीत–संगीत के प्रभाव देखि के आइल रहले। मन खुश आ आत्म–विश्वास से भरल रहे। दूनो पति–पत्नी खुशी–खुशी रहत रहे लो। जब मिसिर जी हलवन्त सहाय के बोलवला पर छपरा जाये के तइयार भइले त धर्मपत्नी लक्ष्मीना कुँअर जी कहनी, ''सुने में आवता,ऊ निमन आदमी ना हवन। अपने छपरा में पुरइन के पात नियर रहेब, इहे हमार निहोरा बा।'' महेन्दर मिसिर आपना आंकवारी में बान्हि लिहले। ऊ कहली, ''पुरइन के पात बन के रहे वाला के कबहीं, कवनो आँच ना आवे। ओकरा आपना जिनगी में कबहीं पछताए के ना पड़े।'' मिसिर जी कहले, ''तू त अन्हरिया राह पर अँजोर फइला दे लू।''

हलवन्त सहाय जी गीत गावे के आग्रह कइलन। मिसिर जी गावे लगलन बाकिर उनकरा मन के बेचैनी कम ना भइल। ऊ भीतर जाके कुर्सी पर बइठले आ आपन अरमान बतवले। मुजफ्फरपुर के ढेला बाई के नाम लिहले। महेन्दर मिसिर कहले, चिन्ता मति करीं, ऊ ढेला बाई रऊँवा पलंग पर मिली। फेकू सिंह ढेला बाई के भरल महफिल से उठा के हलवन्त सहाय के हवेली में पहुँचा दिहले बाकिर खिसिया जवाब दिहले।

हलवन्त सहाय के बात सुने के ढेला बाई तइयार ना भइली। जब चार दिन अइसही बिना खइले–पियले बीतल त उ कहली, ''त महेन्दर मिसिर के कहीं, ऊ हमरा के गीत सिखावसु आ छपरा में रहसु।'' मिसिर जी कहले कि संगीत त सिखा देब बाकिर छपरा में ना रहब। हम आपना शिवाला में बिना जल चढ़वले भोजन ना करेनी। शिव बाजार में बनल आजुओ ढेला बाई के मन्दिर बा। महेन्दर मिसिर के संगीत के चर्चा बनारस के केसर बाई आ विद्याधरी बाई तकले पहुँचि गइल।

गायत्री कुँअर के मौत हो गइल। मिसिर जी दुखी रहे लगलन। अखाड़ा गइल, गीत गवनई आ छपरा आइल–गइल सब बन्द हो गइल। बाबूजी आपन दोसर बियाह कईके उनका खातिर दोसर माई ले आ दिहले। कुछ दिन बाद दुआर पर फेरु से गीत–संगीत शुरु हो गइल। एक दिन उनका दुआर पर भिखारी ठाकुर आके खड़ा भइले। महेन्दर

मिसिर उनका के ध के बइठवले आ कहले,''भिखारी भाई, ई सुरसती माई के दरबार ह। इहवाँ ऊँच–नीच भा जाति–पांति के भेद–भाव ना रहे। एह दरबार में साधना के महत्व बा। साधक के कवनो जाति ना होला। ऊ खाली साधक होला।''

महेन्दर मिसिर के बातन पर भिखारी ठाकुर चिहइले। उनका चिंहइला पर मिसिर कहलन, ''एमे समझे–बुझे के कवनो काम नइखे। बस एतने जान ल, हमरे अइसन तोहरो भीतर कोई बइठि के तोहरा से कुछ करवावे के चाहता। तोहरा के उदबेग रहल बा। ना त कहवाँ कुतुबपुर आ कहवाँ काहीं–मिश्रवलिया? एतना दूर तू धावल काहे अइत?''

अनेक घटनन के वर्णन देखल जाव त साफ बुझा जात बा कि रामनाथ पाण्डेय जी के लेखन में उमंग बा, उत्साह बा, संघर्ष बा, ईर्ष्या–जलन बा, दाँव–पेंच आ लाचारी बा। सब आपना–आपना मनोभाव से बँधल बा। महेन्दर मिसिर का छपरा अइला पर ढेला बाई खुश भइली बाकिर गोड़ छुअत देखिके हलवन्त सहाय जरि बुतइले। रिवेल साहब सब स्थितिये बदलि दिहले आ ढेला बाई के पतोहू मानि के आपना पत्नी के गहना के बक्सा दे दिहले। ढेला बाई महेन्दर मिसिर के दर्द भरल गीत के साथ नाचे लगली। सब डबडबा गइल। बाबू हलवन्त सहाय महेन्दर मिसिर के दूर करे खातिर रिवेल साहेब से निहोरा कइले कि इनका के फौज में भर्ती कके भेज दीं। महेन्दर मिसिर बुझि गइले आ फोर्ड साहब से कहले कि हमार गीत सुनि के सैनिक लोगन के घर–परिवार के इयाद आवे लागी। ऊ कमजोर हो जाई लो। फोर्ड साहब कहले, ''ई हलवन्त बड़ा खतरनाक आदमी बा।''

ओह बाबू हलवन्त सहाय के विचार बदले लाग. ल। सपना में देखतारे कि उनकर गोतिया–देयाद गिद्ध बनिके झपटा मारल चाहतरेस, आ ढेला बाई भगावतारी। अगिला दिन ऊ आपन सब धन–सम्पत्ति ढेला बाई के नावे कर दिहले। मन शान्त भइल। महेन्दर मिसिर सुनि के खुश भइले। एह बीचे कवनो दिन उनकर नींद टूटल त अजबे दृश्य देखतारे। ओने आपना शिवाला में महेन्दर मिसिर गीत गावतारे आ एने आपना कोठी पर ढेला बाई नाचतारी। बाबू हलवन्त सहाय के आत्मज्ञान जागल,आत्मग्लानि हो खे लागल आ ऊ ढेला बाई से माफी मांगे लगले। एह सब प्रसंगन के जवन मार्मिक वर्णन रामनाथ पाण्डेय जी कइले बानी,ओकर बखान हम नइखी करि सकत। एह उपन्यास के सबसे बेहतरीन प्रसंग बा। जीवन में उहे सबसे आछा स्थिति होला जब लोगन का आत्मज्ञान जागि जाला। बाबू हलवन्त सहाय सब कुछ त्यागि के रिविलगंज का ओर चलि गइलन आ फेर केहू उनका के ना देखल।

रामनाथ पाण्डेय जी जवना हिसाब से महेन्दर मिसिर के बारे में कहानी आगे बढ़ावत जातानी, पढ़ेवाला के भाव दिन प्रति दिन श्रद्धा में बदलल जाता। जिनगी के रहस्य समझावत महेन्दर मिसिर ढेला बाई से कहतानी, ''जब गरदन में ढोल बन्हा गइल बा त बजावे के पड़ी। घबड़ा मत।'' कहानी में सभकर भीतरी सोच उजागर होता। लोग कोठी हड़पल चाहता। खुदे ढेला बाई डेरात रहतारी। ओने स्वामी अभयानन्द जी के संवाद सुनिके महेन्दर मिसिर आपना मेहरारू परेखा कुँअर जी से मिलके कहलन, ''बेटा के धियान दीह। अपना चारो देवर के बेटा अइसन दुलार दीह जेमे कोई के हमार अभाव ना खटके।'' जब ढेला बाई खुश होके आपना नथुनी मिसिर जी के देली त उनका बुरा लागल। ओइसहीं बनारस में केसर बाई अपना घरे आवे से रोकली त बहुत खराब लागल। मिसिर दूनो जगह इहे कहले कि अब ऊ कबो उ लो से ना मिलिहें। इहे जिनिगी के खेल ह। पाण्डेय जी के लेखनी के कमाल बा आ मनोविज्ञान के समझ कि उहाँ का सहज,सरल भाषा में सब खोलि के लिखले बानी। श्रेष्ठ रचनाकार के इहे प्रमान होला।

पूरा उपन्यास में चाँद आ अँजोरिया रात के खूब बेजोड़ भाव लेके वर्णन भइल बा। कहीं ओकर चाँदनी शान्ति देतिया आ कबहूँ हिरदया के आगि धधकावत बिया। लिखतानी, ''बाकिर एह दुधिया रंग में महेन्दर मिसिर के भीतर के दाह सेराये के सामर्थ ना रहे। अँजोरिया में जहर घोरा गइल रहे।'' भीतर से आवाज आवत रहे, रंडी, रंडी होले, चाहे ऊ केतनो ऊँचाई पर बइठल होखे। गुरु–चेला के सात्विक सम्बन्ध के मर्यादा ऊ का जानी? इहवाँ पाण्डेय जी कबीर प्रसंग ले आके अद्भुत बात लिखले बानी। महेन्दर मिसिर के पीड़ा के कबीर से जोड़ि के शोध करे वाला लोगन खातिर द्वार खोल देने बानी। मह. न्दर मिसिर आ कबीर के बीच के संवाद दिशा दे खावता। ई पाण्डेय जी के चिन्तन आ ज्ञान के असर बा। कबीर जी कहतानी, ''दुनिया में कवनो चीज बेकार ना होला। कुल्ही के आपन–आपन महत्व बा, आपन–आपन अस्थान बा। तोहरो आपन महत्व बा। केसरो बाई के आपन महत्व बा। तू जादा लपटाइल ना रहित, त हमरे अइसन मस्त रहित। मस्ती जिनगी

में गति प्रदान करेला, तू मस्त रहे के कोशिश कर।'' महेन्दर मिसिर सोचे लगले आ घूमत –घूमत बाबा भोलेनाथ के गली में हाथ जोड़ि लिहले। उहाँ से गंगा के घाट पर आके बइठल पछतात रहले। भोर होते केसर बाई घाट पर आके माफी मांगे लगली। मिसिर जी कहनी, ''तू हमरा के व्यापारी मान लेलू आ संगीत के व्यवसाय। तोहरा में पात्रता नइखे।'' बाद में उनुका रोअला पर दया भाव से मिसिर जी कहनी, ''जब तू कवनो गाढ़ बिपति में परिह आ केहू सहारा ना मिली त हमार कवनो गीत गावे लगिह, तोहरा किनारा मिलि जाई।''

केहू के जब मन व्यथित होला त भीतर–बाहर बहुत बेचैनी रहेला। उहे हालत महेन्दर मिसिर के भइल रहे। सोचलन, पहिले जनम –धरती, फेरु करम–धरती। बनारस में पारसनाथ के जनम–धरती खोजत मन्दिर में हाथ जोड़ले, ''भगवान, जीव–जीव एक होला–एकरा मरम अपने से अधिका कोई दोसर ना जानल। अपने हमरा पर दया करीं। राह देखाईं।'' कबीर बाबा से फेरु भेंट भइल आ उ आपन उपदेश दीहले। आगे रैदास के जन्म–धरती पर मिसिर जी पहुँचले आ सब स्थान के गंदगी देखि के बहुत दुखी भइले। कवनो आवाज सुनाइल, ''भीतर साफ रहला पर बाहर के गंदगी के असर ना पड़े।'' रामनाथ पाण्डेय जी लिखतानी कि महेन्दर मिसिर ओह धरती पर जाति–प्रथा के प्रति असंतोष देखवले। उहाँ एगो बूढ़ आदमी के बात सुनिके मिसिर जी खुश भइले।

अस्सी घाट पर कोई आन्हर आदमी तुलसी बाबा के लिखल भजन गावत रहे– ''जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे?'' महेन्दर मिसिर तुलसी बाबा के कोठरी में जाके मकड़ी के जाला झारे लगलन। ओही घरी उनका जवार के भरोसा साह मिलि गइले आ महेन्दर मिसिर के आपना साथे ले गइले। सब छोड़ि–छाड़ि के महेन्दर मिसिर काशी के अस्सी घाट पर जम गइलन आ भरोसा उनुकर परम भक्त हो गइलन। विद्याधरी बाई से मिसिर जी का ज्ञात भइल कि केसर बाई के लकवा मारि देले बा,कोलकाता में काली माई के मन्दिर में भीख मांगत जिनिगी काट रहल बाड़ी। मिसिर जी उदास हो गइनी। उनका लागल जइसे केसर बाई गावतारी– ''मोरा नान्हें के पिरीतिया स्याम भुलिये गइल ना।'' विद्याधरी बाई अपना बाजरा पर आके गावे लगली– ''ए ननदिया मोरि रे,पिया बिनु रहलो ना जाय।''

परमात्मा के खेल निराला होला। मिसिर जी के मन छटपटात रहे, केसर बाई भीख मांगतारी। एने अभयानन्द जी के मिलला बिना काशी छोड़ नइखन सकत। नित्यानन्द जी भेंट होते कहले– "स्वामी जी चौथा दिने कोलकाता जायेब। तूँ आजे चलि जा आ काली माई के मन्दिर में दूनो शाम जरूर जइह। स्वामी जी के संदेश उहँवे मिली।''

मिसिर जी सोचत यात्रा शुरु कइले कि केसर बाई बिपति में बाड़ी, उनुकर सेवा कइल जरूरी बा। स्वामी जी के भी काम करे के बा। ... काली माई के दर्शन करे मिसिर जी गइले बाकिर केसर बाई ना दिखाई देली। महेन्दर मिसिर सोचले कि अब ऊ गीत–निर्गुन लिखे, गावे में जिनिगी लगा दिहें। कई दिन खोजला का बाद केसर बाई से भेंट भइल आ ऊ उनुका के लेके बनारसी के बासा के पासहीं एगो कोठरी में राखि दिहले। दवाई चले लागल आ एक दिन केसर बाई नाचे खातिर घूँघरू बान्हि लिहली। महेन्दर मिसिर रोकल चहले बाकिर ऊ ना मनली आ नाचे लगली। दुइयो घुमान ना घुमली कि पाँव थरथरा गइल आ षमिसिर बाबाष कहत गिर गइली। महेन्दर मिसिर उठा के खटिया पर सुतावल चहलन तवले केसर बाई के मुड़ी उनका बाँह पर लटक गइल। रामनाथ पाण्डेय जी के 'महेन्दर मिसिर' उपन्यास में, संयोग, भगवान के कृपा आ दुनिया के सहयोग सब भरल बा।

महेन्दर मिसिर के स्वामी जी नोट छापे के मशीन देके ओही काम में लगा दिहनी। खूब नोट छपाये लाग. ल। अंगरेजन के सरकार के कान खड़ा भइल आ ऊ सब टोह में लागि गइलनस। तीन बरिस उनका किंहा नौकरी करत सरकारी मुलाजिम गोपीचंद रहस्य पा गइल। सब लोग पकड़ा गइल आ छपरा ले आ के जेल में डालि दिहल गइल। ढेला बाई मिसिर बाबा के निकाले खातिर लागि गइली। वकील हेमू से मिलिके कहली कि कतनो खर्चा होखे, मिसिर बाबा के बचा लीं। उनका कहला पर मिसिर जी से कहली, ''रउवा नोट छापे के मति सकारब, रउवा बाचि जाइब।'' बाकिर कोर्ट में महेन्दर मिसिर पूछला पर स्वाभिमान से कहले, ''जी, हम नोट छापत रहीं।''

जेल जात उनका चाल में आजादी के दिवाना के मस्ती रहे। बक्सर जेल में जेलर के बेटी के महेन्दर मिसिर संगीत सिखावे लगले, गीत–संगीत आ रामायन होखे लागल। ऊ रामायण लिखे लगले आ एक दिन जेल से छूटि गइले। एने ढेला बाई बिस्तर ध लेली। उनका अंतिम समय में महेन्दर मिसिर अइले आ स्वीकार करत कहले, ''सभे जान गइल, ढेला बाई के जिनगी

महेन्दर मिसिर बिना अधूरा रहे आ महेन्दर मिसिर के ढेला बिना।'' ढेला बाई, महेन्दर मिसिर के देह पर ओलर गइली।

रामनाथ पाण्डेय जी महेन्दर मिसिर के भिखारी ठाकुर के साथ जवन संवाद लिखले बानी ओह से साफ बुझाता कि मिसिर जी देश–प्रेम से बहुते भरल रहनी। स्वामी अभयानन्द जी उनका के बधाई देत कहनी,''बेआलिस के आंदोलन में हमहूँ पकड़ा गइनी आ अब छूटि के तहरा लगे अइनी हा। नित्यानन्द, मुक्तानन्द आ परमानन्द सब मारल गइले। ऊ सब देश खातिर शहीद हो गइल लोग। अब तू स्वतन्त्र बाड़।''

महेन्दर मिसिर आपना मेहरारु से कहले, ''सब –धन–दउलत तोहार बा। हमार असली धन इहे पो. थी बाड़ी सन। हम आपना हिरदया के मथ–मथ के –ध देले बानी। तू जान ल, इहे महेन्दर मिसिर के असली पहचान बाड़न सन। एकनी के जोगा के रखिह आ अपना बेटा के सहेज के राखे खातिर दे दिह। कबहीं एकनी के बड़ा कीमत लागी।''

महेन्दर मिसिर छपरा ढेला बाई के मन्दिर में आके गीत गावे लगले। लोग जूटल। गावते–गावते उनका छाती में दरद उपटल। डाक्टर हरदन बाबू अइले बाकिर मौत मिसिर जी के ले के चलि गइल रहे। 'महेन्दर मिसिर' उपन्यास लिखि के रामनाथ पाण्डेय जी, उहाँ का साथे अमर हो गइनी। चरित्र के महानता उजागर करके दुनिया के सामने उनका देश प्रेम,गीत–संगीत प्रेम आ संवेदना के जवन स्वरुप उभरल बा, अन्यत्र दुर्लभ बा। श्महेन्दर मिसिरश भोजपुरी के एगो महान रचना के रुप में युग–युग तक पढ़ल जाई। ❑❑

समीक्षित कृति : महेन्दर मिसिर
उपन्यासकार : रामनाथ पाण्डेय
प्रकाशक : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
(नवका संस्करण)

❍ भुवनेश्वर, ओड़िशा

झारखंड के राजधानी राँची के भोजपुरिया कवि

अंकुश्री

भोजपुरिया लोग हर जगह फइलल बाड़न। ऊ लोग जहां बाड़न आपन गतिविधि बनवले रहेलन। झारखंडो में भोजपुरी भाषाभाषी लोगन के संख्या बहुत बा। झारखंड राज्य के राजधानी रांची ह, जंहवा भोजपुरीभाषी लोगन के नीमन संख्या रहेला। झारखंड के सुनाम संपादक श्री कनक किशोर रांची में रहनिहार भोजपुरी कविअन के एक जगह बटोरे के प्रयास कइले बाड़न। उनका संपादन में एगो बड़ा काम के किताब जोहार भोजपुरिया माटी भाग–1 छप के आइल बिआ। एह किताब के प्रधान संपादक बानी स्वनामधन्य आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी। सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित 150 पृष्ठ के सुंदर गेटअप के ई किताब के कीमत 225 रुपया बा। एह में बारह कविअन के भोजपुरी कविता समेटाइल बा।

दधीचि ऋषि के हड्डी से बनल धनुस लेखा आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी विरचित साहित्य में बहुत ताकत बा। इहां के 'रस रही जिन्दगी में तबे सभ रही' कविता में लिखत बानी, 'बांची संवेदना जब, तबे सभ रही। रस रही जिन्दगी में तबे सभ रही।।' 'ई शरद् के अँजोरिया कइसन' बा देखल जाओ, 'भइल वादा सुमन से अब खिलखिलाये के, शर्त बा चिरइन के अब बस चहचहाये के।' अगिला कविता सोना चरन सुरुज के में प्रकृति के चित्रण दे खल जाओ, 'जूड़ा सुबह संभारे तम के, मुँह से झटकि हटावे। पग में पायल फूल–गमक के, चिरइ. नि के लय गावे।' एगो कविता सपना के कुटी के पंक्ति बा, 'छन–छन अपना सांस के दीलें लोह लगाम। ले सरपट भागे हठी, पल–पल उमिरि तम. ाम।।' 'चेतन' जी के अंतिम बारहवीं कविता बिया कविता हऽ ऊहे असल। एहमें कविता के मरम देखे लायक बा, 'भींजल पल, नयना–नमी, याद–परेव उदास। आंच करेजा में रहे तब कविता हो खास।। कंठ दबल कुछ शब्द जब, अछरि जीभि के दाब। अधर दबल कुछु चाह जब कविता बने नयाब।।'

पतरातू थर्मल के भोजपुरिया गरमी केहू से छिपल नइखे, जे श्री विपिन बिहारी चौधरी जी के कवितन में लउकत बा। उमिर के नौंवा दसको में रांची में रह रहल श्री चौधरी जी के लेखनी में रवानी बनल बा। 'माटी के गीत सुनावे दऽ', 'बिटिया

वनदेवी के', 'सूरज के चोरी', 'बूढ़ा बरगद के पेड़', 'माई के खत बेटा के नाम' आदि कुल इगारह कविता नमूना के तौर पर छपल बिआ। कुछ पंक्ति देखल जाओ, 'वेणी में सजल वनफूल, गोड़न में महावर अस धूल, चंचल नयन, सोख चितवन, छन इहवां, छन उहवां...।' (बिटिया वनदेवी के)। 'बहुमंजिली इमारत खड़ा हो गइल, हमरा सूरज के चोरी हो गइल।' (सूरज के चोरी)। 'हारल–थाकल राही बटोही लेत रहन विराम, एकरे छांह में सांझी खानी बइठत रहे चउपाल।' (बूढ़ा बरगद के पेड़)। बेटा के दुरबेवहार से माई कहत बाड़ी, 'ई जनती मूड़ी सोउरी में ममोरतीं, देखती ना दिन जे दे रहल बाड़ऽ।' (माई के खत बेटा के नाम)।

एह किताब के तीसरका कवि बाड़न अंकुश्री। इनकर 'आदत पड़ गइल बा', 'आदमी से डर रहल बा आदमी', 'बसंत लेके उधार', 'बेटी के बिदाई', 'हो गइल मन उदास', 'दुरभाग देस के जागल' आदि आठ कविता एहमें छपल बाड़ी स। नमूना दे खल जाओ। 'आधा पेट खा के दिन, आ भोथर टेंगारी से लकड़ी, काटे के' (आदत पड़ गइल बा), 'आदमी बने के उपाय ना कर रहल बा आदमी, आदमी के देख–देख के डर रहल बा आदमी।' (आदमी से डर रहल बा आदमी), 'बाजे पायलिया तहरा जे गोरवा में, चिरइयां नकल उतारे संझिया के पेड़वा पर। तहरे ढ़िठाई ले के पईंचा बयार, आ गइल बसंत ईयाद देलस तहार' (बसंत ले के उधार), 'माई साथ दुअरा तक, भाई–बाबू पक्की ले, भउजी करस अंगने बिदाई।' (बेटी के बिदाई), 'माई–बाप भइल बुढ़ियो–बुढ़ऊ, अब रिस्ता सब भुलाइल। सास–ससुर भइल मम्मी–डैडी, रिस्ता बा अगराइल' (दुरभाग देस के जागल)।

संकलन में क्रमांक चार पर कवयित्री डा0 विभा रंजन के 'जिनगी अनमोल बा', 'छोड़ जाए के खातिर', 'आपन केहू नइखे', 'शिव वंदना', 'सूर्यास्त' आदि दस गो कविता छपल बाड़ी स। इनकर कुछ पंक्ति बा, 'राते फिर मन रहे झंवाइल, केहू आपन बड़ा इयाद आइल' (जिनगी अनमोल बा), 'तूँ हमरा पास नइखऽ, हम जानतानी, एक बार त मिले के आव ! मिलन के आस लेके कुछो ना तऽ हमार शिकवा, कुछ शिकायते लेके' (छोड़ जाए के खातिर), 'लोग पूछेला बहुत आँखि में लोरवा के कारन ए हमरा लगे बतावे खातिर कवनों वजह नइखे' (आपन केहू नइखे), 'मां तोहार गुण हमरा में आइल, तबे हमरा ई समझ में आइल' (बहुत इयाद आवेलू तूँ माँ), 'रूसल बिया अँजोरिया, दूर होखत जाले डगरिया। अंजोरा भुलाइल बा, अकिल बौराइल बा।' (आखिरी सांस आ गइल), 'हिरदया 'हिरदया के दुखवा अब केकरो के बताईं मत। कबहुँ भी केहू के आपन दुखड़ा सुनाईं मत' (बताईं मत)।

सारिका भूषण कविता–कहानी त लिखबे करेली, साहित्यिक गतिबिधियनो में खूब सक्रिय रहेली। एह संकलन में इनकर इगारह गो कविता बाड़ीन स। 'मइया के गीत' से शुरू करत बारी, 'मइया के अंचरा, माटी के गगरा, सोने के बसरा, भरले जियरा, हम पूजत बानी हो!' लइकी की पढ़ाई पर 'बबुनी के गुहार' कविता बा, 'हमहूं पढ़ब–लिखब सुन ल गुहार ए बाबा, ला द पोथी–पतरा खोल द स्कूल के दरवाजा'। इनकर एगो कविता बा 'बरखा भेजीं भगवान'। 'सूखल बा खेत खलिहान, सूखल पनघट, कुआं, धान। ढेंकी में अब कुटाई का सब मेहनत होई जियान'। 'अमवा मोजरइले सखी!' में एक तरफ 'अमवा मोजरइले सखी! कोयलिया के कूक सोहा ला' लिखत बाड़ी आ एकरे अंत में लिखत बाड़ी 'बरखा के बरसेला जब लरी, सजनवां से जुदाई ना सोहा ला'।

गीता चौबे 'गूंज' भोजपुरी में लिखबो करेली आ गइबो करेली। एह किताब में इनकर दस गो कविता संकलित बिआ। सरसी छंद में कविता बा, 'सुंदर मंद समीर बहेला, मन के लागे नीक। बड़ा मगन तरुवर झूमेला, वन में गावे पीक।' 'दुखियन के दुख में शामिल, जिनगी ई जीयल कर, एगो बात कहे गीता, खुश हरदम रहल कर।' इनकर चौपाई बा 'बरखा रानी','लइकन के भी नीमन लागे, बिरहि जिया में अगिया लागे। अलगे–अलगे माने होवे, केहू हंसले, केहू रोवे।' गजल देखल जाओ, 'कबो हमरा जरूरत बा कबो तहरा जरूरत बा, सभे ई जान ली बतिया इहां सभका जरूरत बा।' 'सूखत नइखे घाव दिल चीर के देखाई कइसे, दिल प के लिखल नांव उनकर मेटाईं कइसे।' (बड़ा रे हुलसी के हम नेहवा लगवनी)।

निर्भय 'नीर' शिक्षा–प्रशिक्षण से जुड़ल बानी। एह किताब में उनकर दस गो कविता बिआ। 'छूटऽत छूटऽत खिंचीं, चटकेला छाती, मटिया के गंधवा से भेजे रोज पाती' (उठेला बड़ी हूक)। मन पर एगो बड़ा नीमन कविता बा, 'कहवाँ गइल', 'केकरा से कहीं मन टोही लावे, सभे अझुराइल, केहू कहाँ धावे। खोजि थाकि गइले घर बनवा रे, कहवाँ गइल मोर मनवा रे'। मन पर दोसर कविता बा 'मन के मुनरवा', 'हमरा मन के मुनरवा हेरा गइलें हो, झटके में हियरा दुखा गइले हो।' 'बिरहिन' के बिरह से मन झंझोरा जात बा, 'डेहरी पर बरत दीया बूता देली चिटुकी से, अँजोर के भगाई ऊ अँधार के बोलावेली। धनके धरती छाती, मिलन बिरहवा क, हँसत–रोअत हिया गोदी दुलरावेली।' 'अंजोरिया' में देखल जाओ, 'चाँदनी बिछल चदर नियन डगर बथान में, चाँद मुस्कुरा रहल विभोर आसमान में'।

पुष्पा पाण्डेय जी के दूगो सोहर, एगो झूमर, चार गो भजन भक्ति भाव से भरल बा। एगो कोरोना पर आ एगो आजादी पर कविता बा। 'भोर भइले बोलले चिरइयाँ, उठ कन्हइया देखना। बछड़ा भइल बा बेहाल, उठ कन्हइया देखना' (भोजपुरी भजन)।

दिव्येन्दु त्रिपाठी दोसर कविअन के कविता भोजपुरी में भावानुवाद क के भोजपुरी के भंडार भरत बाड़न। ओकरा अलावे इनकर कविता 'गाँव के गाँव रहे दीं भइया !' के कुछ पंक्ति बा 'गांव के गांव रहे दीं भइया, भूँइ प पाँव रहे दीं भइया। आम न महुवा कुछुओ बा अब, नीम के छाँह ना कहुँओ बा अब। गीत–गवनई के रंग ना बा, प्रेम–नेह ना केकरो अंग बा।'

ललन राय के 'सावन' कविता में मौसम के फुहार बा, 'देखऽ पनियाँ के पड़ेला फुहार सजना ! लेके आइल बा सावनवाँ बहार सजना'। इनकर आउर कवितन के नाँव बा 'झारखण्ड', 'परदूषण', 'ओरहन' आउर 'वातायन'।'केहू नइखे सींचे में, सभे बाटे खींचे में। जनता डूबल जाति में, देश मिलल माटी में।'

'भोजपुरी बालगीतरू एक सांस्कृतिक मूल्यांकन' के लेखिका डा0 स्वर्ण लता के 'हाइकु' 'मन कुंठित, इक्कीसवीं सदी में, नारी बेचारी।' आ 'प्रेम प्रतिमा, न ख से शिख तक, नारी स्वरूप' के साथहीं 'सेनेरयु' देखल जाओ, 'नारी अस्मिता आज, लुटाता, दिने दुपहरिया', 'अमावस जिनगी, उम्मीद, चाँद झांके अँगना'। इनकर तीन गो आउरि रचना बाड़िन स 'आजाद कब होखब?' 'हमार पहचान हऽ' आ 'कजरी'।

किताब के अंत में वन प्रमंडल पदाधिकारी पद से सेवानिवृत्ति के बाद भोजपुरी के सेवा में जी–जान से लागल आउर एह किताब के संपादक श्री कनक किशोर जी के कविता बाड़ीन स, 'गंगिया', 'पेट', 'निकाह कुबूल बा', 'कुछ बुझाइल', 'प्रवासी चिरई' आ 'किशोर के कविता'। 'हमार संगम, हमार हरिद्वार, गाँव के दखिन बधार में बहत, गंगिया ह, रोज डूबकी मार आइना, भोरे भोर, किरिनियां के धरती चूमे के पहिले' (गंगिया), 'पेट, हमरो बा, रउवा जइसन ना, छोटी चुकी, ... तवनो पर, पेट भरे के, जोगाड़ ना हो पावेला, भूखे अंतड़ी धुँआत रहेला, पेट सोन्हात रहेला' (पेट), 'राउर संयुक्त परिवार रहे, आपन गाँव रहे, खेत खरिहान रहे, ... काकी इया के हाथ रहे, भऊजी के दुलार रहे ... आइल आज एकल परिवार,

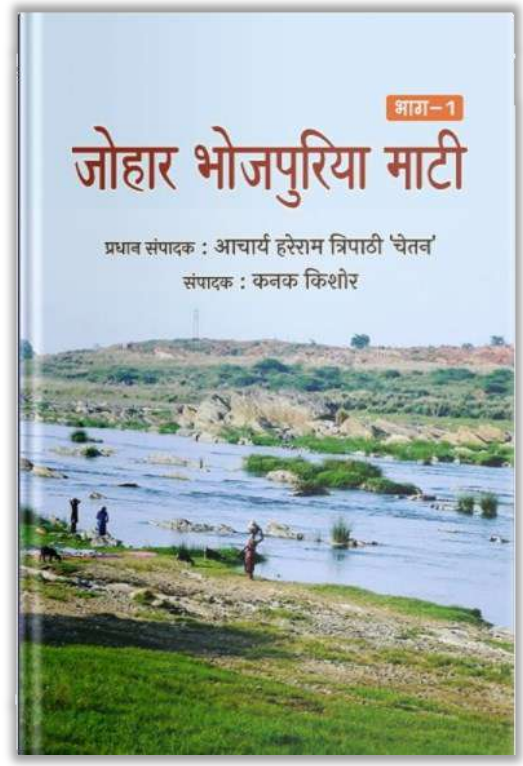

आज एकल परिवार, बीबी, मियां संग एगो लइका, शहर छोड़ ना गइल गाँव, काका काकी के ना जनलस, बाबा दादी के ना पहचनलस ...' (कुछ बुझाइल)।

एह किताब में गजल, हाइकु, सेनेरयु, भजन, चौता, कजरी, सरसी छंद, कुकुभ छंद, चौपाई, घना क्षरी, सोहर, झूमर से लेके दोसर भाषा के भाव. ानुवाद तक समाहित बा। एगो आउर बात बा कि एह किताब में नौवाँ दसक से ले के पांचवा दसक तक के कविअन के एक साथ पढ़े के मवका मिल जा रहल बा। एकरा में आउरि बिशेषता बा, जे पढ़ले पर बुझाई।

❑❑

पुस्तक : जोहार भोजपुरिया माटी (भाग–एक)
संपादकगण : हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'
कनक किशोर
प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

❍ 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

पढल-लिखल के गाँव, बहेलिया टोला नाँव

केशव मोहन पाण्डेय

बाति सन् दू हजार दस के हऽ। लगभग तीन–चार साल बाद अपना गाँवे, अपना जनम–अथाने जाए के मौका मिलल रहे। तय ई भइल रहे कि अबकी बेर हमनी के साइकिल से चलल जाई। हमार वजन अब पहिले जइसन नइखे रहि गइल। बचपन त कबे परा गइल रहे, अब पचपन किलो के सीव. ान लांघ के पचहत्तर–अस्सी किलो के भारी–भरकम आदमी बनि गइल बानी। आदमीयत बा कि ना, बाकिर लोग आदमिए कहे ला। खैर, हमरा लगे साइकिल त बा ना, आ गाँव के सुन्दरता आ ममता में सउनाइल माटी में द्वेष आ तिकड़म के घिन्न हो जाए वाला रूप देखले बानी, से कवनो ढेर रुचि ना जागल रहे। सहयात्री बने वाला लोग ना मानल लोग। अब जाए के त रहबे कइल, साइकिलो के व्यवस्था हो जाई। बिहाने छव बजे बदाइल अथान पर आवे के रहे। अनमने मन से, एतना दिन बाद, गंडक के बलात्कार के बाद, मान–मर्यादा आ ढेर हद ले अस्तित्वहीन, मरल–मेटाइल, अनचिन्हू भइल अपना गाँव के निरखे के उछाहो गुदुरावत रहे।

बिहाने उठते पहिलका काज से निपटलही रहनी कि मोबाइल के बाँसुरी बाज गइल। दतुअन–ब्रश, चाय–नाश्ता, सब गाँवहीं में करे के निर्णय कइनी आ बदल अथाने चल दिहनी। ओहिजा अउरी तीन जने पहिलहीं से ठाढ़ रहे लोग बाकिर हमार वाहिनी नद. ारत रहे। हमार मजबूरी आ शिकायत बड़ा तेजी के काम कइलस। तुरंते केहू के एगो नया साइकिल सामने हाजिर हो गइल। बाप रे! बड़ा अचरज भइल। अगर एतनी तेजी से कार्यालयन में काम होइत त आपन देश कहाँ के कहाँ पहुँच गइल रहित। खैर, तनी देर के प्रतीक्षा आ हमनी के छव यात्रियन के जतरा आरंभ! ओह हमसफर लोग में उम्र के हिसाब से सबसे छोटा हमहीं रहनी बाकिर हँसी–मजाक आ गलचाउर बराबर होत रहे।

बहेलिया देखे के चाव में मन के कइगो घाव हरिहर हो गइल। बहेलिया! एह शब्द के जनम संस्कृत भाषा के शब्द 'व्याध' से भइल बा जवना के माने होला 'छेंदे वाला'। माने जे छेंदत होखे भा घाव देत होखे, माने एगो शिकारी। हमरा टोला के नाँव बहेलिया रहे। कई बेर जेठ–बइसाख में खरहा भा महोखा मारे वाला लोग के झूंड देखीं त नउवा सार्थक लागे। बहेलिया एगो जातियो होले जेकर काम शिकार कइल, चिरई पकड़ल ह। हमरो टोला के ढेर लोग एह फिराक में रहे आ करबो करे।

जब तनी समुझे–बुझे वाला भइनी त ई नउवा बड़ा बाउर लागे। ऋषि वाल्मीकि जी के सरपवा सुनि के अउरी बाउर लागे। बुझाव कि हमनिए खातिर ऊ सरपले रहले का कि जा ए निषाद! तहके अनंत काल ले कबो प्रतिष्ठा–शांति ना मिले, काहें कि तूँ प्रेम, प्रणय–क्रिया में मगन असावधान चिरई के जोड़ा में से एगो के हत दिहले बाड़ऽ।

मां निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम् ॥

कथा–कहानियन से पता चलल रहे कि हमनी के ओहिजा के मूल निवासी ना रहनी जा। हमनी के जर भेंगारी के लगे भाँटी हवे। गुल्ली–डंडा खेलत बेरा कवनो जमीदार के लइका के आँखि केहू पंडित जी के लइका से फूटि गइल, से आपन जान बचावे बदे रातेरात अपना कुनबा आ लाव–लस्कर के साथे गाँव छोड़ दिहले। भागत–भागत जहवाँ बिहार भइल, ऊ अथान इहे बहेलिया हवे। चारू ओर जंगल–झाड़ रहे से दिन में केहू के अइला के उमेद कम रहे। एहीजा कुछ शिकारी लोग रहत रहे। जाल बिछा के, फटकूल लगा के, कँटिया–टाही में चेरा–किरकिचही फँसा के चिरई पकड़े में माहिर लोग जब परदेशीयन के देखल लोग त आव–भगत कइल लोग। देखल लोग कि ई आवे वाला लोग त कपार पर चंदन लगवले बा, कान्हे जनेव डरले बा आ बोलहूँ–बतिआवे में सहूरगर बा।... एह तरे पंडित जी लोग एह बहेलिया टोला में बसि गइल।

रचनात्मक मनई कतहूँ रही, कुछ रचते रही। समय के साथे ओह जंगल–झाड़ में रौनक हो खे लागल। पंडित जी लोग के प्रेरणा से हर जाति–वर्ग के लइका अब पढ़े–लिखे में मन लगावे लगले सँ। पंडित जी लोग के हर परिवार में केहू ना केहू सरकारी नोकरी में रहे। पढ़ाई के माहौल अइसन कि संझा के दीया बराते हर दुआर पर लालटेन–लैंप भा ढिबरी बरा जाव आ हर घर के लइका किताब–कापी खोल के बइठ जाव लोग।

देखा देखी चमटोली, अहिरटोली आ बिनटोलियो के लइका करिका अछर के माने जाने लगलें। ओह बहेलिया के सुरत केतनो बदरंग होखे त का, रूप भुलवले ना भुलाला। मन के टीसत रहेला।

ओह! कुछऊ त नइखे बदलल! ऊहे छवर, ओइसनके उजड्ड लागत लोग। ऊहे चरवाहा। ऊहे खेत–खरिहान आ ऊहे परती पड़ल जमीन। ... आरे! हम त रस्तवे भटक गइनी। हमनी में से जे सबसे बड़ बाड़े, उनकरा साइकिल के चैन उतर गइल रहे। ऊ पाछे छूट गइल रहलन बाकिर हमनी के बहादुरी में आगे निकल अइनी जा। रास्तवा भटकला पर ओह उमिर में बड़ भइया के ईयाद आइल। आजु के जेनरेशनो अइसने बा। जोश में नीमन–बादर रास्ता के धेयान रखले बिना सफर पर निकल पड़ेला आ फेर भटकाव भइला पर बड़–बुजुर्गन के ईयाद आवेला। वइसे त ओह बड़–बुजुर्ग लोग के बतिया माहुर लागेला। ... शुक्र बा संदेश–वाहक के आधुनिक अवतार मोबाइल के कि हमनी के संपर्क सधनी जा। भइया दूरे से हाथ हिला के सही रास्ता बतवले।

ई हमनी के जतरा के गाड़ी के आगे के पहिलका काठ, पहिलका बदलाव रहल। एहसे मन में खुशी कम, टीस ढेर जागल। ताना–तानी से भरल गलचाउर के बीचे सफर चालु रहल। चालु रहल प्रकृति के मौसमी नजारा। ...गेहूँ के दूर ले फइलल खेत, ऊँखि के नवागत पौध। बरसात आ बाढ़ के पानी से रक्षा खातिर बनल चकरका डँरार से होत हमनी का गाँव के विकास आ छछात हाल पर पछतात, तरस खात, पैंडिल मारत, पसीना पोंछत चलल जात रहनी। सबसे अधिका परेशान हमहीं रहनीं, काहें कि सबसे ढेर दिन बाद जात रहनी। जवन उमिर में सबसे बड़का भैया रहले, ऊ एह प्रगति के हमनी काओर से कइल पोस्टमार्टम के सुनि के मुस्कुरात रहले। उनकर मुस्कुराइल हमके कुछू अजीब लागत रहे।

हमनी की तनीए दूर आगे बढ़ल होखेब जा कि पहिले के निमनका सड़किया एह बेरा टूटल, उखड़ल आ बदहवास मिलल। एक बेर मन कइलस कि ओ. हिजा से लवट आईं, बाकिर अपना माटी के खींचाव में खींचात चलत चलि गइनी। पूरुब से सूरुज अपना आँखि के पपनी झपकावत आँखि खोले लगले। देहिं में गरमी के आभास तेज होखे लागल। खेतन में किसान लोग के गिनती कम होखे लागल। एहिजा के किसान लोग भिनुसहरे, कुचकुचवा के बोले से पहिलहीं खेतों में आ जाला लोग आ देहीं में घाम के धीकते पानी पीए घरे चल जाला लोग। एह क्षेत्र में पशुपालन ढेर तादाद में होला। हँ, ओह पालक लोग के पशुअन के संख्या गिनती में कम होला। संख्या से बुझा जाला कि ओह लोग के उद्देश्य व्यावसायिक कम, स्वांतःसुखाय, माने दूध–दही खाइल ढेर बा। शायद एही कारने एहिजा के अनपढ़ो–बेरोजगार युवक–नौजवान के देह–धजा चउकस आ चिमर होला।

अक्सर सूरुजमल के प्रचण्डता के सथवे गोरूअन के चरावे के काम चालू हो जाला। ओह बेरा खेतन में किसान लोग के ना रहला पर चरवाह लोग कबो लापरवाही से त कबो परवाह क के अप. ना गोरूअन के लहलहात फसिल में एक–आध बेर मुँह मार लेबे देला लोग। कबो–कबो त बड़ सादगी से दुश्मनियो निबाह लिहल जाला। गाँव के पावन मानसिकता में घातक दुश्मनी आ कलुषता के दीमक सगरो गाँवन के खँखोर के खाली क रहल बा। एह पीड़ा आ कुफूम के हमहूँ बड़ा बारीकी से समझत बानी। हमनी के बहेलिया से परइला के अनेक कारन में एगो इहो कारन रहे। गंडक माई के कटान त बहाना बनि गइल।

अब आगे के डगरिया तनी अचरज में डाले लागल। बाढ़ के धार के बनल भयंकर आ खतरनाक गड़हा वाली डगर पर अब पुल चमकत लउकल। हम आपन अचरज बतवनी त उमिर में सबसे बड़का भैया बस एतने कहले, 'अबहिन आगे चलऽ भाई।'

मन में बुझउअल के बुझे के साहस–मसरथ जागल। माने आगहूँ विकास के कुछू अउरी काम भइल बा! साइकिल के पैंडिल पर तनी तेज दबाव पड़े लागल। हमार बेचैनी बढ़े लागल। एक, दू ना, पूरा चार किलोमीटर ले आगे बढ़ि गइनी जा, कवनो ढेर अंतर ना लउकल। हँ, ग्राम देवी सोना भवानी के अथान पर तनी ढेर चहलकदमी लउकल। उनुके अथान के चारु ओर बाउंड्री बन गइल बा। देवाल पर हालिए के रंगाई–पोताई भइल बा। ओह अथान पर जाए खातिर सड़किया से सटले एगो सुन्नद बा बड़ प्रवेश के दुआर बन गइल बा। ओहिजा पहुँचते हमार माथा ओह आदि शक्ति के सोंझा नें गइल। ओहिजा के विकासशील पीपर के पेड़ देखि के हमके अपना दुआर के विशालकाय पीपर के ईयाद आवे लागल। ईयाद आवते मन कसव गइल। अपना बहेलिया टोला के सगरो दृश्य आँखि के सोझा एक बेर फेरु से जी गइल।

हमार गाँव! बहेलिया टोला। जहवाँ प्रार्थना जइसन पावन महकत बिहान के स्वागत हरिहर बाबा के शिव–भजन आ दूर से आवत मस्जिद के आजान से होखल करे। आँख खोलते कान्हा पर हर सम्हरले खेत काओर जात किसान, सीना तान के, बसवाड़ी के अखाड़ा में जात जवान, दुआरी पर रम्भात गाय, किलकत बछरू, मेंमियात बकरी आ धूरा में पूरा लोटइले, नंग–धड़ंग हमनी के बाल–गोपाल लउकी जाँ। हमरा गाँव के लगभग सगरो घर फुस के रहे बाकिर लिपाइल–पोताइल आ सुन्नर रहे। घरवन पर लहरात लउकी, तिरोई, कोंहड़ा आ नेनुआ के लत्तर सबके मन के बरबस मोह लेत रहली। जेठ के दुपहरिया में पीपर के छाँव के आनंद केऽ भूला सकता? बूढ़, बच्चा आ जवान, सभे हूजुम लगवले रहत रहे। बूढ़ऊ लोग के अपना जिनगी के अनुभवी चर्चा के सथवे ताश के खेल होते–होत राजमंगल चाचा आ जयनारायन चाचा के हो–हल्ला केकरा भूला सकता? हम लइकन के पीपर के सबसे नीचे वाली डाढ़ पर ओल्हा–पाती खेलल, झूलुआ झूलल, आइ–पाइस खेलल। नौजवान के अपना बेरोजगारी के चर्चा। ओही चर्चा में हमरा टोला के पढ़ल–लिखल जवान भाई लोग रचनात्मकता से प्रेरित हो के रामलीला–मंडली के गठन कइले रहे लोग। ओह रामलीला के दशरथ, परशुराम, रावण, वशिष्ट, नारद, राम, लक्ष्मण, सीता... केकरा के हम नइखीं जानत? आजु ऊ लोग एहिजा ना मिली लोग। समय के आन्ही सगरो तहस–नहस क दिहलस। विकास से कोसन दूर हमार टोला अपना जरूरतन के पूरा करे बदे दोसरा के मुँह ताकत रहे। रामलीला मंडली से मन के गुजारा त हो जाव, बाकिर तन त भीतरी आ बहरी, दूनू ओर से उघारहीं होखे लागल। पंडित जी लोग के लइकन के सथवे अउरियो जे पढ़ले–लिखले नौजवान रहले, ऊ सभे मुंबई, पंजाब, दिल्ली के ट्रेन पकड़ लिहले। जे करीआ अछर के भँइसे बुझत रहि गइल रहे, ऊ कुछ बहकल मानसिकता के नौजवान खाकी–खादी के छोड़ करिका वर्दी के बढ़िया बुझल लोग। सात पुस्त बितलो के बाद ओह लोग में अबहिन पहिले वाला शिकारी बहेलिया रहे। तब हमार टोला तबाह होखे लागल। अपना बेटी–पतोह के पानी आ आपन नाक बचावे खातिर सभे गँवे–गँवे तमकुही रोड शहर चाहें अउरियो जगह जा के जमीन लेबे लागल लोग। तब अपनही माटी के गंध सहे जोग ना रहि गइल रहे। जे दोसरा जगह बसे में समरथ ना रहे, ओह लोग के पानी आ नाक के रक्षा गंडक माई कइली। गंडक के कटान आ ओकरा बरसाती उन्माद के तबाही से ओहिजा के जमीनो –जायदाद बेंच के लोग के दोसरा जगह बसहीं के पड़ल।

हमार बाबुजी तनी अलगा किसिम के मनई रहलें। उनुका खातिर ई गाँव आ माटी महतारी हई। माटी आ माई के बदलल ना जाला। जवना ध रती पर जनम लिहल गइल ऊ धरती पूर खो–पुरनिया लोग के माई होली। ऊ त धन्यवाद बा ऊपर वाला के कि उनुका घरमें हमरा जइसन कपूत जनमल। हमरा आँखि के सोंझे एगो घटना घटि गइल। हमार भोजपुरी कहानी 'लिट्टी' वाली घटना। ...ओकरा बाद त हम आपन कीरीया धरा के उनुका के तमकुही रोड में जमीन लेबे खातिर तइयार क लिहनी। ... आजु हमार बाबुजी रहतन त समुझतन कि केतना फायदा भइल हमरा ओह कीरीया के। उनुकर चार में से तीन जने पढ़ल–लिखल आ बेरो. जगार बेट लोग आजु अपना पैर पर ठाढ़ हो के अपना ढंग से आपन जिनगी जीअत बा लोग।...

ई मिडिल इस्कूल हवे। ईहवें से हम छठा से आठवाँ ले के पढ़ाई कइले बानी। पहिले ई खपड़ा के रहे, अब पक्का मकान हो गइल बा। ... ई ह राम–जानकी मंदिर! एकरा तल के हमनी के सुरंग कही जाँ। आजु काल्ह बेसमेंट कहल जाला। दिल्ली में लगभग सगरो मकान बेसमेंट वाला होला। हँ, आजु एह राम–जानकी मंदिर के कायाकल्प हो गइल बा। कुछू अउरी देवगण के मूर्ति स्थापित हो गइल बाड़ी। पूरुब का ओर के ई ह हाई–स्कूल! आरे! टूटल–ढहल कमरन से तनी दखिन ओर त दूतल्ला कोठरी बा। सभे बतावल कि अब ई इंटर कॉलेज हो गइल बा। हम भरम में पड़ि गइनी कि पुरुवा बेआर जइसे आ के समझवलस कि विकास देखत बाड़ऽ ? सहयात्री लोग में से केहू कहल– ऊ त स्कूल ह, नीचवा देखत बाड़ऽ?

आरे वाह! हमार गाँव त जइसे बदलि गइल बा। जइसे रिगावत बा हमके कि हमहीं बदलि गइल बानी। नीचवा सड़क चमचमात बिआ। ठकराहाँ बाजार में धान के भूसी से बिजली बनावे के संयंत्र लागल बा। सबका घरे साँझि के छव बजे से आधा रात ले बिजली के सप्लाई कइल जाला। गाँव में

मोबाइल कंपनियन के आठ–दस गो टावरो लाग गइल बा। अब तमकुही रोड से गाँव ले हमेशा गाड़ियो चलेली। ...आगे बढ़नी त मजे आ गइल। ई साफ–सुथरी आ धोअल जइसन सड़क गंडक नदी के विराटता के ललकारत बान्हा ले गइल बा। एहुजा कइगो प्राइवेट स्कूल चलत बा। बान्हा के ऊपर रेल दौड़ी। मुआयना हो गइल बा। माटी भरे के काम चालू बा। पूरुब में, मोती टोला के लगे विद्युत स्टेशन बनि गइल बा। नदी के कछार के बोल्डर के जाल से बान्ह दिहल गइल बा। ...आस–पास के गुलमोहर अपना हरिहर कपड़ा में ललका फूल खोंसले खेलत बा। बाँस के पुलँगी बेआर के व्यवहार से लचक–लचक के नदी पानी के चूमत बा।

हम त पगला गइनी। एह धरती पर हमके कबो ई सब ना मिलल रहे। हम ई सगरो पावे के चाहत रहनी। सबके एके साथे अँकवारी में भरे के चाहत रहनी। नदी किनारे बइठकर, ठाढ़ हो के, कूद के, झूम के ...कइगो फोटो खिंचववनी। आनंद से मस्त हो गइनी, उमंग से आस्वस्त हो गइनी आ एह के सथवे एगो टीस हमरा आशा के कूरेद गइल। हम देखनी कि कइगो लइका आजुओ भँइसन के झूंड चरावे ले जात रहले सों, कइगो झूंड आजुओ गोली खेलत रहले सों आ कइगो नौजवान अपनही गाँव के लइकनीयन के देख के टिभोली मारत रहले सों त किलकत गंडक के जलधार ठहाका लगावे लाग. ल। एक बेर लागल कि एहिजा से पलायन के विचार बनावल सही रहल। लागल कि ई बहेलिया टोला के वासिंदा आउओ बहेलिए बाड़े। पढ़ल–लि खल जे रहे, ऊ पलायित क गइल। आजुओ ई बहे. लिया नाँव सार्थके बा।

दुपहरिया चढ़त–चढ़त हमनी के अपना–अपना घरे आ गइनी जा। हमार मन भारी हो गइल रहे। अपना गाँव के कइगो तीत–मीठ ईयाद मन के भारी क दिहले रहे। तनी सहज हो के हम एगो लइका के फोन कइनी कि अगर कहीं कुछू सस्ता जमीन मिले त बतइह। हमहूँ एगो मड़ई डाल देब। कम से कम ओही बहाने अस्तित्वहीन अपना बहे. लिया टोला जाइल करब। ❑❑

❍ तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर (उत्तर–प्रदेश)

बरसात

सत्यनारायण शुक्ल

अइसन सुघर बरसात भइल
ताल तलईया भर गइल
गाँव हमार संवर गइल
खेती के शुरुआत भइल

चिरईं–चुरुंग चहचाए लगलीसन
पेड़–पतई हरिअराए लगलीसन
खेत–खेताड़ी जोताए लगलीसन
कजरी के घरे–घरे शुरुआत भइल
अइसन सुघर बरसात भइल

लरिकईयाँ गुनगुनाए लागल
दोल्हा–पाती खेलाए लागल
चीक्का–बद्दी फनाए लागल
हरिअर–हरिअर घास–पात पर
मौसम के अइसन मिजाज भइल
अइसन सुघर बरसात भइल

बरसात के बात दिन में लागत रात
घनघोर बदरिया छवले बा
मन में शोर मचवले बा
'सत्य' लेखनियाँ लिख–लिख
खुशी के फूल खिलवले बा
अखियन में खुशी के बरसात भइल
ताल–तलईया भर गइल
अइसन सुघर बरसात भइल।
❑❑

'भोजपुरी साहित्य सरिता' के कुछ पछिलका अंक

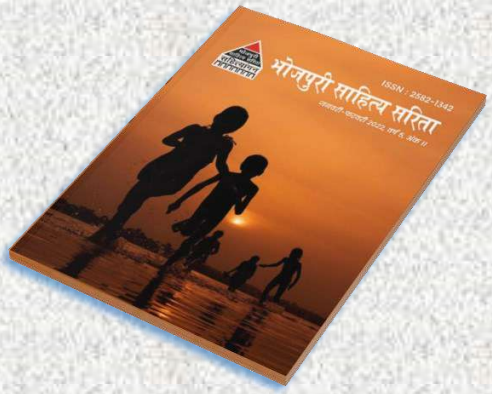

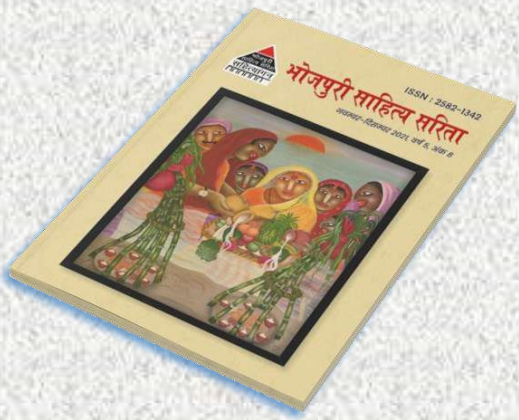

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600 | चार बरिस : 2100 | आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के श्रेष्ठ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600 | चार बरिस : 2100 | आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।